

चलो तिरुक्कुरल सीखें

Thirukkural Payilvom

(Marathi)



Kashi Tamil Sangamam 5.0

"Thirukkural Payilvom – Thirukkural Abhyas Karen"

Translator

Dr. Arun Kumar



केंद्रीय शास्त्रीय तमिळ् संस्थान, चेन्नै

2026

सामग्री

अध्याय 1–काशी एवं तमिलनाडु **03**

अध्याय 2– तिरुवल्लुवर का जीवन इतिहास **05**

अध्याय 3– तिरुक्कुरल की संरचना एवं विशिष्ट विशेषताएँ **06**

अध्याय 4– भाष्यकार एवं संस्करणों का इतिहास **08**

अध्याय 5– वल्लुवम का सार्वभौमिक शास्त्र **08**

5.1. तिरुक्कुरल में प्रेम एवं सदाचार **09**

5.2. तिरुक्कुराल में सत्कार **12**

5.3. तिरुक्कुरल में जीवों के प्रति करुणा **13**

5.4. तिरुक्कुरल में त्याग **15**

5.5. तिरुक्कुरल में व्यक्तिगत अनुशासन **16**

5.6. तिरुक्कुरल में आत्मविश्वास **17**

5.7. तिरुक्कुरल में शिक्षा **18**

5.8. तिरुक्कुरल में नेतृत्व गुण **20**

5.9. तिरुक्कुरल में शारीरिक स्वास्थ्य **21**

5.10. तिरुक्कुरल में चिकित्सा नैतिकता **22**

5.11. तिरुक्कुरल में मानसिक कल्याण **23**

5.12. तिरुक्कुरल में मानवता **24**

5.13. तिरुक्कुरल में सामाजिक समरसता **25**

5.14. तिरुक्कुरल में दोस्ती **26**

5.15. तिरुक्कुरल में शासन **27**

5.16. तिरुक्कुरल में प्रशासनिक कौशल **28**

5.17. तिरुक्कुरल में आर्थिक विचार **29**

5.18. तिरुक्कुरल में कृषि **29**

5.19. तिरुक्कुरल में पर्यावरण **30**

5.20. तिरुक्कुरल में पारिवारिक सदाचार **32**

5.21. तिरुक्कुरल में महिला **33**

5.22. तिरुक्कुरल म प्रबंधन **34**

5.23. विश्व भाषाओं में तिरुक्कुरल **35**

अध्याय 6 – कुरल रत्नों की माला **36**

अध्याय 1 – काशी एवं तमिलनाडु

काशी आ तमिलनाडु मे बहुत लंबा समय स गहींर संबंध अछि। तमिल शास्त्रीय कृति मे काशीक उल्लेख अछि जे वाराणसी अछि। ई कलित्रोकै, सिलप्पाथीकरम, मणिमेकलाई, नीलकेसी, सूलमणि, पेरुंगथाई, विल्लीभारथम, थेवरम, पेरिया पुराणम, नलायरा दिव्य प्रबन्धम, तिरुपुगझ, शिवबोगसाराम, तिरुविलैयादल पुराणम, कांची पुराणम, सिवग्नन बलय स्वामीगल कलाबागम, तिरुवरुप, वीरपंडिया कट्टबोममन के बैलेड, भरथियार के कविता आ कविमणि के मलारुम मलाईयुम। शिलालेख आ तांबा के प्लेट आओर प्रमाण जोड़ैत अछि। काशी क बारे मे ही कई कृति भी रचलऽ गेलऽ छेलै, जेकरा में कासी कलम्बगम, कासी ठुंडी विनयगर पथिगम, कासी कंडम, कासी रागसियाम, कासी यात्रा, कासी महात्मियाम (या सिम्हध्वजन के कहानी), कासी विश्वनाथ सातकम आरू श्री कासी यात्रा दीपम शामिल छेलै। ई सब मिल क ई दर्शाबै छै कि सदियो स ई दूनू जगह कतेक गहराई स जुड़लऽ छै।

भारत सरकार केरऽ शिक्षा मंत्रालय काशी तमिल संगम केरऽ आयोजन बहुत कारणऽ स करै छै: ऐतिहासिक संबंधऽ क पुनः खोज करै लेली; दू टा ज्ञान परंपरा के एक ठाम आनब; हुनका लोकनिक बीच भेटल लिंक कैँ साझा करबाक लेल; एतेक दिन धरि जे सांस्कृतिक आ सभ्यताक निरंतरता अछि ओकरा उजागर करब; "एक भारत – सर्वोच्च भारत" के विचार के तहत सांस्कृतिक परंपरा के ज्ञात कर राष्ट्रीय एकीकरण के बढ़ावा देना; ज्ञानक आदान-प्रदान कैँ प्रोत्साहित करब; तमिल भाषा आ ओकर शास्त्रीय साहित्य के पूरा भारत में परिचय देबय के लेल; युवाक कें भारतीय सांस्कृतिक धरोहर सं जोड़नाय; आरू भारतीय भाषा के बीच भाषाई कड़ी क एक दोसरा के करीब लानै लेली तकनीक क उपयोग करवाक्।

पूर्व केरऽ चारो संगमऽ न काशी आरू तमिलनाडु के बीच के संबंध, ज्ञान आधारित आरू सांस्कृतिक संबंधऽ के मजबूती, भारतीय ज्ञान परंपरा माँ अगस्त्य ऋषि केरऽ योगदान, आरू "तमिल कर्कलम" (हम तमिल सीखं सकै छियै) क खोज करलकै। ओहि यात्रा के आगू बढ़बैत काशी तमिल संगम 5.0 वाराणसी में 28.11.2026 स 12.12.2026 तक होइत अछि, जेकर विषय अछि "आउ तिरुक्कुरल सीखू"।

काशी–तमिलनाडु:ऐतिहासिकधागा

काशी गंगाक कात मे बैसल अछि, आ तमिलनाडु वैगै आ कावेरीक कात मे। दुनू भारत केरऽ सबसं पुरानऽ सीखऽ के केंद्रऽ मं शामिल छै। सदियो सँ एक दोसरा सँ बान्हने किछु एहन धागा प्रस्तुत अछि : "कासी कलम्बगम" रचलनि आ स्वयं काशी मे भगवानक चरण प्राप्त कयलनि।

• महाकवि भरथियार : 1898 सँ 1902 धरि काशीक हनुमान घाट पर रहैत छलाह, जाहि घर मे ओ रहैत छलाह, ओकर नवीनीकरण "भारती इल्लम" क रूप मे भेल आ 11 दिसम्बर 2022 कैँ खुजल। हुनकर पाँति "आउ एकटा एहन यंत्र बनाबी जाहि सँ काशीक कवि लोकनिक भाषण काँची मे सुनल जा सकय", उत्तर आ दक्षिण मे जुड़बाक सपना व्यक्त करैत अछि।

• तेनकासी आ शिवकासी : "दक्षिण काशी" नामहि सँ जुड़ावक बात होइत छैक। ई मंदिर सब 15वीं सदी के पांड्य राजा पराक्रम पांडियन स जुड़ल अछि, आ तेनकासी पांड्य वंश के अथिवीर राम पांड्य "कासी कंडम" के रचना केने छलाह।

• "सब जल गंगा, सब भूमि काशी" : प्रधानमंत्री ने 2023 के संगम के उद्घाटन समारोह में पांड्य परम्परा से यह कहावत उद्धृत केलक।

• काशी–रामेश्वरम तीर्थयात्रा : लोकक मानब बहुत पहिने सँ रहल अछि जे काशीक यात्रा तखने पूर्ण होइत छैक जखन अहाँ रामेश्वरम सेहो जाइत छी। आइयो "कासी यात्रा" तमिल विवाह संस्कारक अंग अछि।

• विद्या का सेतु : 11 सितम्बर 2021 को भारतियार की शतवीं पुण्यतिथि पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी घोषणा केलांक कि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में “तमिल अध्ययन के लिए सुब्रमनिया भारती चेयर” की स्थापना की होथ।

काशी तमिल संगम के यात्रा

काशी तमिल संगम 1.0 – बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश मे 16.11.2022 स 15.12.2022 तक “काशी आ तमिलनाडु के बीच संबंध” विषय पर पहिल संगम के आयोजन कायल गेल।

काशी तमिल संगम 2.0 – नमोघाट,वाराणसी,उत्तरप्रदेश,17.12.2023से30.12.2023 तक “ज्ञान आधारित एवं सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करना” विषय पर आयोजित।

काशी तमी ।संगम 3.0 – 15.02.2025 से 24.02.2025 तक उत्तर प्रदेश क वाराणसी के नमो घाट में “भारतीय ज्ञान परम्परा में ऋषि अगस्त्य का योगदान” विषय पर आयोजित।

काशी तमिल संगम 4.0 – नमोघाट,वाराणसी,उत्तरप्रदेश मे “तमिल कर्कलम” (हम तमिल सीख सकैत छी) विषय पर आयोजित, 02.12.2025 से 15.12.2025. संगम के समापन समारोह 30.12.2025 के तमिलनाडु के रामेश्वरम म आयोजित भेल छल.

काशी तमिल संगम 5.0 – नमो घाट, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 28.11.2026 से 12.12.2026 तक “चलो तिरुक्कुरल सीखें” विषय पर आयोजित किया जा रहा है।

काशी तमिल संगम 5 कए जे चीज खास बनबैत अछि ओ अछि एकर तिरुक्कुरल पर फोकस। भारत भर के एक हजार कॉलेज आरू विश्वविद्यालयऽ म स हर एक छात्र, कुल मिला क एक हजार छात्र, के चयन करलऽ जैतै ताकि वू तिरुक्कुराल क अपनऽ मातृभाषा म सीख सक आरू ओकरा बाद ओकरा वापस अपनऽ कॉलेज म ल जाय सक। तिरुक्कुरल कोनो धर्म, राजा वा देशक नाम नहि दैत अछि, आ ताहि लेल सब कियो एकरा अपन मानैत अछि। केंद्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान ई काम क 35 अनुवाद म प्रकाशित करलकै, आरू ओकरऽ बहुभाषी ऐप एकरा आठवीं अनुसूची केरऽ सब बाइस भाषा म पेश करै छै। त कश्मीर के विद्यार्थी आ कन्याकुमारी के विद्यार्थी एकहि दिन एकहि कुरल, अपन भाषा में, सीख सकैत छथि।

अध्याय 2 – तिरुवल्लुवर का जीवन इतिहास

तिरुवल्लुवर के बारे में एकटा बात हमरा सब के निश्चित रूप स पता अछि जे ओ हमरा सब के छोड़ल गेल 1330 कुरल अछि। हुनकऽ जन्म, परिवार आरू व्यवसाय के बारे म जे कुछ कहलऽ जाय छै, वू अधिकांश बाद के परंपरा द्वारा जोड़लऽ गेलऽ किंवदंती छै । तइयो ई पोथी स्वयं अपन लेखकक जीवंत चित्र उकेरैत अछि ।

नाम एवं मानद नाम

"वल्लुवन" नाम, सम्मानजनक "तिरू" जोड़ला सँ, "तिरुवल्लुवर" बनि गेल। परम्परा हुनका अनेक सम्मानजनक नाम देलक अछि : नयनार, देवर, देइवा पुलवर, मुद्रापावलर, नानमुगनर, मधनुबंगी, सेन्नाप्पोथर, पेरुणावलर, पोयिल पुलवर। ई नाम सब से पता चलै छै कि तमिल समाज हुनका कतेक आदर करै छै विद्वानों क विचारों की समय रेखा।

विद्वान लोकनि तिरुक्कुरलक तिथिक अनुमान अलग-अलग तरीका सँ लगबैत छथि, जे 300 ईसा पूर्व सँ 5 म शताब्दी ई. चेक विद्वान कामिल ज़्वेलेबिल एकरा 450-500 ई. म रखलनि । विश्वकोश ब्रिटैनिका 6वीं शताब्दी के उल्लेख करै छै, आरू नोट करै छै कि कुछ लोग एकरा 1 शताब्दी ई.पू. तमिल परंपरा वल्लुवर के 31 ई.पू. मड़ैमलाई अदिगल द्वारा प्रस्तावित ओहि हिसाब पर तमिलनाडु सरकार 1971 मे सरकारी राजपत्र मे "तिरुवल्लुवर वर्ष" प्रणाली प्रकाशित केलक, आ ई 1972 सँ प्रयोग मे आयल।वल्लुवर वर्ष = आम युग वर्ष + 31; थाई 2026 सँ तिरुवल्लुवर वर्ष 2057 अछि ।

पारम्परिक कथा

बादक विविध छंद आ मौखिक परम्परा हमरा लोकनि कैँ किछु कथा देलक अछि । हुनका सब के कोनो ऐतिहासिक प्रमाण नै छै, लेकिन ई सब ई देखाबै छै कि लोक के दिमाग में वल्लूवर कतेक जीवित छै.

- एकटा व्यापक परंपरा कहैत अछि जे हुनकर जन्म चेन्नई के माइलापुर में भेल छलनि, जतय हुनकर अपन मंदिर छनि।
- परम्परा कहैत अछि जे ओ बुनकर छलाह आ हुनकर पत्नी वासुकी छलीह । एकटा कथा मे कहल गेल अछि जे कोना वासुकी ओहि रस्सी कैँ छोड़ि देलनि जखन ओ इनार सँ पानि निकालि रहल छलीह जखन हुनकर पति हुनका फोन केलनि । घरेलू जीवन मे प्रेमक उदाहरणक रूप मे कहल गेल अछि ।
- दोसर कथा मे कहल गेल अछि जे मदुरै तमिल संगम मे जखन ई काज प्रस्तुत भेल तखन संगमक तख्ता मात्र कुरल लेल जगह बना देलक ।
- कृति के प्रशंसा में पचपन वेंबा श्लोक के संग्रह तिरुवल्लुवमलाई है । एहि मे इडैकदार "सरसों के बीज छेद क ओहि मे सात समुद्र के ढारब" के बात केने छलाह, आ अववैयर छवि के एखनो सूक्ष्म बना देलखिन्ह: "कुरल, जे एकटा परमाणु के छेदैत छल, सात समुद्र के ओहि मे ढारि दैत छल, आ ओकरा संघनित करैत छल", अर्थात्, अर्थ मे विशाल, मुदा रूप मे छोट.

लेखक जैसा कि पुस्तक में देखा गया

वल्लुवर जीवनक हर क्षेत्र जनैत छलाह : सदाचार , राजनीति , अर्थशास्त्र , युद्ध , चिकित्सा आ प्रेम । जन्मसँ नहि कर्मसँ व्यक्तिकैँ नापैत छथि । यैह कारण अछि जे एतेक रास परंपरा चाहे जैन हो, बौद्ध हो, शैव हो वा वैष्णव, वल्लुवर कैँ अपन मनाबय, आ ई साझा दावा स्वयं हुनक सार्वभौमिकताक सर्वोत्तम प्रमाण अछि । शास्त्रीय विद्वान हुनका भारत केरऽ साझा नैतिक परंपरा केरऽ एक आवाज के रूप म देखै छै ।

स्मारक

• **तिरुवल्लुवर दिवस :** थाई मास के 2 दिन, पोंगल पर्व के बीच पड़ैत अछि।

• **वल्लुवर कोट्टम, चेन्नई :** अप्रैल 1976 में राष्ट्रपति श्री. फखरुद्दीन अली अहमद आ वी. गणपति स्थापति द्वारा डिजाइन कएल गेल एहि मे सबटा 1330 कुराल पाथर मे उत्कीर्ण अछि। एकर जीर्णोद्धार क 21 जून 2025 कए फेर स खोलल गेल।

• **वल्लुवर मूर्ति :** कन्याकुमारी में तिरुवल्लुवर के 133 फीट के मूर्ति ठाढ़ अछि, जे 133 अध्याय में स प्रत्येक अध्याय के लेल एक फुट अछि। 38 फीटक कुरसी सदाचार पर खंड (अराम) क 38 अध्याय क लेल, आ 95 फीटक मूर्ति धन (पोरुल) आ प्रेम (इनबम) क 95 अध्याय क लेल खड़ा अछि। 01.01.2000 के खुजल ई मूर्ति 2004 के सुनामी के सामना केलक। रजत जयंती में 30 दिसंबर 2024 के मूर्ति के विवेकानंद चट्टान सं जोड़य वाला 77 मीटर के कांच के पुल खोलल गेल छल; मूर्ति के "ज्ञान के मूर्ति" सेहो कहल जाइत अछि।

अध्याय 3 – तिरुक्कुरल की संरचना एवं विशिष्ट विशेषताएँ।

तिरुक्कुरल में 1330 कुरल छै, जेकरा दस के समूह में 133 अध्याय के रूप में व्यवस्थित करलऽ गेलऽ छै आरू तीन खंड (पाल) में विभाजित करलऽ गेलऽ छै: सदाचार (अराम), धन (पोरुल) आरू प्रेम (इनबम)। हर कुरल कुरल वेंबा होइत

तीन भागीय संरचना

तीन खण्ड (मुपाल): 133 अध्याय, 1330 कुरल (परिमेलाझगर के टीका के अनुसार अध्याय गिनती)		
अथथुप्पाल(सद्गुण)	पोरुतपाल(धन)	कमथथुप्पाल(प्रेम)
38 अध्याय(1-38) 380 कुरल	70 अध्याय(39-108) 700 कुराल	25अध्याय(109-133) 250 कुराल
भूमिका: 4 अध्याय; घरेलू जीवन : 20 अध्याय; तपस्वी जीवन : 13 अध्याय; भाग्य : 1 अध्याय	शासन:25अध्याय; राज्य के खंड : 32 अध्याय; विविध : 13 अध्याय	गुप्त प्रेम:7 अध्याय; विवाहित प्रेम : 18 अध्याय

सदाचार(अराम)– 38 अध्याय

सदाचार केरऽ खंड म व्यक्ति केरऽ आतंरिक जीवन आरू पारिवारिक जीवन के बारे मं जानकारी देलऽ गेलऽ छै ।

- **भूमिका (1-4):** भगवान् के स्तुति में; बरखाक महानता; तपस्वी लोकनिक महानता; गुण के प्रतिपादन। भगवान केरऽ स्तुति के ठीक बाद बरसात क ओकरऽ अपनऽ अध्याय देला सं वल्लुवर केरऽ ई विचार पता चलै छै कि प्रकृति ही जीवन केरऽ आधार छै ।
- **घरेलू जीवन (5–24):** ई गृहस्थ जीवन, पत्नीक औकात आ संतानक वरदान सँ ल' क' प्रेम, सत्कार, सुखद शब्द, कृतज्ञता, निष्पक्षता, सहनशीलता, समाजक प्रति अपन कर्तव्य जानब, दान आ प्रसिद्धि धरि चलैत अछि । वल्लुवर घरेलू जीवन के तपस्वी जीवन के बराबर मानैत छथि, आ किछु ठाम एकरा उच्च मानैत छथि।
  अहिंसा (अहिंसा) पर जे कुराल दुनिया भरिक विद्वान लोकनिक एतेक ध्यान आकर्षित केलक अछि से एहि भाग मे अछि।
- **भाग्य (38):** भूतकाल के कर्म के फल पर एक एक अध्याय, जो मानवीय प्रयास से परे है ।

धन (पोरुल) – 70अध्याय

धन-दौलत आधा पोथीसँ बेसी अछि। एहि मे राजनीति, प्रशासन, अर्थशास्त्र, मित्रता आ समाज शामिल अछि ।

- **शासन (39-63):** शासकक गरिमा, सीखब, सुनब आ बुद्धि सँ ल' क' बस शासन, जासूसी, लगातार प्रयास आ प्रतिकूलता मे हिम्मत नहि हेबा धरि। शासक के व्यक्तिगत गुण आ न्यायपूर्ण शासन एहि ठाम केंद्रीय अछि.
- **राज्य के भाग (64-95):** मंत्री, वाणी शक्ति, कार्य में दृढ़ता, दूत, देश, किले, धन अर्जित करने के तरीके, सेना, दोस्ती, दुश्मनी एवं चिकित्सा । एक-एक कए राज्यक अंगक परीक्षण करैत अछि ।
- **विविध (96-108):** उदात्त जन्म, सम्मान, चरित्रक गरिमा, शिष्टाचार, कृषि, गरीबी, भीख मांगब आ नीचता। नागरिकक गुणक चर्चा एतय कयल गेल अछि ।

इच्छा (कमम) – 25अध्याय

प्रेमक खंड संगम उर्फ परंपरा मे प्रेमक नाटक अछि । कुरल नायक, नायिका आ नायिकाक मित्रक शब्दक रूप मे राखल गेल अछि । टोलकप्पियाम नियमक पालन करैत जे ककरो नाम सँ नहि चिन्हल जा सकैत अछि, कोनो व्यक्तिक नाम नहि देखाइत अछि, आ ताहि लेल ई प्रेम सबहक होइत छैक ।

- **गुप्त प्रेम (109-115):** नायिका केरऽ सुंदरता सं लं कं प्रेमी पं भारी पड़ै सं लं कं गपशप के प्रसार तक । ई विवाह सँ पहिने प्रेम थिक।
- **विवाहित प्रेम (116-133):** विरह सहन मे असमर्थता सँ प्रेमी-प्रेमिकाक झगड़ाक आनन्द धरि । एहि मे विवाहित जोड़ी के विरह, लालसा, झगड़ा आ पुनर्मिलन के बात अछि.

वल्लुवर के दृष्टि में बिना गुण के धन, बिना धन के घरेलू जीवन, आ प्रेम के बिना सुख सब अपूर्ण अछि । वल्लुवम मे मानव जीवनक चारि उद्देश्यक रूप मे गुण, धन, भोग आ मुक्तिक नाम देल गेल अछि । वल्लुवर पहिल तीन के लंबा समय तक गबैत छलाह आ तपस्वी जीवन के खंड में आ सत्य के साक्षात्कार के अध्याय में मुक्ति के शामिल केलनि । ई साझा ढाँचा ही भारत केरऽ कोय भी हिस्सा के पाठकऽ लेली तिरुक्कुरल कं परिचित महसूस करावै छै ।

कुरल क मीटर

वेनबा

- **पाँति :** दू टा पहिल पाँति मे चारि फीट आ अंतिम पाँति मे तीन, कुल मिला कए सात फीट।
- **लिंकेज :** वेनबा लिंक अंतिम पैर के अंत नाल, मलार, कासु या पिरप्पू नामक कोनो एकटा पैटर्न में होइत अछि।

• **पैर मे विभाजन** – कुरल 1: अगरा । मुढाला । एझुठथेल्लम । आधि
भगवानमु । धात्रे ।

ई संक्षिप्तता कुरल'क ताकत थिक. अवैयर कहलकै कि ई "परमाणु छेदी क ओकरा म सात समुद्र डालै" जैसनऽ छै । फॉर्म याद राखब आ अनुवाद करब आसान अछि, आ आइ सोशल मीडिया पर शेयर करब सेहो ओतबे आसान अछि।

तिरुक्कुरल के विशेष नाम

मुपाल, उत्तरवेद, देइवा नूल, पोय्यामोझी, वायुरै वाइत्थु आ पोधुमरै सब तिरुक्कुरल के विशेष नाम छै । "पोधुमरै" (सार्वभौमिक शास्त्र) स्वयं रचनाक सामग्री सँ आयल अछि । जेना कि फ्रांसीसी अनुवादक ई. एस.एरियल कहने छथि, वल्लुवर "समग्र मानव जाति स' गप्प करैत छथि, चाहे ओ कोनो जाति, लोक वा पंथ के हो"।

अध्याय 4 –भाष्यकार एवं संस्करणों का इतिहास

दसम आ तेरहम शताब्दीक बीच दस टीकाकार तिरुक्कुरल पर टीका लिखलनि : धरुमार, मनक्कुदवर, थमथर, नच्चर, परिधियार, परिमेलाझगर, तिरुमलैयार, मल्लर, परिप्पेरुमाल आ कलिंगार। मनक्कुदवर, परिधियार, कलिंगर, परिप्पेरुमाल आ परिमेलाझगरक टीका पूर्ण रूपेण जीवित अछि, आ धरुमार, थमथर आ नच्चरक टीका आंशिक रूपेँ। तिरुमलयार आ मल्लरक टीका आब उपलब्ध नहि अछि । इएह टीका परंपरा थिक जे एतेक शताब्दी धरि तिरुक्कुरलक रक्षा केलक आ आजुक पीढ़ी धरि पहुँचा देलक ।

आधुनिक टीका

19वीं एवं 20वीं शताब्दी में कविराजपंडितर, उ.वि.स्वामीनाथ अय्यर, के.वाडिवेलु चेट्टियार, अयोथिदासर, वी.ओ.चिदम्बरानर, तिरु. वि. का., नमक्कल कविग्नार, भारतीदासन आदि तिरुक्कुराल पर टीका लिखने छलाह । सरल व्याख्यात्मक टीका के परंपरा 1949 में एम. वरधाराजनर के "तिरुक्कुरल थेलिवुराई" स शुरू भेल छल, आ आइयो नव टीका लिखल जा रहल अछि ।

ताड़ के पत्ता से प्रिंट तक

सदियो तक तिरुक्कुरल के नकल क ताड़ के पत्ता के पांडुलिपि पर सुरक्षित राखल गेल छल । 1812 मे तंजावूर के ज्ञानप्रकाशर नलादियार आ तिरुवल्लुवमलाई के संग मिलिकय पहिल मुद्रित संस्करण प्रकाशित केलनि । तकर बाद सैकड़ों संस्करण आयल अछि।

डिजिटल युग

आइ पूरा तिरुक्कुरल इंटरनेट आ स्मार्टफोन पर, बहुभाषी ऐप आ ऑडियो बुक जेहन नव रूप मे उपलब्ध अछि ।

अध्याय 5 – वल्लुवम का सार्वभौमिक शास्त्र

ई अध्याय मं तिरुक्कुरल केरऽ 108 अध्यायऽ के केंद्रीय विषयऽ के परिचय तेइस शीर्षक के तहत करलऽ गेलऽ छै ।

5.1. तिरुक्कुरल में प्रेम एवं सदाचार

तिरुक्कुरल के सार्वभौमिक शास्त्र के रूप में सम्मानित करलऽ जाय छै। ई जीबै के बारे में एगो किताब छै, आरू ई में मानव जीवन के मूल मूल्य के बहुत एकाग्रता आरू गहराई के साथ प्रस्तुत करलऽ गेलऽ छै। तिरुवल्लुवर मनुष्य के कोना जीबय के चाही से त' बतबैत छथि जे कोन मन के फ्रेम में रहबाक चाही, आ प्रेम आ सदाचार ओकर सोच के केंद्र में बैसैत अछि. तिरुक्कुरल में प्रेम गुण के अभिन्न अंग के रूप में दिखाई दै छै, आरू सदाचार के रूप में प्रेम के व्यवहार में डाललऽ जाय छै।

प्रेम : मानव जीवन की नींव

तिरुवल्लुवर प्रेम के मात्र भाव के रूप में नै मानैत छैथ। हुनका लेल ई मूल गुण थिक जे व्यक्ति कैं स्वार्थ सँ आम हित दिस उठबैत अछि।

அன்பிலார் எல்லாம் தமக்குரியர் அன்புடையார்
என்பும் உரியர் பிறர்க்கு. (குறள்72)

अन्बिलार् ऎल्लाम् तमक्कुरियर् अन्बुडैयार्
ऎन्बुम् उरियर् पिऱर्क्कु।(कुरल 72)

प्रेमहीन पुरुषक सब किछु, अपन होइत छैक जान।
प्रेमीजन परहितार्थ, हाड़ ओ दैत छैक दान।।

जे प्रेम करै छै, से खाली अपना लेली नै जीबै छै; रहल बात जे प्रेम करै छै, ओकरा दोसरऽ के मदद करै के लेलऽ अपनऽ हड्डी ही देतै।

प्रेम रहित व्यक्ति केवल आत्म के केंद्र में राखि रहैत अछि। प्रेम वाला व्यक्ति एतेक परिपक्व भ जाइत अछि जे दोसर के लेल अपना के द सकैत अछि। प्रेम "हम" के संकीर्ण भाव के "हम" के विस्तृत भाव में बदलि दैत अछि, आ परिवार में स्नेह, समाज में करुणा आ दुनिया भरिक मानवता में चौड़ा भ जाइत अछि।

அன்பின் வழியது உயிர்நிலை அஃதிலார்க்கு
என்புதோல் போர்த்த உடம்பு. (குறள்80)

अन्बिन् वऴियदु उयिर्निलै अह्दिलार्क्कु
ऎन्बुतोल् पोर्त्त उडम्बु।

प्राणयुक्त शरीर वैह, जे चलय प्रेमक मार्ग।
प्रेमहीन शरीर तँ छेक, हड्डी पर चढ़ल चर्म।। (कुरल 80)

जीवनक आसन प्रेम मे अछि; जेकरा नै छै, वू खाली चमड़ा में आच्छादित हड्डी के द्रव्यमान छै।

जीबै के मतलब शरीर के जीवित रखना स बेसी छै। जीवन तखने अर्थ प्राप्त करैत अछि जखन कोनो एहन मन हो जे दोसर प्राणीक आनन्द आ दुखक अनुभूति करैत अछि। तखन तिरुवल्लुवरक दृष्टि मे प्रेम मात्र एकटा मानवीय गुण नहिं थिक; ई मनुष्यक जीवनक प्राण थिक।

प्रेम अ सदाचार

नीचा देल गेल कुरल सँ पता चलैत अछि जे प्रेम आ सदाचार कतेक अविभाज्य अछि :

அன்பும் அறனும் உடைத்தாயின் இல்வாழ்க்கை
பண்பும் பயனும் அது. (குறள்45)

अन्बुम् अऱनुम् उडैत्तायिन् इल्वाऴ्क्कै
पण्बुम् पयनुम् अदु।(कुरल 45)

प्रेम आ धर्मक रास्ता पर, जे जीवन आश्रित।
ओकर जिनगी धन्य छैक, जे सुफलसँ भरि-पूर्ण।।

जँ घर मे प्रेमक भरमार अछि आ धर्म हावी होइत अछि तऽ घर सिद्ध अछि आ ओकर अंत सभटा पूरा भ' जाइत अछि ।

घरक महानता धन वा शक्ति मे नहि अपितु प्रेम आ सद्गुण सँ भरल जीवन मे निहित अछि । प्रेम हृदय के गुण छै, आ गुण छै कि ई कोना कर्म में दिखाई दै छै।

प्रेम वाला व्यक्ति दोसर के नुकसान नै पहुँचै के इच्छा नै रखै छै । जखन अहाँ दोसर'क दुख कैँ अपन दुख बुझैत छी त' देब, सत्कार, नुकसान नहि पहुँचब, नहि मारब आ करुणा सन गुण स्वाभाविक रूप सँ उत्पन्न होइत छैक।

तिरुक्कुरल जे गुणक गप्प करैत छथि, से तें मजबूरी में अभ्यास कयल गेल आचरण नहिँ थिक; ई जीवनक एकटा एहन तरीका अछि जे प्रेम सँ स्वाभाविक रूप सँ बढ़ैत अछि । वल्लुवर एखनो गहींर धरि जाइत अछि:

அறத்திற்கே அன்புசார்பு என்ப அறியார்
மறத்திற்கும் அஃதே துணை. (குறள்76)

अऱत्तिऱ्के अन्बुसार्बु ऎन्ब अऱियार्
मऱत्तिऱ्कुम् अह्दे तुणै।(कुरल 76)

अज्ञानी कहैत छैक धर्मक, प्रेम दैत छैक संग ।
ज्ञानी कहैत छैक, वीरता सेहो दैत छैक संग ।।

तिरुवल्लु में वर सदाचार के अर्थ में कर्म पर कर्मधारी; ई आन्तर पर टिकल। कौन कविक मन मे बदलत । लेन:

மனத்துக்கண் மாசிலன் ஆதல் அனைத்தறன்
ஆகுல நீர பிற. (குறள்34)

मऩत्तुक्कण् मासिलऩ् आदल् अऩैत्तऱऩ्
आहुल नीर पिऱ।(कुरल 34)

मनक मैल रहित होयब, वैह अछि मानी धर्म ।
दोसर सब कार्य, आडंबरक कर्म ।।

शुद्ध हृदय मे रहनि, सभता एक आज्ञा मे समाहित। विद्विहीनता के अर्थ

वंवर सलाद जे दगदौरक संगत । विद्यार्थी विदित ऋजुकता आरात आऊर सिकुनिल विहारी, ईर्ष्या, लोभ वाकाश विद्युत । ओदाचारी अविचलता मे सख्त सख्त जेठ्ठे कुतक लेल ।

तिरुल्युलवर के अर्थ माहात्मय के अर्थ

அறத்தினூஉங்கு ஆக்கமும் இல்லை அதனை
மறத்தலின் ஊங்கில்லை கேடு. (குறள்32)

अऱत्तिनूउङ्गु आक्कमुम् इल्लै अदऩै
मऱत्तलिन् ऊङ्गिल्लै केडु।(कुरल 32)

धर्मसँ बढ़ि दोसर, श्रेष्ठ कोनो किछु नहि ।
ओकरा बिसरि जयबासँ बढ़िकऽ, कोनो छोटपन नहि ।।

धर्मात्मा संध्यापन भाला, आपा विसरिला सँ नखेल।

धनि अनित्यता, आवकाशकताल आवात आतथ्य । यैह के साथ जे वल्लूवर क्वालिटी के साथ-साथ विपन्नता के पात्रता ।

प्रेम से करुणा तक

तिरुक्कुरलक प्रेम परिवार आ रिश्तेदार पर नहि रुकैत अछि । जखन ई अन्य मनुष्य सँ आगू बढ़ि सब जीव कैँ आत्मसात करैत अछि तखन ई करुणा (अरुल) नामक उच्च अवस्था मे पहुँचि जाइत अछि ।

அருட்செல்வம்செல்வத்து ள்செல்வம்பொருட்செல்வம்
பூரியார்கண்ணும்உள. (குறள்241)

अरुट्चेल्वम् सॆल्वत्तुळ् सॆल्वम् पॊरुट्चॆल्वम्
पूरियार् कण्णुम् उळ।(कुरल 241)

सब धनमे श्रेष्ठ छैक, दयारूप धन जानि ।
भौतिक धन तँ अधमकेँ, पासमे भरलो जानि ।।

सबसँ पैघ धन ओ हृदय थिक जे दया सँ बहैत अछि; कारण भौतिक धन नीच मनुष्यक हाथ मे सेहो भेटैत छैक । करुणाक धन, जे अन्य प्राणीक दुःखक अनुभूति करैत अछि, भौतिक धन सँ ऊपरक स्थान रखैत अछि । एहि तरहें तिरुक्कुरलक प्रेम डेग-डेग पर चौड़ा होइत अछि : व्यक्तिगत प्रेम, फेर परिवार मे प्रेम, फेर समाज मे प्रेम, फेर समस्त जीवनक लेल प्रेम। यही लेली वल्लुवर पूछै छै-

தன்னுயிர்க்கு இன்னாமை தானறிவான் என்கொலோ
மன்னுயிர்க்கு இன்னா செயல். (குறள்318)

तऩ्ऩुयिर्क्कु इऩ्ऩामै ताऩऱिवान् ऍऩ्कॊलो
मऩ्ऩुयिर्क्कु इऩ्ऩा सॆयल्।(कुराल 318)

जकरा केओ जाने ई, अपने लेल अनिष्ट ।
दोसर लोकक लेल फेरो, कियैक करी वैह अनिष्ट ।।

जे बुझि गेल अछि जे अपना लेल की पीड़ा होइत छैक, ओ अपना कैँ कोना अनैत अछि जे ओकरा दोसर पर पहुँचाबी?

ओहि एकटा प्रश्न मे, "जे जे जनैत अछि जे अपना लेल पीड़ा की होइत छैक, ओ दोसर प्राणीक संग सेहो एहने कोना क' सकैत अछि?", गुणक गहींर नींव प्रकट होइत अछि । जे हृदय अपना कैँ दोसर'क स्थान पर राखि सकैत अछि, ओ थिक सद्गुण'क असली शुरुआत.

आजुक दुनिया के लेल एकटा संदेश

मानव समाज विज्ञान, तकनीक आ अर्थव्यवस्था मे बहुत प्रगति केलक अछि, तइयो घृणा, हिंसा, स्वार्थ आ भेदभाव बनल अछि । एहि स्थिति मे तिरुक्कुरलक प्रेम आ गुण प्राचीन विचारक रूप मे नहि अपितु मानवीय सिद्धांतक रूप मे चमकैत अछि जकर आजुक दुनिया कैँ एखनो जरूरत अछि ।

ज्ञान व्यक्ति के शक्ति दै छै, आ गुण ओहि शक्ति के नीक के तरफ मार्गदर्शन करै छै। टेक्नोलॉजी लोक के जोड़ैत अछि, आ प्रेम हुनकर दिल के जोड़ैत अछि. कानून गलत काज के रोकैत अछि, आ सदाचार एहन मन के निर्माण करैत अछि जे कोनो अन्याय नहि करैत अछि।

तिरुक्कुरल मे प्रेम आ सदाचार दू अलग-अलग सिद्धांत नहि अछि । प्रेम गुणक जड़ि अछि, आ सदाचार प्रेमक फल। प्रेम व्यक्ति के स्वार्थ स मुक्त करैत अछि, आ सदाचार ओकरा आम भलाई दिस ल जाइत अछि। प्रेम जखन करुणा मे चौड़ा भ' जाइत अछि तखन व्यक्ति सभ प्राणी कैँ अपना सँ जुड़ल बुझैत अछि ।

तिरुवल्लुवर जे गुणक जीवन देखबैत छथि से तैँ भय सँ अभ्यास कयल आचरण नहि थिक; ई जीवन जीबाक एकटा उच्च तरीका अछि जे प्रेम सँ स्वाभाविक रूप सँ खिलैत अछि । प्रेम व्यक्ति के मनुष्य बनाबै छै, आ गुण ओहि व्यक्ति के उच्च मनुष्य बनाबै छै। ई दुनू जतय मिलैत अछि ओतय व्यक्तिगत शांति, पारिवारिक कल्याण, सामाजिक एकता आ विश्व मानवता खिलैत अछि ।

5.2. तिरुक्कुराल में सत्कार

सत्कार तमिल संस्कृति केरऽ बेहतरीन निशानऽ म स एक छै। अपन दरबज्जा पर कोनो अनजान व्यक्ति के सेहो हँसमुख चेहरा स स्वागत करब, ओकरा खुआबय आ ओकर प्रेम स देखभाल करब तमिल जीवन पद्धति अछि। तिरुवल्लुवर एकरा असगर सामाजिक आदति नहिं मानैत छथि; ओकरा घरेलू जीवनक मूल गुण धरि उठबैत छथि । तिरुक्कुरल केरऽ पूरा अध्याय मेहमानऽ के देखभाल के महानता के बारे मं बताय कं आतिथ्य के काम मं लगाय देलं छै ।

गृहस्थ जीवन का उद्देश्य : आतिथ्य

இருந்தோம்பி இல்வாழ்வது எல்லாம் விருந்தோம்பி
வேளாண்மை செய்தற் பொருட்டு. (குறள்81)

इरुन्दोम्बि इल्वाऴ्वदु ऍल्लाम् विरुन्दोम्बि
वेळाण्मै सॆय्दऱ् पॊरुट्टु।(कुराल 318)

धनक रक्षा करैत जे गृही, निबाहे घरक भार ।
होएत छैक ओकर धर्म, करय अतिथिक उपकार ।।

बुद्धिमान लोकनि की मेहनति करैत छथि आ घर ठाढ़ करैत छथि? पाहुन के पेट भरब आ तीर्थयात्री के मदद करब अछि।
वल्लुवर के कहना छै कि व्यक्ति धन कमै छै, ओकरऽ देखभाल करै छै आरू परिवार के रखै छै, खाली ई लेली नै कि वू आरू ओकरऽ परिवार जीबै, बल्कि ई लेली कि वू दोसरऽ के भी उपयोगी होय सकं । एतय सत्कार भोजन देबा सं आगू बढ़ि जाइत अछि; जे किछु अछि ओकरा बाँटि कए जीबाक सामाजिक गुण बनि जाइत अछि ।
वल्लुवर इहो कहैत छथि जे जखन कोनो पाहुन बाहर प्रतीक्षा करैत छथि तखन असगरे भोजन करब ठीक नहि, भले भोजन अमरत्वक अमृत हो :

விருந்து புறத்ததாத் தானுண்டல் சாவா
மருந்தெனினும் வேண்டற்பாற்று அன்று. (குறள்82)

विरुन्दु पुऱत्ततात् तानुण्डल् सावा
मरुन्देऩिनुम् वेण्डऱ्पाऱ्ऱु अऩ्ऱु।(कुरल 82)

अतिथि बैसल अछि बाहर, अपने बैसल छथि अन्दर ।
अमृते कियैक नहि हुए ओ, भोग असगर केनाइ पाप ।।

जँ अमरत्वक मसौदा सेहो रहैत तँ पाहुन जखन दलान मे रहत तखन असगरे स्वाद नहि लेल जायत ।
विस्तार करत।
गहींर बात ई जे जे भेटल अछि ओकरा मात्र अपना लेल राखब धनक असली उपयोग नहि थिक ।

हंसमुख चेहरा भोजन स श्रेष्ठ अछि

सत्कार मे भोजन मात्र महत्व नहिं; जाहि भावना मे ई देल गेल अछि, आ हँसमुख भावना, मुस्कुराइत चेहरा, सेहो महत्वपूर्ण अछि।

மோப்பக் குழையும் அனிச்சம் முகம்திரிந்து
நோக்கக் குழையும் விருந்து. (குறள்90)

मोप्पक् कुऴैयुम् अऩिच्चम् मुहम्तिरिन्दु
नोक्कक् कुऴैयुम् विरुंदु।(कुरल 90)

सूंघल अनिच्च कुसुम, से तुरंते कुम्हला जाय।

मुँह घूरा कऽ देखलासँ, पाहुनक मुँह सुखा जाय ।।

अनित्वा फूल तखन फीका भ' जाइत छैक जखन अहाँ ओकरा नाक लग पकड़ि क' गंध करैत छी, मुदा एकटा नजरि मात्र पैघ लोकक हृदय कैँ तोड़य लेल काफी अछि।

वल्लुवर के कहना छै कि जेना अनिचम के फूल गंध के क्षण मुरझा जाय छै, तहिना पाहुन के दिल मुरझा जाय छै अगर ओकरा बदललऽ चेहरा के साथ स्वागत करलऽ जाय छै । ओ सिखाबैत छथि, सूक्ष्म रूपेँ, जे सच्चा सत्कार पाहुन कैँ "अहाँ हमरा सभक प्रिय छी" सँ बेसी देल गेल मात्रा मे कम निहित अछि।

सामाजिक सम्बन्ध की नींव

सत्कार लोकक बीचक दूरी कम करैत अछि। ई एकटा नव आगंतुक के रिश्तेदार में बदलि दैत अछि आ कोनो व्यक्ति के समाज में जोड़ैत अछि । अतः एकरा व्यक्तिगत गुण के रूप में ही नै बल्कि सामाजिक एकता के निर्माण करै वाला गुण के रूप में देखलऽ जाब सकै छै । नीचाँ देल गेल कुरल मे कहल गेल अछि जे सत्कार कैँ गृहस्थ जीवनक सर्वोत्तम कर्तव्यक रूप मे सम्मानित कयल जाइत छल :

இருந்தோம்பி இல்வாழ்வது எல்லாம் விருந்தோம்பி
வேளாண்மை செய்தற் பொருட்டு. (குறள்81)

इरुन्दोम्बि इल्वाऴ्वदु ऍल्लाम् विरुन्दोम्बि
वेळाण्मै सॆय्दर् पॊरुट्टु।(कुराल 318)

धनक रक्षा करैत जे गृही, निबाहे घरक भार ।
होएत छैक ओकर धर्म, करय अतिथिक उपकार ।।

हमरा लोकनि कैँ एतेक पैघ कोनो आशीर्वाद नहि बुझल अछि जतेक कि एहन संतानक जन्म जे ज्ञान रखैत हो, निश्चित रूप सँ जीतल।

ई विचार आजुक शहरी, व्यक्ति केंद्रित जीवन मे सेहो प्रासंगिक अछि । आधुनिक सत्कार खाली भोजन देबा मे नहि अपितु दोसर के सम्मान, नव आगंतुक के स्वागत आ मदद के जरूरत वाला के संग ठाढ़ रहय मे निहित अछि.

तिरुक्कुरल में सत्कार भोजन देबाक क्रिया नहिँ थिक; हृदयक बाँटबाक गुण थिक। धन के भेद ओकरा कब्जा में नै बल्कि ओकरा बाँटै में छै। घरक महानता ओकर सुख-सुविधा मे नहि अपितु ओतय अबैत लोकक अनुभूति प्रेम मे निहित अछि । आतिथ्य के माध्यम सं तिरुवल्लुवर ई मानवीय विचार स्थापित करै छै कि "उच्चतम घरेलू जीवन खाली अपनऽ लेली ही नै बल्कि दोसरऽ के लेलऽ भी जीना छै" ।

5.3. तिरुक्कुरल में जीवों के प्रति करुणा

तिरुक्कुरल एकटा व्यापक नैतिक दृष्टिकोण रखैत छथि : असगर मनुक्खक नहि , सभ जीवक सम्मानक संग रहबाक चाही । करुणा, मांस स मना करब, हत्या नहि करब आ नुकसान नहि करब सन अध्याय क माध्यम स वल्लुवर जीव क जीबाक अधिकार पर जोर दैत छथि ।

दोसर जीवन कें अपन बुझब

தன்னூன் பெருக்கற்குத் தான்பிறிது ஊன்உண்பான்
எங்ஙனம் ஆளும் அருள். (குறள்251)

तन्नून् पॆरुक्कऱ्कुत् ताऩ्पिऱिदु ऊऩ्उण्बान्
ऍङ्ङऩम् आळुम् अरुळ्।(कुरल 251)

अपन माउस बढ़ेबाक लेल, जे खाय दोसरक माउस ।
केना हेतेक ओकरा लग, दया भावक आस ।।

जे अपन मांस मोटाबय लेल दोसर मांस खाइत अछि, ओकरा कोना दया होयत?

वल्लुवर पूछै छै कि जे कियो दोसर जीव के मारी क ओकरऽ मांस खाय क अपनऽ शरीर के निर्माण करै छै, ओकरा दयालु कोना कहलऽ जाब सकै छै। आहार के सवाल स परे ओ एकटा बुनियादी नैतिक सवाल उठबैत छथि जे की हम सब दोसर प्राणी के जीवन के ओहिना सम्मान करैत छी जेना अपन जीवन के सम्मान करैत छी?

அருளல்லது யாதெனின் கொல்லாமை கோறல்
பொருளல்லது அவ்வூன் தினல். (குறள்254)

अरुळल्लदु यादॆऩिऩ् कॊल्लामै कोऱल्
पॊरुळल्लदु अव्वून् तिऩल्।(कुराल 254)

जीवहत्या निर्ममता, करुणा अहिंसाक धर्म।
मांसाहारी भेनाय तँ, निर्दयी कुकर्म॥

जानवरक हत्या हृदयक सच्चा कठोरता थिक; मुदा हुनका लोकनिक मांसक सेवन सत्ते असमानता थिक।
वल्लुवर नॉट-किलिंग के करुणा के बहुत आधार बनाबै छै।

सब जीवन के प्रति करुणा के पराकाष्ठा

नीचाँ देल गेल कुरल सँ पता चलैत अछि जे जे दोसर प्राणी कैं नुकसान नहि पहुँचौने रहैत अछि ओ मनुष्य मे सबसँ ऊपर ठाढ़ अछि :

கொல்லான் புலாலை மறுத்தானைக் கைகூப்பி
எல்லா உயிரும் தொழும். (குறள் 260)

कॊल्लाऩ् पुलालै मऱुत्ताऩैक् कैकूप्पि
ऍल्ला उयिरुम् तॊऴुम्।(कुराल 260)

जे नहि करय जीवक हत्या, आ नहि कराय माउसक भक्षण।
हाथ जोड़ि पूरा दुनिया, करय ओकरा नमन॥

देखू ओ आदमी जे मांसक भोजन नहि मारैत अछि आ ओकरा सँ परहेज करैत अछि।
केवल जीव के लेल शोक पर्याप्त नै छै, जेना कि ई कुरल देखाबै छै:

உண்ணாமை வேண்டும் புலாஅல் பிறிதொன்றன்
புண்அது உணர்வார்ப் பெறின். (குறள் 257)

उण्णामै वेण्डुम् पुलाअल पिऱिदोऩ्ऱऩ्
पुण्अदु उणर्वार्प् पॆऱिऩ्।(कुराल 257)

माउस जीवक घाव छैक, कऊँ खूब विचार।
माउस खेनिहार जरूर, छोड़ू मांसाहार॥

जँ मनुष्य मात्र अपना आप मे आन जीवक पीड़ा आ पीड़ाक बोध क' सकैत अछि त' मांसक मांस खायबाक इच्छा नहि होयत।

ई कुरल ई बतबैत अछि जे अपन मोन मे ओहि प्राणीक दुखक अनुभूति स्वयं जीवनक प्रति करुणा थिक। अध्याय के गहरा संदेश ई छै कि हमरा सब के जीवन के ऐन्हऽ तरीका चुनना चाहियऽ जेकरा सं कष्ट नै होय।
आइ एहि विचार कैं पशु संरक्षण, जैव विविधता आ पर्यावरण संरक्षण सन विचार सँ जोड़ल जा सकैत अछि।
वल्लुवर केरऽ जीव के प्रति करुणा के कारण ई समझ आबी जाय छै कि मनुष्य प्रकृति के शासक नै बल्कि ओकरऽ जीवन श्रृंखला के हिस्सा छै।

तिरुक्कुरल में जीव के प्रति करुणा मनुष्य के प्रति देखाओल गेल प्रेम के विस्तार दैत अछि। कुरल हमरा सब के सब जीव के ओहिना पोसब सिखाबैत अछि जेना हम सब अपन जीवन के पोसैत छी। व्यक्ति'क महानता ताकत

मे नहि अपितु अपना सँ कमजोर प्राणी पर कयल गेल करुणा मे होइत छैक। एहि तरहें तिरुक्कुरल एकटा व्यापक नैतिकता के आगू रखैत छथि जाहि मे सब प्राणी शामिल अछि।

5.4. तिरुक्कुरल में त्याग

सदाचार खण्ड मे तपस्वी जीवनक नैतिकता घरेलू जीवनक नैतिकताक अनुसरण करैत अछि। बहुतो अध्याय में पता चलै छै कि त्याग के मतलब भौतिक रूप सें दुनिया सें हटै सें बेसी छै; एकरऽ मतलब छै मन केरऽ बंधन, जेना कि इच्छा, आसक्ति, क्रोध आरू अभिमान पर विजय प्राप्त करना। टीका परंपरा सदाचार खण्ड के अध्याय के घरेलू जीवन विभाग आ तपस्वी जीवन विभाग में विभाजित करैत अछि।

लगाव छोड़ते हुए

अत्यधिक लगाव मनुष्य के बहुत दुख के कारण बनैत अछि। धन, यश आ शक्ति जीबाक साधन हेबाक चाही; ओकरा सभकेँ एहन शक्ति नहि बनबाक चाही जे कोनो व्यक्ति पर शासन करय। जीवन में एकरऽ पालन करै लेली भगवान केरऽ कृपा अनिवार्य छै, आरो कृपा प्राप्त करै लेली दोसरऽ आसक्ति के त्याग करी कं भगवान केरऽ चरणऽ में मजबूती सें पकड़ना जरूरी छै।

பற்றுக பற்றற்றான் பற்றினை அப்பற்றைப்
பற்றுக பற்று விடற்கு. (குறள் 350)

पऱ्ऱुह पऱ्ऱऱ्ऱान् पऱ्ऱीनै अप्पऱ्ऱैप्
पऱ्ऱुह पऱ्ऱु विडऱ्कु।(कुराल 350)

अनासक्तक आसक्ति, मे यदि हुए आसक्ति।
से दृढ़ आसक्ति दीयै, आसक्तिसँ मुक्ति।।

जे सब आसक्ति पर विजय प्राप्त केने छथि, हुनका सँ लगाउ आ बान्हि लिअ; हुनका सँ मजबूती सँ बान्हि लिअ जाहि सँ अहाँक सभ बंधन टूटि जाय।
सच्चा त्याग वेशभूषा वा रूप मे नहि अपितु हृदय मे निहित अछि। कामना वश मे बिना तपस्वी जकाँ देखबा मे कोनो फायदा नहि। तिरुवल्लुवरक तपस्या अतः अपना कैँ संयमित करबाक आन्तरिक अनुशासन थिक।

त्याग एवं करुणा

तिरुक्कुरल मे त्यागक विचार व्यक्ति कैँ समाज सँ अलग नहि करैत अछि। करुणा, तप, सत्यता, क्रोध सँ मुक्ति, हानि नहि करब आ हत्या नहि करब सन गुणक माध्यमे ई व्यक्ति कैँ बेसी जिम्मेदार बना दैत अछि।
जे इच्छा पर विजय प्राप्त कएने अछि, ओ दोसर'क अधिकार नहि छीनत; जे क्रोध पर विजय प्राप्त कएने अछि, ओ दोसर कैँ सताओत नहि; जे अभिमान पर विजय प्राप्त कएने अछि ओ आन प्राणी कैँ नीचाँ नहि देखत। तैँ त्याग संसारक प्रति घृणा नहि थिक; ई अपन भीतरक असीम इच्छा पर विजय प्राप्त क' रहल अछि।
आजुक उपभोग, प्रतिस्पर्धा आ धनक लोभक दुनिया मे तिरुक्कुरलक त्याग पर सोच नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। आवश्यकता आ इच्छाक अंतर बुझब, आ संयम, आत्मसंयम आ सादगीक संग जीब आधुनिक जीवन मे सेहो महत्व रखैत अछि।
तिरुक्कुरल जे त्याग देखाबैत अछि, से दुनियाँ सं भागि रहल नहिं अछि; ओहि मे रहैत मन पर विजय प्राप्त क' रहल अछि। आसक्ति छोड़ब सम्पत्ति त्याग सँ उच्च अछि, आ अपना पर विजय प्राप्त करब दोसर पर विजय प्राप्त करबा सँ उच्च अछि। एहि तरहें तिरुवल्लुवर तपस्या कैँ जीवनक एकटा एहन तरीकाक रूप मे प्रस्तुत करैत छथि जे आन्तरिक शुद्धता आ मनक स्वतंत्रता कैँ लऽ जाइत अछि।

5.5. तिरुक्कुरल में व्यक्तिगत अनुशासन

नीक समाज नीक लोकक बनैत अछि। कानून असगर कोनो समाज कैं परिष्कृत नहि क' सकैत अछि; आत्मसंयम, ईमानदारी, जिम्मेदारी आ विनम्रता सन गुण प्रत्येक व्यक्ति मे जड़ि जमा लेबाक चाही । तिरुक्कुरल एकरा व्यक्तिगत अनुशासन (ओझुक्कम) कहलऽ जाय वाला जीवन के व्यापक विचार के माध्यम सं देखै छै ।
अनुशासन भेद अछि
व्यक्ति के जे उठाबै छै से धन या पद नै बल्कि अनुशासन छै । ताहि लेल वल्लुवर सिखाबैत छथि, कुरल मे :

ஒழுக்கம் விழுப்பம் தரலான் ஒழுக்கம்
உயிரினும் ஓம்பப் படும். (குறள் 131)

ऒऴुक्कम् विऴुप्पम् तरलान् ऒऴुक्कम्
उयिरिनुम् ओम्बप् पडुम्।(कुराल 131)

सदाचार आ संपदा, दैत छैक सुश्रेय जान ।
ओहि लेल प्राणोसँ बढ़िकऽ, रक्षणीय वैह मान ।।

जेकरऽ आचरण शुद्ध छै, ओकरा सब के आदर करलऽ जाय छै: आचरण के शुद्धता के अतः जीवन सं भी अधिक मूल्यवान छै ।
ज्ञान आ कौशल व्यक्ति के आगू बढ़य में मदद क सकैत अछि, मुदा अनुशासन ओहि उन्नति के सम्मान के योग्य बना दैत अछि. तिरुवल्लुवर एहि बात पर जोर दैत छथि जे जीवन स बेसी अनुशासन के पहरा देबाक चाही। जँ कोनो विद्वान व्यक्ति मे अनुशासनक अभाव हो तऽ ओकर सीखब मात्र समाजक लेल हानि बनि सकैत अछि ।

आत्मसंयम : अनुशासन के रक्षक

वल्लुवर व्यक्तिगत अनुशासन के केंद्र में आत्मसंयम के स्थान दैत छथि । संयम विचार, वचन आ कर्म पर नियंत्रण करबाक क्षमता थिक। नीचाँ देल गेल कुरल सँ ई बोध होइत अछि जे परिपक्व मन भावक क्षणिक गुलाम नहि बनि जाइत अछि अपितु परिणाम पर विचार केलाक बाद काज करैत अछि :

அடக்கம் அமரருள் உய்க்கும் அடங்காமை
ஆரிருள் உய்த்து விடும். (குறள் 121)

अडक्कम् अमररुळ् उय्क्कुम् अडङ्गामै
आरिरुळ् उय्त्तु विडुम्।(कुरल 121)

संयम करय मानवकैं, देवत्व प्रदान ।
असंयम धकेल दैत छैक, अंधेरक स्थान ।।

आत्मसंयम स्वर्ग दिस लऽ जाइत अछि, मुदा अनियंत्रित राग अंतहीन अन्हारक राजमार्ग थिक ।
तहिना व्यक्तिक बात ओकर अनुशासनक मापदंड होइत छैक

தீயினால் சுட்டபுண் உள்ளாறும் ஆறாதே
நாவினால் சுட்ட வடு. (குறள்129)

तीयिऩाल् सुट्टपुण् उळ्ळारुम् आऱादे
नाविऩाल् सुट्ट वडु।(कुरल 129)

आगिसँ जड़ल घाव, मिट जेनाय संभव ।
कटुवचनक जड़ल, मिटनाइ कहियो नहि संभव ।।

आगि सँ जे जरल अछि से अपन समय मे ठीक भऽ जाइत अछि, मुदा जीह सँ जड़ल घाव सदाक लेल दौड़ैत घाव बनल रहैत अछि।

ई कुरल एकटा सादा सत्य कहैत अछि जे शरीर पर घाव ठीक भ सकैत अछि, मुदा जे घाव शब्द मोन पर छोड़ि दैत अछि से बहुत दिन धरि चलैत अछि । तें व्यक्तिगत अनुशासन असगर क्रिया पर नियंत्रण नहिं रखैत अछि; विचार, वाणी आ भावना के एक संग परिष्कृत करैत अछि।

व्यक्ति स समाज तक

अनुशासनक संग जीबाक लाभ व्यक्ति पर नहि रुकैत अछि । ईमानदार व्यक्ति नीक परिवार बनबैत अछि, नीक परिवार नीक समाज बनबैत अछि, आ नीक समाज एकटा जिम्मेदार राष्ट्र बनबैत अछि । अतः सामाजिक परिवर्तन व्यक्ति सँ शुरू होइत अछि ।

आजुक इंटरनेट आ सोशल मीडिया के युग मे व्यक्तिगत अनुशासन के दायरा आओर बढ़ि गेल अछि. जे बात अहाँ व्यक्तिगत रूप स' कहबा मे संकोच करब से ऑनलाइन नहि लिखब, गलत जानकारी नहि फैलाब आ दोसर'क निजता'क सम्मान ई सब अनुशासन'क आधुनिक रूप मे गिनल जा सकैत अछि.

तिरुक्कुरल में व्यक्तिगत अनुशासन बाहरी संयम नहिं थिक; ई आन्तरिक नियंत्रण थिक जकरा द्वारा व्यक्ति अपना कैं नियंत्रित करैत अछि । संयम, सुखद भाषण, ईमानदारी, धैर्य आ विनम्रता व्यक्तिक असली औकात तय करैत अछि । वल्लुवर केरऽ विचार छै कि दुनिया कं बदलै के कोशिश करै सं पहलं आपने कं खुद कं परिष्कृत करना चाहियऽ। कारण व्यक्तिगत अनुशासन सामाजिक अनुशासनक पहिल बीज थिक, तिरुक्कुरलक ई विचार सदिखन प्रासंगिक रहैत अछि ।

5.6. तिरुक्कुरल में आत्मविश्वास

तिरुवल्लुवर "आत्मविश्वास" शब्द के प्रत्यक्ष प्रयोग नै करै छै, बल्कि एकरा बनाबै वाला विचार उत्साह, मन के ताकत, प्रयास, कर्म में दृढ़ता आरू प्रतिकूलता में दिल नै खोना जैसनऽ अध्याय में आबै छै । वल्लुवर केरऽ विचार छै कि व्यक्ति केरऽ उदय या पतन बहुत हद तक मन केरऽ ताकत आरू प्रयास पं निर्भर करै छै । ओ रिकॉर्ड करैत छथि जे कोनो व्यक्तिक कद कुरल मे ओकर मनक नाप सँ निर्धारित होइत छैक :

வெள்ளத் தனைய மலர்நீட்டம் மாந்தர்தம்
உள்ளத் தனையது உயர்வு. (குறள் 595)

வெள்ளத் தநை்ய மலர்நீட்டம் மாந்தர்தம்
உள்ளத் தநை்யது உயர்வு. (குரல 595)

कमल नालक लम्बाई, पानिक गहीरताक समान ।
मनुषक महिमा सेहो, ओकर उत्साहक समान ।।

जाहि पानिसँ कोनो पौधाकैं पानि देल जाइत छैक से ओकर फूलक विलासिताक नाप थिक : तइयो मनुक्खक आत्मा ओकर भाग्यक नाप थिक ।

जहिना कमलक डंठल पानिक गहींरताक अनुरूप उठैत अछि तहिना मनुष्य अपन मन जकाँ ऊँच उठैत अछि । ई कुरल सिखाबै छै कि उच्च आदर्श आरू आत्मविश्वास मानव प्रगति के शुरुआत छै ।

मन की ताकत एवं सफलता

जीवन मे कोनो लक्ष्य धरि पहुँचबाक लेल कोनो लक्ष्य निर्धारित करब पर्याप्त नहि; ओतय पहुँचय लेल मोन के ताकत चाही. सफलताक रूप जतय विचार आ कर्म मिलैत अछि। एकरा स्पष्ट करय लेल वल्लुवर कहैत छथि :

எண்ணிய எண்ணியாங்கு எய்துப எண்ணியார்
திண்ணியர் ஆகப் பெறின். (குறள் 666)

ईऱ्ऱाळ् पसिकाण्बान् आयिनुम् सॆय्यर्क
सान्ऱोर् पऴिक्कुम् विऩै। (कुरल 666)

यदि देख दुःखी हुए पड़य, जननी क्षुधा पीड़ित ।
फेर नहि करैक छैक, काज सज्जनक निंदनीय ।।

जे चाहै छै, से मनुष्य जेना चाहै छै, तकरा प्राप्त करै छै, बशर्ते कि वू अपनऽ पूरा ताकत के साथ चाहै छै ।
वल्लुवर असफलता पर बिना हिम्मत केने आगू बढ़य के जिद सेहो करैत छथि:

துன்பம் உறவரினும் செய்க துணிவாற்றி
இன்பம் பயக்கும் வினை. (குறள் 669)

तुन्बम् उऱवरिनुम् सॆय्ह तुणिवाऱ्ऱि
इन्बम् पयक्कुम् विनै।(कुरल 669)

कष्ट हुए यदि बीचमे जखन, काज करि सुखांत ।
करि उद्यम संकल्पसँ, करब शुभ फलक अंत ।।

सुख बढ़बै बला काज करबाक काज लिअ: आ ओकरा करबा मे भले क्रूर क्षोभ भोगय पड़य, मुदा अपन हृदय कैं स्टील करू आ अंत धरि दृढ़ रहू।
अहाँ जे काज उठौने छी ताहि मे जे किछु बाधा उत्पन्न हो, ओकरा नहि छोड़ू; जाबे सफलता नै भेटत ताबे तक एहि पर रहू। आत्मविश्वास मात्र बाधा पर नहि टिकैत अछि; ई ओ फ्रेम ऑफ माइंड अछि जे मानैत अछि जे बाधा पार कएल जा सकैत अछि ।

प्रयास के मूल्य

जखन कोनो काज भाग्यक कारणेँ सफल नहि होइत अछि तखनो कयल गेल प्रयासक माध्यमे सफल भ' सकैत अछि, वल्लुवम कहैत छथि :

தெய்வத்தான் ஆகா தெனினும் முயற்சிதன்
மெய்வருத்தக் கூலி தரும். (குறள் 619)

देय्वत्तान् आहा देऩिनुम् मुयऱ्चितऩ्
मॆय्वरुत्तक् कूलि तरुम्।(कुरल 619)

यदि नियति अनुकूल नहि रहय, ओ काज हुए निष्फल ।
किन्तु परिश्रमक अनुकूल, उद्यम दैत सुफल ।।

देवता लोकनिक विरुद्ध रहितो उद्योग श्रमक मजदूरी देबय लेल बाध्य अछि ।
ई कुरल ई विचार के वाहक छै कि आशा के सफलता पूरा नै पहुँचला पर भी ईमानदार प्रयास कभियो बेकार नै होय छै । अतः आत्मविश्वास मात्र सकारात्मक सोच नहिं थिक; ई काज मे आत्मविश्वास थिक, प्रयासक संग जुड़ल।
तिरुक्कुराल केरऽ दृष्टि में आत्मविश्वास अहंकार नै छै; ई मनक ताकत थिक जे अपन क्षमता कैं जनैत अछि, अपन लक्ष्य कैं स्पष्ट करैत अछि आ दृढ़ता सँ काज करैत अछि । व्यक्ति'क शक्ति तखनहि पूर्णता मे पहुँचैत छैक जखन "हम क' सकैत छी" केर विचार "हम कोशिश करब" केर काज मे जुड़ि जाइत छैक ।

5.7. तिरुक्कुरल में शिक्षा

तिरुवल्लुवर शिक्षा कैं मात्र ज्ञानक संग्रह नहि बुझैत छथि । हुनकऽ कहना छै कि एकरा स व्यक्ति केरऽ दृष्टि चौड़ा होना चाहियऽ, ओकरऽ आचरण क परिष्कृत करना चाहियऽ आरू जीवन भर ओकरा साथ खड़ा रहै वाला धन होना चाहियऽ।

கற்க கசடறக் கற்பவை கற்றபின்
நிற்க அதற்குத் தக. (குறள் 391)

कऱ्क कसडऱक् कऱ्पवै कऱ्ऱपिन्
निऱ्क अदऱ्कुत् तह।(कुरल 391)

सीखू सीखक लायक सब, बिना संसयकेँ सीखू ।
सीखलाक उपरांत, आचरण करू सटीक ।।

जे ज्ञान प्राप्त करबाक योग्य अछि से नीक जकाँ प्राप्त करू, आ ओकरा प्राप्त केलाक बाद अहाँ ओकर अनुसार चलैत रहू।

वल्लुवर सीखै के तरीका ई छै कि जे सीखना चाहियऽ ओकरा सीखऽ, आरू सीखला के बाद ओकरा हिसाब सें जीना । सीखनाय खाली जानकारी कें याददाश्त मे रखनाय नहि छै. सच्चा शिक्षा स्पष्ट रूप स सीखब आ जे सीखलौं ओकरा स जीबय के अछि।

शिक्षा : मानव जाति के आँख

शिक्षा आँखि जकाँ होइत छैक, आ वल्लुवम सिखाबैत अछि जे ओकरा प्राप्त करब मनुक्खक जीवनक उद्देश्य थिक ।

எண்ணென்ப ஏனை எழுத்தென்ப இவ்விரண்டும்
கண்ணென்ப வாழும் உயிர்க்கு. (குறள் 392)

ऎण्णॆन्ब एऩै एऴुत्तॆन्ब इव्विरण्डुम्
कण्णॆन्ब वाऴुम् उयिर्क्कु।(कुरल 392)

अंक विद्या आ अक्षर विद्या, दुनु कला जानू।
जे कहल जाइत छैक दुनियाक आँखिक समान जानू॥

दू टा जीव-जन्तुक आँखि होइत छैक : एकटा केँ संख्या कहल जाइत छैक, आ दोसर केँ अक्षर।
संख्या आ साक्षरता केँ मनुक्खक जीवनक आँखि कहल जाइत छैक । आँखि हमरा सभकेँ संसारक रूप देखाबैत अछि; शिक्षा एकर अर्थ बुझबा मे मदद करैत अछि।

கண்ணுடையர் என்பவர் கற்றோர் முகத்திரண்டிரண்டு
புண்ணுடையர் கல்லா தவர். (குறள் 393)

कण्णुडैयर् ऎन्बवर् कऱ्ऱोर् मुहत्तिरण्डु
पुण्णुडैयर् कल्ला दवर्। (कुरल 393)

आँखिवाला कहाबय, जे छथि शिक्षित ।
मुखड़ा पर दू घाव वाला, जे मनुष अछि अशिक्षित ।।

असगर विद्वानक आँखि कहल जा सकैत अछि : अशिक्षितक माथ मे मात्र दू टा घाव होइत छैक ।
खाली पढ़ल-लिखल लोकक आँखि होइत छैक। आँखिक स्थान पर घाव लागल अविद्वान लोक केँ बजा क' वल्लुवम कहैत छथि जे शिक्षा मात्र दृष्टि नहि थिक; ई विवेकशील दृष्टि थिक।

अविनाशी धन

भौतिक धन नष्ट भ' सकैत अछि, मुदा शिक्षा व्यक्तिक विचार आ व्यक्तित्व म रहैत छैक, अतः वल्लुवर शिक्षा के अविनाशी धन मानैत छथि ई बात ओ एहि मे स्पष्ट करैत छथि :

கேடில் விழுச்செல்வம் கல்வி ஒருவற்கு
மாடுஅல்ல மற்றை யவை. (குறள் 400)

केडिल् विऴुच्चॆल्वम् कल्वि ऒरुवर्क्कु
माडुअल्ल मऱ्ऱै यवै। (कुरल 400)

मनुषक विद्या-धन होइत, अमिट आ श्रेष्ठ ।

दोसर सब धन धनमे, नहि छैक सबसँ श्रेष्ठ ।।

एकटा अविनाशी आ निर्दोष खजाना मनुक्ख कैँ सीख रहल अछि; आन धन ओहिना अछि जेना ओकरा पहिने किछु नहि।

तिरुक्कुराल में शिक्षा ज्ञान, अनुशासन आ व्यवहार के मिलन छै। विद्वान व्यक्ति के खाली बात नै जानय के चाही बल्कि जे सीखल गेल अछि ओकरा स जीबय के चाही। शिक्षाक पूर्णता ज्ञान कैँ जीवन मे बदलबा मे निहित अछि।

5.8. तिरुक्कुरल में नेतृत्व गुण

धन संबंधी खंड (पोरुल) में तिरुक्कुरल राजा, मंत्री, किला, सेना, नागरिक, वकील, सही समय जानना आरू सावधानीपूर्वक जांच के बाद काम करै के बात करै छै । ई विचारऽ क नेतृत्व केरऽ मूल सिद्धांत के रूप म भी पढ़लऽ जाब सकै छै ।

தூங்காமை கல்வி துணிவுடைமை இம்மூன்றும்
நீங்கா நிலனாள் பவற்கு. (குறள் 383)

तूङ्गामै कल्वि तुणिवुडैमै इम्मून्ऱुम्
नीङ्गा निलऩाळ् बवर्कु।(कुरल 383)

अवलंबन, विद्या आ धैर्य हुए एक संग ।
एहि तीनू नरेशकैँ, संग नहि छोड़ि जाय संग ।।

देखू, जे मनुष्य पृथ्वी पर शासन करबाक नियति अछि: तीनू गुण, सतर्कता, विद्या आ निर्णयक शीघ्रता, ओकरा सभ कैँ नहि छोड़ू।

वल्लुवर जागरूकता, ज्ञान आ साहस के नाम एकटा नेता के मूल गुण के रूप में रखैत छथि ।

नेतृत्व

वल्लुवम के कहना छै कि लोगऽ क ऐन्हऽ नेता के नेतृत्व बहुत पसंद छै जेकरा स संपर्क करना आसान होय छै आरू जे सब स प्रेम करै छै:

காட்சிக்கு எளியன் கடுஞ்சொல்லன் அல்லனேல்
மீக்கூறும் மன்னன் நிலம். (குறள் 386)

काट्चिक्कु ऎळियन् कडुञ्ऱोल्लन् अल्लऩेल्
मीक्कूऱुम् मऩ्ऩन् निलम्।(कुरल 386)

जिनकर दर्शन सहज आ नहि वचन कर्कश ।
एहेन राजाक देशमे, यशक-गान हुए बहुत राश ।।

जँ राजकुमार अपन सभ प्रजाक लेल सुलभ होथि आ कहियो कठोर शब्द नहि होथि तँ ओकर राज्य सभसँ ऊपर मानल जायत ।

तिरुक्कुरल एकटा नेता के लेल उचित चारि गुण के नाम दैत अछि : निर्भीकता, गरीब के प्रति उदारता, ज्ञान आ उत्साह।

नेतृत्व के सिद्धांत

முறைசெய்து காப்பாற்றும் மன்னவன் மக்கட்கு
இறையென்று வைக்கப் படும். (குறள் 388)

मुऱैसॆय्दु काप्पाऱ्ऱुम् मऩ्ऩवन् मक्कट्कु
इऱैयॆऩ्ऱु वैक्कप् पडुम्।(कुरल 388)

न्यायपूर्ण शासन, जन-कल्याण, जे भूप करय बुझि ।
हुनकर सम्मान, जनता-जनार्दन करय, देवता जैँका बुझि ।।

देखू, ओ राजकुमार जे निष्पक्ष न्याय करैत अछि आ अपन प्रजाक रक्षा करैत अछि, ओकरा मनुक्खक बीच देवता जकाँ देखल जायत।

तिरुक्कुरल केरऽ नेतृत्व के सिद्धांत ई छै कि एगो नेता कं वू काम करै मं सक्षम होना चाहियऽ आरू ओकरऽ रक्षा करै मं सक्षम होना चाहियऽ जे ओकरा पं निर्भर लोगऽ कं जरूरत छै। अतः नेतृत्व सत्ताक अधिकार नहिं थिक; ई जिम्मेदारी के कर्तव्य छै। नीक नेता के सलाह सुनय लेल तैयार रहबाक चाही आ गलती के ओर इशारा करय वाला के स्वीकार करय लेल तैयार रहबाक चाही.

तिरुक्कुरल केरऽ नेतृत्व, ज्ञान, साहस, न्याय, सलाह, जिम्मेदारी आरू जनता केरऽ कल्याण के बारे मं सोच मं एक साथ आबी जाय छै। सच्चा नेता खाली सामने चलै वाला नै होय छै; सच्चा नेता सबके आगू अनैत अछि।

5.9. तिरुक्कुरल में शारीरिक स्वास्थ्य

चिकित्सा (मरुन्धु) के अध्याय में बीमारी के आगमन के बाद इलाज के बात ही नै छै बल्कि बीमारी स बचाबै वाला जीवन जीबै के तरीका के भी बात करलऽ गेलऽ छै। वल्लुवर केरऽ भोजन मं अनुशासन पं जोर देना विशेष रूप सं उल्लेखनीय छै।

மருந்தென வேண்டாவாம் யாக்கைக்கு அருந்தியது
அற்றது போற்றி உணின். (குறள் 942)

मरुन्देऩ वेण्डावाम् याक्कैक्कु अरुन्दियदु
अऱ्ऱदु पोऱ्ऱि उणिऩ्।(कुरल 942)

खेनाय पाचन जानि जे, ठीक मात्रामे खाय ।
शरीरकेँ औषधक जरूरी, एकदम नहि रहि जाय ।।

दू टा जीव-जन्तुक आँखि होइत छैक : एकटा कैँ संख्या कहल जाइत छैक, आ दोसर कैँ अक्षर।

ई कुरल स्वास्थ्य केरऽ निवारक दृष्टिकोण व्यक्त करै छै : अगर आपने पिछला भोजन के पचला के बाद ही नाप सं खाना खाबै छै तं आपने ऐन्हऽ अवस्था मं पहुँची सकै छियै जहाँ शरीर कं कोनो दवाई के जरूरत नै होय।

नाप में भोजन

அற்றால் அளவறிந்து உண்க அஃதுஉடம்பு
பெற்றான் நெடிதுய்க்கும் ஆறு. (குறள் 943)

अऱ्ऱाल् अळवऱिन्दु उण्ग अह्दुउडम्बु
पेऱ्ऱान् नेडितुय्क्कुम् आऱु।(कुरल 943)

पचय वाला भेला पर भोजन, करू ठीक परिमाण ।
शरीरक चिरंजीवीक, रास्ता यैह छैक जान ।।

संयमपूर्वक भोजन करू आ जे भोजन केने छी से पचलाक बाद, से अहाँक दिन लम्बा करबाक तरीका अछि।

भोजनक गुणवत्ता मात्र नहि ओकर मात्रा सेहो मायने रखैत अछि। स्वास्थ्य के आधार ई ज्ञान के साथ भोजन करना छै कि शरीर के कतेक जरूरत छै।

மாறுபாடு இல்லாத உண்டி மறுத்துண்ணின்
ஊறுபாடு இல்லை உயிர்க்கு. (குறள் 945)

माऱुबाडु इल्लाद उण्डि मऱुत्तुण्णिन्
ऊऱुबाडु इल्लै उयिर्क्कु। (कुरल 945)

शरीरक अनुकूल जे करय, पथ्याहारक भोग ।
प्राणक संकटकैँ बहुत, दूर रहत रोग।

जँ अहाँ ओ भोजन परहेज करब जे अहाँक व्यवस्था सँ असहमत नहि अछि तँ अहाँक शरीर मे कोनो परेशानी नहि होयत।
ई कुरल शरीर के अनुकूल नै भोजन सं बचै के आरू फिटिंग डाइट के पालन करै के विचार जोड़ै छै ।
स्वास्थ्य पर तिरुक्कुरल के सोच में बीमारी के बाद दवाई के नै बल्कि ओकरा सं पहिने के व्यवस्थित जीवन के प्राथमिकता देल गेल छै. स्वास्थ्य के आधार भोजन, नाप, पाचन आ शरीर के प्रकृति के समझ के साथ जीना छै।

5.10. तिरुक्कुरल में चिकित्सा नैतिकता

चिकित्सा अध्याय मे इलाज आ चिकित्सक कें बारे मे विचार सेहो दर्ज कैल गेल छै. ओहि मे कहल गेल अछि जे चिकित्सक के बीमारी, ओकर कारण, एकर इलाज के तरीका आ मरीज के स्वभाव के जानैत काज करय पड़त.

நோய்நாடி நோய்முதல் நாடி அதுதணிக்கும்
வாய்நாடி வாய்ப்பச் செயல். (குறள் 948)

नोय्नाडि नोय्मुदल् नाडि अदुतणिक्कुम्
वाय्नाडि वाय्प्पच् चॆयल्। (कुराल 948)

रोग कि पहिने बुझिकऽ, फेर बुझिकऽ उपचार ।
निदानक युक्ति बुझि, करि यथायोग्य उपचार ।।

रोग आ ओकर जड़ि आ ओकरा ठीक करबाक साधन पर विचार करू: आ फेर हर सावधानीपूर्वक इलाज पर लागि जाउ।
पहिने रोगक ज्ञान हेबाक चाही; तखन ओकर कारण ताकय पड़त; तखन एकर उपायक जांच आ उपयुक्त उपचार कयल गेल। ई कुरल ओहि बात के एकटा उचित चिकित्सा दृष्टिकोण के स्पष्ट रूप के रूप में प्रस्तुत करैत अछि ।

रोगी – केन्द्रित चिकित्सा

உற்றான் அளவும் பிணியளவும் காலமும்
கற்றான் கருதிச் செயல். (குறள் 949)

उऱ्ऱान् अळवुम् पिणियळवुम् कालमुम्
कऱ्ऱान् करुदिच् चॆयल्।(कुरल 949)

रोगीक वयस, रोगक, समय आ बढ़नाय ।
सोचि समझिकऽ वैद्य शुरू, करी सही उपचार ।।

वैद्य रोगी के साथ-साथ बीमारी के भी नाप लेनं आरो मौसम के हिसाब करै अर्थात: आरो तखनिये हर सावधानी के साथ एकरऽ इलाज के काम शुरू करी दै।
एकटा तरीका एकहि बीमारी कें सब कें अनुकूल नहि होयत छै. कुरल मे बताओल गेल अछि जे चिकित्सक कैँ रोगी'क स्थिति, बीमारी'क विस्तार आ समय पर ध्यान दैत काज करय पड़तैक.

உற்றவன் தீர்ப்பான் மருந்துழைச் செல்வான்என்று
அப்பால்நாற் கூற்றே மருந்து. (குறள் 950)

उऱ्ऱवन् तीर्प्पान् मरुन्दुळैच् चॆल्वान्ऎन्ऱु
अप्पाल्नाऱ् कूऱ्ऱे मरुन्दु। (कुरल 950)

रोगी, वैद्य दवाइ वा, सहयोगीक संग
वैद्य विद्याक चारि, प्रकारक सुअंग ।।

रोगी, वैद्य, औषधि आ दवाई बनौनिहार, एहि चारू पर सभटा इलाज निर्भर करैत अछि: आ चारि फेर एक-एकटा गुण अछि।

वल्लुवर उपचार प्रक्रिया केरऽ अनेक घटकऽ क एक साथ देखै छै: रोगी, चिकित्सक, चिकित्सा आरू चिकित्सा सहायता।

तिरुक्कुरल में चिकित्सा नैतिकता केवल रोग ठीक करबाक नहिं थिक; ई रोगी के समझ के साथ, ज्ञान के साथ, जांच के साथ आरू जिम्मेदारी के साथ काम करना छै । एकरा अलग करय वाला बात छै एकटा मेडिकल आउटलुक जे असगर बीमारी के नै बल्कि मरीज के सेहो ध्यान दैत छै.

5.11. तिरुक्कुरल में मानसिक कल्याण

तिरुक्कुरल मे "मानसिक कल्याण" नामक अध्याय नहि भेटत । तइयो चिन्ता, क्रोध, ईर्ष्या, लोभ, दुख, मनक ताकत, दोस्ती, प्रेम आ संयम के बारे में कुराल जीवन के एहन तत्व प्रदान करैत अछि जे मन के शांति में मदद करैत अछि ।

அழுக்காறு அவாவெகுளி இன்னாச்சொல் நான்கும்
இழுக்கா இயன்றது அறம். (குறள் 35)

अऴुक्कारु अवावॆहुळि इन्ऩाच्चॊल् नाऩ्गुम्
इऴुक्का इयऩ्ऱदु अऱम्। (कुरल 35)

ईर्ष्या, लालच, क्रोध आ, कटुवचन चारु दोष ।
रहित रहनाय, धर्मानुष्ठान निर्दोष ।।

ईर्ष्या आ लोभ, क्रोध आ कठोर शब्द सँ बचू; धर्म प्राप्त करबाक मार्ग वैह अछि।

ईर्ष्या, असीम कामना, क्रोध आ आहत वचन स दूर रहब सदाचार कहल जाइत अछि। ई सब व्यक्ति के रिश्ता के त' प्रभावित करैत अछि, ओकर मन के शांति पर सेहो असर करैत अछि.

प्रतिकूलता के सामना करते समय मन की ताकत

दुर्भाग्यक सोझाँ डगमगाब मनुक्खक स्वभाव थिक । एहि सं मन मे अशांति भ जाइत अछि, आ मानसिक स्वास्थ्य मे गिरावट आबि जाइत अछि. वल्लुवर एकटा उपाय दिस इशारा करैत छथि : जँ दुख अबैत काल ओकरा हँसैत-हँसैत स्वीकार कयल जाय तँ ओकर कोनो प्रभाव मोन पर नहि पड़तैक । एहि विचार कैं जे कुरल प्रस्तुत करैत अछि से अछि:

இடுக்கண் வருங்கால் நகுக அதனை
அடுத்தூர்வது அஃதொப்பது இல். (குறள் 621)

इडुक्कण् वरुङ्गाल् नहुह अदऩै
अडुत्तूर्वदु अह्दोप्पदु इल्। (कुरल 621)

बिपद जखन आबि जाय तखन, भऽ जाय प्रसन्न ।
ओहिसँ मुक्ति होबाक, उत्तम मार्ग नहि भिन्न ।।

जखन दुर्भाग्य सँ भेंट होयत तखन ओकर सामना अपन सर्वोत्तम मुस्कान सँ करू: कारण मुस्कान सन किछु नहि छैक जे मनुक्ख कैं ओकर विरुद्ध अपन पकड़ बनेबा मे सक्षम बना सकय।

एकरऽ मतलब ई नै लेना चाहियऽ कि दुख के नकारना छै । एकरा ई कहै के रूप में समझलऽ जाब सकै छै कि दुर्भाग्य के सामना करै लेली मन के दृढ़ता प्राप्त करै के चाही, जेकरा सें पूर्ण रूप सें टूटी नै ।

मानसिक कल्याण के लेल सेहो नीक मानवीय संबंध आवश्यक अछि । वल्लुवर प्रेम, दोस्ती, सुखद शब्द आरू कृतज्ञता क जे महत्व दै छै, वू व्यक्ति केरऽ आतंरिक जीवन आरू सामाजिक संबंध सं जुड़लऽ होय छै ।

तरीका त खेती करब मानसिक कल्याण

दोसर के प्रगति पर ईर्ष्या मानसिक स्वास्थ्य के बर्बाद क दैत अछि। दोसरऽ के प्रगति स ईर्ष्या करै के बजाय एकरऽ सराहना हर्षोल्लास स करै म मदद करै छै आरू ई विचार के साथ काम करै म मदद करै छै कि "हम भी एतना ऊंचाई प पहुँची सकै छियै, आरू पहुँचबै"। ई विचार कुरल मे अछि :

அறனாக்கம் வேண்டாதான் என்பான் பிறனாக்கம்
பேணாது அழுக்கறுப் பான். (குறள் 163)

अऱऩाक्कम् वेण्डादान् ऎऩ्बान् पिऱऩाक्कम्
पेणादु अऴुक्करुप् पान्। (कुरल 163)

जे परमार्थ लाभ कि, रखैत अछि चाह ।
पर-वैभवसँ दुःखीभऽ, मने-मन राखय ईर्ष्या ।।

जे सद्गुण वा धनक चिन्ता नहि करैत अछि जे अपन पड़ोसी कैं समृद्धि सँ आनन्दित करबाक बदला ईर्ष्या करैत अछि।
तिरुक्कुरल बाहर मन के शांति के खोज करय सं पहिने मन के परिष्कृत करय लेल कहैत अछि. जीबै लेली एकरऽ संदेश छै: अपनऽ भावना कं जानं, ओकरा नियंत्रित करी कं, दुख मं नै डगमगाय कं प्रेमपूर्ण संबंध के पोषण करलऽ जाय ।

5.12. तिरुक्कुरल में मानवता

कोनो व्यक्ति के व्यक्ति के रूप में सम्मान करब, दोसर के दुख के महसूस करब, मदद करब, नुकसान नहि करब, भूख के दूर करब आ लोक के प्रेम सं व्यवहार करब मानवता के आधार अछि. ई विचार सम्पूर्ण तिरुक्कुरल मे विभिन्न रूप मे चलैत अछि ।

அன்பிலார் எல்லாம் தமக்குரியர் அன்புடையார்
என்பும் உரியர் பிறர்க்கு. (குறள் 72)

अऩ्बिलार् ऎल्लाम् तमक्कुरियर् अऩ्बुडैयार्
ऎऩ्बुम् उरियर् पिऱर्क्कु। (कुरल 72)

प्रेमहीन पुरुषक सब किछु, अपन होइत छैक जान ।
प्रेमीजन परहितार्थ, हाड़ ओ दैत छैक दान ।।

जे प्रेम करै छै, से खाली अपना लेली नै जीबै छै; रहल बात जे प्रेम करै छै, ओकरा दोसरऽ के मदद करै के लेलऽ अपनऽ हड्डी ही देतै । जे मन दोसरक प्रति स्वार्थसँ परे चौड़ा होइत अछि से मानवताक प्रारम्भ थिक ।

दोसर'क दुख कें अपन बुझब

அறிவினான் ஆகுவது உண்டோ பிறிதின்நோய்
தம்நோய்போல் போற்றாக் கடை. (குறள் 315)

अऱिविऩाऩ् आहुवदु उण्डो पिऱिदिऩ्नोय्
तम्नोय्पोल् पोऱ्ऱाक् कडै।(कुरल 315)
जे नहि करय दोसरक रक्षा, दोसरक दुःख अपन बुझि ।
कि काज एतैक ओकर, तखन बुद्धि आ ज्ञान बुझि ।।

जँ मनुक्खक बुद्धिक कोन लाभ जँ ओ आन प्राणीक पीड़ा कैं अपनहि नहि बुझैत अछि आ तैं भाव कोनो कैं चोट पहुँचेबा सँ परहेज नहि करैत अछि ?

प्रश्न “जे ज्ञान के कोन काज छै जे दोसर के दुख के अपन दुख के रूप में नै महसूस करै छै?” मानवताक महानता कैं छूबैत अछि। ज्ञानक ऊँचाई ओकर मात्रा मे नहि अपितु दोसरक लेल उपयोगिता मे निहित अछि ।

उदारता आ करुणा

मदद तखनहि देब बनि जाइत अछि जखन ओ सही मायने मे जरूरतमंद के लेल कयल जाइत अछि। कुरल एहि बातक व्याख्या करैत अछि :

வறியார்க்குஒன்று ஈவதே ஈகைமற் றெல்லாம்
குறியெதிர்ப்பை நீர துடைத்து. (குறள் 221)

वऱियार्क्कुऒन्ऱु ईवदे ईहैमऱ् ऱेल्लाम्
कुऱियॆदिर्प्पै नीर तुडैत्तु।(कुरल 221)

गरीबकैं देल दान, बुझू उत्तम दान ।
प्रतिदानक प्रतीक्षा, छैक सब दोसर दान ।।

गरीब के देना असगरे दान छै: बाकी सब दान ऋण के प्रकृति के छै।
बिना अपेक्षा के देल गेल मदद मानवता के उच्चतम रूप अछि।
तिरुक्कुरल मे मानवता “हम” सँ “हम” धरि के आन्तरिक यात्रा थिक । ज्ञान आ धन के मानवीय औकात तखने भेटैत छैक जखन कियो दोसर के दुःख के अनुभूति करैत ओकर कल्याण के लेल काज करैत अछि ।

5.13. तिरुक्कुरल में सामाजिक समरसता

कोनो समाज केवल कानून स नहि टिकैत अछि। एक दोसरा के प्रति सम्मान, प्रेम, न्याय, धैर्य, सुखद भाषण आ हार मानय के इच्छा सामाजिक समरसता के आधार छै.

இனிய உளவாக இன்னாத கூறல்
கனியிருப்பக் காய்கவர்ந் தற்று. (குறள் 100)

इऩिय उळवाह इन्ऩाद कूऱल्
कऩियिरुप्पक् काय्कवर्न् तऱ्ऱु।(कुरल 100)

मधुर वचनक छोड़िकऽ जे करे कटु बचन जान ।
पाकल फल छोड़िकऽ, काँच फलक ग्रहण समान ।।

देखू ओ आदमी जे मीठगर परोसैत काल कठोर शब्दक प्रयोग करैत अछि। ओ पाकल फलसँ अपक्ल फलकैं पसिन करैत छथि ।
जखन मीठ बाजि सकैत छलहुँ तखन कठोर बाजब अपार फल चुनि कऽ पाकल फल छोड़ि देब जकाँ अछि । संबंध के देखभाल में शब्द के बहुत बड़ऽ भूमिका होय छै, आरू ई कुरल सामाजिक जीवन में भाषा के जिम्मेदारी के दर्शाबै छै ।

बुराई के बदला में अच्छाई

वल्लुवर के कहना छै कि सबसें उच्च गुण बदला के चक्र जारी नै रखना छै बल्कि बुराई के जवाब अच्छाई स देना छै । ई सामाजिक समरसताक गहींर नैतिक दृष्टिकोण थिक । एकरा जे कुरल बुझबैत अछि से अछि :

இன்னாசெய் தாரை ஒறுத்தல் அவர்நாண
நன்னயம் செய்து விடல். (குறள் 314)
इऩ्ऩासॆय् दारै ऒऱुत्तल् अवर्नाण
नऩ्ऩयम् सॆय्दु विडल्।(कुरल 314)
अहितक बदला हित करू, अहित आ हित फेनो भुलि जाय ।
पानि पानि भऽ जाय यैह ओकर फल भेट जाय ।।

जे ओकरा घायल केलकै ओकरा कोना सजा देतैक? नीक मोड़ करथि आ हृदय मे लाज करथि।

निष्पक्षता

सामाजिक सौहार्द लेल न्याय सबसँ पहिने होइत अछि। निष्पक्षता के बिना, जे बिना पक्ष लेने सबहक संग समान व्यवहार करैत अछि, स्थायी एकता नहि उठि सकैत अछि। तिरुक्कुरलक सामंजस्य तें मतभेद नहिं मेटाबैत अछि; मतभेद के बीच भी मानवीय शालीनता के रक्षा करै छै।

प्रेम, सुखद भाषण, धैर्य, न्याय आ क्षमा सामाजिक समरसता के स्तंभ छै जे तिरुक्कुरल देखाबै छै। एकता के मतलब ई नै छै कि सब एक जैसनऽ होय; एकरऽ मतलब छै कि अलग-अलग लोगऽ के आदर के साथ एक साथ रहना।

5.14. तिरुक्कुरल में दोस्ती

तिरुक्कुरल मे मित्रता कँ मात्र शगल नहि मानल जाइत छैक। वल्लुवर एकरऽ अनेक आयामऽ के परीक्षण करै छै: अच्छा दोस्त के चयन करना, दोस्ती के परीक्षण करना, सच्चा दोस्ती के संजोना आरू खराब संगत स बचना।

முகநக நட்பது நட்பன்று நெஞ்சத்து
அகநக நட்பது நட்பு. (குறள் 786)

मुहनह नट्पदु नट्पन्ऱु नॆञ्चत्तु
अहनह नट्पदु नट्पु।(कुरल 786)

हँसी अथवा हँसमुख, केवल दोस्ती नहि बुझू ।
सैह असल दोस्ती जाहिसँ, दिल खुश भऽ जाय जानू ।।

दोस्ती ओ संगति नहि थिक जे मुँह पर मुस्कुराइत अछि, बल्कि प्रेम थिक जे हृदय कँ आनन्दित करैत अछि। चेहरा पर मुस्कान मात्र दोस्ती नहिं; दोस्ती सच्चा प्रेम अछि जे हृदय स खिलैत अछि।

गलती सुधारय वाला मित्र

मित्र मात्र ओ नहि होइत अछि जे नीक समय मे ओतय रहैत अछि। वल्लुवर दोस्ती के परिभाषित करै छै कि : वू दोस्त जे तोरा गलत रास्ता सं हटाबै छै आरू दुख आबै पं तोरा साथ खड़ा होय जाय छै।

அழிவின் அவைநீக்கி ஆறுஉய்த்து அழிவின்கண்
அல்லல் உழப்பதாம் நட்பு. (குறள் 787)

अऴिविऩ् अवैनीक्कि आऱुउय्त्तु अऴिविऩ्कण्
अल्लल् उऴप्पदाम् नट्पु।(कुरल 787)

कुपथसँ निकालि दोस्तकँ, लऽ जेनाय सुपथ ।
दोस्ती सैह होइत छैक जे, विपदमे दियैक संग ।।

ओ आदमी असगरे तोहर मित्र अछि जे तोरा गलत सँ मुँह मोड़ि दैत अछि, सही दिस निर्देशित करैत अछि आ दुर्भाग्य मे तोहर संगत करैत अछि।

एहि कुरल मे मित्रताक कर्तव्य पर जोर देल गेल अछि। व्यथित मित्र के बचाबै के क्रिया के लेलऽ वल्लुवर एगो ऊँच उपमा के प्रयोग करै छै।

உடுக்கை இழந்தவன் கைபோல ஆங்கே
இடுக்கண் களைவதாம் நட்பு. (குறள் 788)

उडुक्कै इऴन्दवऩ् कैपोल आङ्गे
इडुक्कण् कळैवदाम् नट्पु।(कुरल 787)

धोतीक खिसकैत, थामे जेना हाथ ।
मित्र पर संकट पड़लासँ झट, दिअ ओहिना साथ ।।

देखू, जकर वस्त्र एक कात उड़ा देल गेल छैक, ओकर हाथ कोना ओकर अंग-अंग कैँ ठीक करबा मे हड़बड़ाइत छैक, से ओहि सच्चा मित्रक प्रतीक छैक जे मनुक्खक दुर्भाग्य मे सहायता करबा मे जल्दबाजी करैत छैक।
जेना कोनो वस्त्र फिसलला पर हाथ अपने आप ससरैत अछि तहिना सच्चा दोस्ती मित्र के मदद करैत अछि बिना बजाओल जेबाक प्रतीक्षा केने विपत्ति मे।
दोस्ती के मूल्य दोष सुधारना, दुख में साथ खड़ा रहना आरू सच्चा होय के तुलना में आनन्द के बांटै में कम छै ।

5.15. तिरुक्कुरल में शासन

धन संबंधी खंड में तिरुक्कुरल राज्य, शासक, मंत्री, किला, सेना, नागरिक, न्याय, अर्थव्यवस्था आरू दूत जैसनऽ राजनीतिक तत्वऽ के लंबा चर्चा करै छै । वल्लुवर केरऽ राजनीतिक विचार मं जनता केरऽ कल्याण आरू न्याय सबसें पहलऽ छै ।

படைகுடி கூழ்அமைச்சு நட்புஅரண் ஆறும்
உடையான் அரசருள் ஏறு. (குறள் 381)

पडैकुडि कूऴ्अमैच्चु नट्पुअरण आरुम्
उडैयान् अरसरुळ् एरु।(कुरल 381)

सैन्य, कोष,प्रजा, मित्र, सचिव दुर्ग छः अंग ।
सैह राजामे शेर, हुए ई सभ जकरा संग ।।

राजकुमारऽ के बीच एगो शेर छै जे छह चीजऽ के सम्मान में सुसंपन्न छै, जेना कि सैनिक, जनसंख्या, पदार्थ, परिषद, गठबंधन, आरू किलाबंदी ।

वल्लुवर ई छह तत्व, सेना, नागरिक, आर्थिक समृद्धि, मंत्रालय, दोस्ती आरू किला के नाम राज्य केरऽ मुख्य अंग के रूप मं रखलकै ।

बस शासन करू

வான்நோக்கி வாழும் உலகெல்லாம் மன்னவன்
கோல்நோக்கி வாழும் குடி. (குறள் 542)

वान्नोक्कि वाऴुम् उलहेल्लाम् मन्नवन्
कोल्नोक्कि वाऴुम् कुडि।(कुरल 542)

जेना वर्षा पर निर्भर छैक, संसारक सब जीव ।
तहिना प्रजा सुशासनक, प्रतीक्षामे अतीव ।।

संसार जीवनक लेल वर्षा मेघ दिस तकैत अछि, तहिना मनुष्य रक्षाक लेल राजकुमारक राजदंड दिस तकैत अछि। एहि कुरल मे ई विचार व्यक्त कयल गेल अछि जे जहिना दुनियाँ बरखा लेल आँखि उठा कऽ देखैत अछि तहिना नागरिकक जीवन राज्यक राजदंड पर निर्भर करैत अछि । मूल बात ई जे राजनीति व्यक्तिगत वैभवक औजार नहिँ थिक; जनता के सुरक्षा आ कल्याण के जिम्मेदारी छै। तिरुक्कुरल के राजनीतिक सिद्धांत में सत्ता स बेसी न्याय, शासक स बेसी नागरिक के कल्याण, आ ताकत स बेसी जिम्मेदारी के भाव।

5.16. तिरुक्कुरल में प्रशासनिक कौशल

प्रशासन केवल निर्णय लेबय के बात नहिं; ई सही समय पर सही व्यक्ति के सही काम सौंपना, परिणाम के आकलन करना आरू ओकरा पूरा करना छै । एहन प्रशासनिक विचार तिरुक्कुरलक अनेक अध्याय मे अबैत अछि ।

இதனை இதனால் இவன்முடிக்கும் என்றாய்ந்து
அதனை அவன்கண் விடல். (குறள் 517)

इदऩै इदऩाल् इवऩ्मुडिक्कुम् ऎऩ्ऱाय्न्दु
अदऩै अवऩ्कण् विडल्।(कुरल 517)

कोन काज कोन ढ़ंग, के करय ई समझक चाही ।
से काज ओकरा सौंपि, ई हमरा समझक चाही ।।

पहिने नौकरक क्षमता आ कोन काजक लेल ओ योग्य अछि से निर्धारित करू: आ फेर ओकरा ओही काजक जिम्मेदार प्रभार मे छोड़ि दियौक।
कोनो काज के आ कोना, कोन लूरि सँ पूरा करत, से सोचय पड़त आ फेर ओहि व्यक्ति कैं सौंपय पड़त। ई सही नौकरी के लेल सही व्यक्ति के प्रशासनिक विचार सं जुड़ल अछि.

योजना एवं निष्पादन

எண்ணித் துணிக கருமம் துணிந்தபின்
எண்ணுவம் என்பது இழுக்கு. (குறள் 467)

ऎण्णित् तुणिह करुमम् तुणिन्दपिऩ्
ऎण्णुवम् ऎऩ्बदु इऴुक्कु।(कुरल 467)

काज शुरूसँ पहिने, खूब कऽ लिअ चिंता ।
शुरू केलाक उपरांत, निरर्थक छैक से सोचनाय ।।

कोनो कार्य पर निर्णय नहि करू सिवाय सावधानीपूर्वक विचार-विमर्श केलाक बाद; ओ मूर्ख अछि जे पहिने काज करैत अछि आ मोन मे कहैत अछि जे हम बाद मे सोचब।"
अभिनय करबासँ पहिने परीक्षण करू; एक बेर निर्णय भ' गेल त' बेकार मे संकोच नहि करू. वल्लुवर योजना आ निष्पादन के बीच संतुलन निर्धारित करैत छथि ।
संसाधन, समय, विधि आ कोनो कठिन काज के पूरा करय के क्षमता के जानब नीक प्रशासन के निशानी अछि. एकरा जे कुरल संप्रेषित करैत अछि से अछि :

கருவியும் காலமும் செய்கையும் செய்யும்
அருவினையும் மாண்டது அமைச்சு. (குறள் 631)

करुवियुं कालमुं सेयकैयुं सेयुम्
अरुविं ऐयुं मन्तातु अमैक्कु। (कुराल 631)

जे प्रत्येक काजक लेल जरूरी साधन खोजि कऽकैं, ठीक समयक चुनाव कऽकैं, नियम अनुसार काज शुरू कऽकैं ओकरा सफलतापूर्वक निष्पादन करय सैह कुशल मंत्री होइत अछि।

देखू ओ आदमी जे पैघ उद्यम कैं प्राप्त करबाक (पुरुष आ) साधन, ओकरा शुरू करबाक उचित मौसम आ स्वयं (उद्योगक औकात) सही तरीका सँ न्याय क' सकैत अछि: ओ अहाँक परिषद्क लेल उचित आदमी अछि।
कुरल के प्रशासनिक विचार योजना, सही लोक के चयन, समय के जानना, जिम्मेदारी आ दक्षता के प्रत्यायोजन के समन्वय छै. नीक प्रशासक ओ नहिं होइत छैक जे सब किछु व्यक्तिगत रूपें करैत हो; नीक प्रशासक काज करा लैत अछि।

5.17. तिरुक्कुरल में आर्थिक विचार

तिरुक्कुराल सद्गुणक मार्ग सँ धन अर्जित करबाक, ओकर रक्षा करबाक, ओकर सही उपयोग करबाक आ ओकरा दोसरो लेल उपयोगी बनेबाक जिद्द करैत छथि । एहि तरहें अर्थशास्त्र कैं मानव कल्याण सँ जोड़ल जाइत छैक ।

இயற்றலும் ஈட்டலும் காத்தலும் காத்த
வகுத்தலும் வல்லது அரசு. (குறள் 385)

इयर्रलुम् ईट्टलुम् कात्तलुम् कात्त
वहुत्तलुम् वल्लदु अरसु।(कुराल 385)

कतेको उपायसँ धनार्जन आ जमा करय खूब ।
रक्षा आ वितरण जे सक्षम सैह नृप ।।

राजकुमार के पता हेतै जे कोना अपन राज्य के संसाधन के विकास कयल जाय आ अपन खजाना के कोना समृद्ध कयल जाय: अपन धन के कोना सुरक्षित राखल जाय आ ओकरा कोना योग्य रूप स खर्च कयल जाय।
आय पैदा करब, ओकर कमाई करब, ओकर रक्षा करब आ फेर ओकरा उचित रूपैं बाँटब नीक आर्थिक प्रशासनक तत्व थिक ।

धन के सामाजिक उपयोग

जखन कोनो देश आर्थिक रूपैं आत्मनिर्भर होइत अछि तखन से अपने आप मे दुश्मनी खतम भ' जाइत अछि । वल्लुवम ई विचार रखै छै कि कोनो देश कं ऐसनऽ आर्थिक प्रगति के लक्ष्य रखै के चाही । नीचाँक कुरल ओहि विचारक प्रतिध्वनि अछि :

செய்க பொருளைச் செறுநர் செருக்கறுக்கும்
எஃகுஅதனிற் கூரியது இல். (குறள் 759)

सॆय्ह पॊरुळैच् चॆरुनर् सॆरुक्कुरुक्कुम्
ऐह्हुअदनिऱ् कूरियदु इल्।(कुराल 759)

खूब करि धनोपार्जन जे, करय दुश्मनक-घमंड चूर ।
धनसँ पैघ तिरछी कोनो, तलवार नहि निर्दय ।।

धन जमा करू, कारण एहि सँ तेज स्टील नहि अछि जे अहाँक दुश्मनक घमंड कैं फाड़ि सकय।
आर्थिक ताकत व्यक्ति आ राज्य दुनू के काज करय के क्षमता दैत अछि. मुदा तिरुक्कुरलक व्यापक विचार ई अछि जे धन कैं सद्गुणक वश मे रहय पड़तैक। देब, समाजक प्रति अपन कर्तव्य जानब आ आतिथ्य सन अध्याय मे सेहो धनक सामाजिक जिम्मेदारी निर्धारित कयल गेल छल । तखन धन अर्जित करबाक अंतिम उद्देश्य मात्र ओकरा जमा करब नहि अपितु ओकरा उपयोगी बनेनाइ होइत छैक ।
तिरुक्कुरल के आर्थिक विचार में उत्पादन, कमाई, संरक्षण आ साझा करब शामिल अछि । धन-सम्पत्ति व्यक्ति पर राज नहि करबाक चाही; एकरा मानव कल्याणक सेवा करबाक चाही। वल्लुवर केरऽ मूल संदेश छै कि सदाचार सं जुड़लऽ अर्थव्यवस्था स्थायी धन होय छै ।

5.18. तिरुक्कुरल में कृषि

तिरुवल्लुवर खेती के असगर व्यवसाय के रूप में नै बल्कि सामाजिक जीवन के आधार के रूप में मानैत छैथ । अन्न उत्पादन के बिना दुनिया काज नै क सकैत अछि, ताहि लेल ओ किसान के ऊँच स्थान दैत अछि ।

சுழன்றும்ஏர்ப் பின்னது உலகம் அதனால்
உழந்தும் உழவே தலை. (குறள் 1031)
सुऴन्ऱुम्एर्प् पिऩ्ऩदु उलहम् अदऩाल्

उऴन्दुम् उऴवे तलै।
दोसरोमे घूरय ई दुनिया, कृषिक अधीन बुझू।
यदि ओ परिश्रमपूर्ण रहय, कृषिकेँ सबसँ नीक मानु॥

उलकं अतम्अल
जतय चाहत घुमैत रहू, पुरुष कैँ अंततः अपन भोजनक लेल हल केर पाछू ठाढ़ हेबाक चाही: हर कठिनाईक बादो, तें, खेती-बाड़ी सब सं पैघ उद्योग थिक.
दुनियाँ भले कतेको व्यवसाय मे व्यस्त अछि मुदा अंत मे भोजनक लेल खेती पर निर्भर अछि।

समाज की नींव

खेती संसारक जीव मे भूखक रोग दूर करैत अछि आ मनक आनन्द आ हृदयक स्पष्टता दैत अछि। किसान के सम्मान में, जे भूख के बीमारी के इलाज करै वाला चिकित्सक छै, वल्लूवर नं कुरल देलकै :

உழுதுண்டு வாழ்வாரே வாழ்வார்மற் றெல்லாம்
தொழுதுண்டு பின்செல் பவர். (குறள் 1033)

उऴुदुण्डु वाऴ्वारे वाऴ्वार्मऱ् ऱेल्लाम्
तॊऴुदुण्डु पिऩ्सॆल् बवर्।(कुरल 1033)

हर जोइति कऽ जे जियै, जिनगी हुनकर नीक।
हुनकर पाछू नमन कऽ, जाइत छैक जे दोसर लोक।।

ओ सभ असगरे जीबैत छथि जे जमीन जोत कए जीबैत छथि : बाकी सभ मुदा अपन ट्रेन मे पाछू-पाछू चलैत छथि आ मात्र निर्भरताक रोटी खाइत छथि।
ई कुरल श्रम के माध्यम स भोजन के सृजन करय वाला के आत्मनिर्भरता आ सामाजिक योगदान के ऊंचाई दैत अछि।

உழவினார் கைம்மடங்கின் இல்லை விழைவதூஉம்
விட்டேமென் பார்க்கு நிலை. (குறள் 1036)

उऴविऩार् कैम्मडङ्गिऩ् इल्लै विऴैवदूउम्
विट्टेमॆऩ् बार्क्कुम् निलै।(कुरल 1036)

किसान यदि हाथ खिचलक, हर जोतनाय बंद।
अपनेकैँ निस्वार्थी कहय जे, साधुक जिनगी बंद।।

जे सभ कामना त्याग कएने छथि हुनका सेहो कष्ट भोगय पड़तनि जँ किसान बाँहि जोड़ि स्थिर बैसल रहत। वल्लुवर सामाजिक-आर्थिक सत्य के संप्रेषित करैत छथि जे किसान के हाथ खराब भ गेल त दोसर खेत के सेहो नुकसान होइत छैक. तिरुक्कुरल में खेती केवल खाद्य उत्पादन नहिं थिक; ई मानव समाजक जीवन रेखा थिक। किसानक सम्मान करब मात्र एकटा व्यवसायक सम्मान नहिं थिक; ई मानव जीवन के टिकय वाला मौलिक श्रम के सम्मान करनाय छै.

5.19. तिरुक्कुरल में पर्यावरण

"पर्यावरण" के बारे में विचार सीधा तिरुक्कुरल में नै आबै छै, लेकिन बरसात, पानी, खेती, जीव के प्रति करुणा, हत्या नै आरू मध्यम सेवन के विचार के माध्यम सं ई दर्ज करै छै कि मनुष्य के जीवन कोना प्रकृति पर निर्भर छै।
जल के प्रधानता
संसार मे जीवनक चक्र बिना बाधाक चलय लेल पानि अनिवार्य अछि। वल्लुवर कुरल मे पानिक महत्व दर्ज करैत छथि :

நீர்இன்று அமையாது உலகெனின் யார்யார்க்கும்
வான்இன்று அமையாது ஒழுக்கு. (குறள் 20)

नीरिन्ऱु अमैयादु उलहॆन्निन् यार्यार्क्कुम्
वान्इन्ऱु अमैयादु ऒळुक्कु।(कुरल 20)

जलक अभावमे एहि दुनियाक. नहि चलय कोनो काज ।
वर्षाक बिना एहि पृथ्वी पर, नहि हुए कोनो काज ।।

पृथ्वी पर कोनो चीज बिना पानि के नहि जा सकैत अछि; कि ऐन्हऽ होय के कारण, सबसें सद्गुणी मन केरऽ मनुष्य केरऽ भी आचरण अंततः वर्षा पर निर्भर करै छै ।

पानि के बिना दुनिया के जीवन नै चलि सकैत अछि। अतः वल्लुवर जल के स्रोत, वर्षा के महत्व पर भी जोर दै छै ।

விசும்பின் துளிவீழின் அல்லால்மற் றாங்கே
பசும்புல் தலைகாண்பு அரிது. (குறள் 16)

विसुम्बिन् तुळिवीऴिन् अल्लाल्मऱ् ऱाङ्गे
पसुम्पुल् तलैकाण्बु अरिद।(कुरल 16)

आकाशसँ नहि हुए, झमाझम वृष्टि ।
नहि हुए भू पर हरियाली, तिनकाक नोकक दृष्टि ।।

ऊपर स बौछार खसब बंद भ जाएत त घास सेहो उगब बंद भ जाएत।
एहि कुरल मे घासक छोट सन हरियर ब्लेडक जीवन मे सेहो बरखाक आवश्यकता होइत छैक । वल्लुवर ई देखाबै छै कि मनुष्य, पौधा, पानी आरू बरसात अलग-अलग नै छै; ओ सभ प्रकृतिक एकटा श्रृंखला बनबैत अछि, प्रत्येक दोसरसँ जुड़ल अछि ।

जीवन एवं पारिस्थितिकी के प्रति करुणा

कोनो देश जँ पानिक अभाव मे समृद्धि मे ह्रास करैत अछि त ओ गरीबी मे पड़ि जाइत अछि । रोग, भूख आ दुश्मनी तखन बढ़ैत अछि आ देशक चरित्र बिगाड़ैत अछि । तँ एहि सभकेँ दूर करबाक लेल पानि सबसँ पैघ स्रोत अछि । जखन कोनो देश प्राकृतिक प्रचुरता सँ पनपत तखन भूख खतम भ' जायत। जखन सब केँ भोजन भेटैत छैक तखन मानसिक आ शारीरिक स्वास्थ्य मे सुधार होइत छैक, आ चूँकि सब केँ सब किछु भेटैत छैक, तँ दुश्मनी केर भाव सेहो गायब भ' जाइत छैक। एतेक धरि जे दान आ तपस्या सेहो पहुँच मे आबि जाइत अछि। प्रकृति के रक्षा करब हमर कर्तव्य अछि से एहि मे कहल गेल अछि :

தானம் தவமிரண்டும் தங்கா வியனுலகம்
வானம் வழங்காது எனின். (குறள் 19)

दाऩम् तवमिरण्डुम् तङ्गा वियऩुलहम्
वाऩम् वऴङ्गादु ऎऩिन्।(कुरल 19)

दान-ध्यान सब जगमे, दुनू होयत बंद ।
यदि पूरा दुनियामे, पानि भेनाइ भऽ जाय बंद ।।

जँ आकाश अपन वर्षा केँ रोकि लेत तऽ ने दान आ ने तपस चौड़ा धरती पर टिकत।
तिरुक्कुराल केरऽ पर्यावरणीय विचार सं पता चलै छै कि मनुष्य प्रकृति सं अलग नै रहं सकै छै । प्रकृति के रक्षा केवल बाहरी दुनिया के रक्षा नै छै; ई मानव जीवन केरऽ बहुत नींव के रक्षा करी रहलऽ छै । तहिना कहैत छथि वल्लुवर।

5.20. तिरुक्कुरल में पारिवारिक सदाचार

तिरुक्कुरल में परिवार के खाली व्यक्तिगत निवास के रूप में नै बल्कि पहिल सामाजिक संरचना के रूप में देखलऽ जाय छै जेकरा में गुण के निर्माण होय छै । प्रेम, जिम्मेदारी, सत्कार, संतानक दान आ नीक संबंध पारिवारिक गुणक तत्व थिक ।

அன்பும் அறனும் உடைத்தாயின் இல்வாழ்க்கை
பண்பும் பயனும் அது. (குறள் 45)

अन्बुम् अऱनुम् उडैत्तायिन् इल्वाळ्क्कै
पण्बुम् पयनुम् अदु।(कुरल 45)

प्रेम आ धर्मक रास्ता पर, जे जीवन आश्रित ।
ओकर जिनगी धन्य छैक, जे सुफलसँ भरि-पूर्ण ।।

जँ घर मे प्रेमक भरमार अछि आ धर्म हावी होइत अछि तऽ घर सिद्ध अछि आ ओकर अंत सभटा पूरा भ' जाइत अछि।
परिवार'क महानता ओकर संचित धन मे नहि, प्रेम आ सद्गुण सँ भरल रिश्ता मे होइत छैक ।

परिवार के सामाजिक जिम्मेदारी

व्यक्तिगत जीवन अपन आ अपन परिवार के लेल जीबय के नहिं अछि. हर व्यक्ति के अपन छोट-छोट कर्तव्य करबाक चाही जे दुनिया के निर्माण आ रक्षा करैत अछि । भले ही कोय बड़का सामाजिक कार्य नै करी सकै छै, लेकिन हर व्यक्ति के कर्तव्य छै कि वू अपनऽ आसपास के रिश्तेदार आरू जीव के रक्षा करै, जहाँ तक ओकरा सें हो सकै छै । एकरा ध्यान मे राखि वल्लुवर बहुत स्पष्ट रूप स परिभाषित करैत छथि जे कोनो गृहस्थ कए जे काज करबाक चाही। तपस्वी, गरीब आ दिवंगत जे हुनका लोकनिक संबंध रखैत छथि हुनका लग ठाढ़ रहब गृहस्थ जीवनक गुण थिक । वल्लुवम परिवार संरचना मे कयल गेल अनुशासनक बात एहि तरहेँ करैत अछि :

இல்வாழ்வான் என்பான் இயல்புடைய மூவர்க்கும்
நல்லாற்றின் நின்ற துணை. (குறள் 41)

इल्वाळ्वान् ऎन्बान् इयल्बुडैय मूवर्क्कुम्
नल्लाऱ्ऱिन् निन्ऱ तुणै।(कुरल 41)

धर्मानुयायी तीनक, जे दियै स्थिराश्रय ।
सुपथक सहयोगी, सैह गृहस्थ श्रेय ।।

जीवनक आन तीनू बाट पर चलनिहार सभक मुख्य आधार गृहस्थ होइत अछि।
घरेलू जीवन असगर अपना लेल जीबाक संरचना नहिं थिक; दोसरो के साथ देना सामाजिक जिम्मेदारी छै । ओहि जिम्मेदारी के आधार नीक पारिवारिक संरचना अछि।
अतः वल्लुवर निम्नलिखित कुरल के माध्यम स' स्पष्ट करैत छथि जे एकटा सद्गुणी पत्नी, आ नीक संतान जे एकर विकास के अगिला चरण में ल' जाइत छथि, परिवार के उत्कृष्टता के लेल अनिवार्य अछि :

மங்கலம் என்ப மனைமாட்சி மற்றதன்
நன்கலம் நன்மக்கட் பேறு. (குறள் 60)

मङ्गलम् ऎन्ब मऩैमाट्चि मऱ्ऱदन्
नऩ्गलम् नऩ्मक्कट् पेऱु।(कुरल 60)

गृहक जयमंगल, जे स्त्री छैक गुणी महान ।
स्त्रीक सद्गुणसँ होइत, छैक उत्तम संतान ।।

सबसँ पैघ आशीर्वाद अछि एकटा सम्मानजनक घर; आ ओकर ताजपोशीक महिमा योग्य संतान अछि। परिवार'क भेद नीक पारिवारिक चरित्र मे आ अगिला पीढ़ी कैं नीक बाट पर पालन-पोषण मे होइत छैक. तिरुक्कुराल के पारिवारिक गुण प्रेम, जिम्मेदारी, बंटवारा आ नीक पीढ़ी के निर्माण के मिलन अछि । जँ नीक समाजक उदय होइ तँ परिवार , ओकर पहिल स्कूलकैं सद्गुणमे स्थापित हेबाक चाही।

5.21. तिरुक्कुरल में महिला

तिरुक्कुरल केरऽ महिला के बारे मं विचार कं अपनऽ समय के सामाजिक पृष्ठभूमि के खिलाफ पढ़ना जरूरी छै । घरेलू जीवन, जीवनसाथी, संतानक वरदान आ प्रेमक खंड मे नारीक स्थान विभिन्न कोण सँ प्रकट होइत अछि । एहि मे जीवनसाथीक चरित्र, घरक प्रबंधन आ संबंधक गहराई महत्वपूर्ण तत्व अछि ।

घरेलू जीवन में महिला

जीवनसाथी के एकटा औकात के व्यक्ति के रूप में देखाओल गेल अछि जे अपन सामर्थ्य के अनुसार घर के नीक सं संचालित करैत अछि ।

மனைத்தக்க மாண்புடையள் ஆகித்தற் கொண்டான்
வளத்தக்காள் வாழ்க்கைத் துணை. (குறள் 51)

मऩैत्तक्क माण्बुडैयळ् आहित्तऱ् कॊण्डाऩ्
वळत्तक्काळ् वाऴ्क्कैत् तुणै।(कुरल- 51)

पतिदेवक आमदनी अनुसार, जे गुणवती गृहिणी ।
सैह चलाबै गृहस्थी, कहाबै सहधर्मिणी ।।

ओ नीक सहायक छथि जे पत्नीक हर गुणक अधिकारी छथि आ पतिक सामर्थ्य सँ बेसी खर्च नहि करैत छथि । एहि कुरल के माध्यम स वल्लुवर परिवार में अपन जिम्मेदारी आ महत्व के प्रदर्शन करैत छथि । आ ओ रिकार्ड करैत छथि जे घरक नीक मालकिनक बिना घरक समृद्धि नहि होयत।

மனைமாட்சி இல்லாள்கண் இல்லாயின் வாழ்க்கை
எனைமாட்சித் தாயினும் இல். (குறள் 51)

मऩैमाट्टिच इल्लाळ्कण् इल्लायिऩ् वाऴ्क्कै
ऍऩैमाट्टिचत् तायिऩुम् इल्। (कुरल 51)

गृहस्थमे गृहिणी, यदि नहि हुए गुण सम्पन्न ।
व्यर्थ गृहीक जिनगी, यदि हुए बहुसंपन्न ।।

पत्नीक गुण मे असफल भेला पर आन सभ आशीर्वाद व्यर्थ भ' जाइत अछि ।

बात ई जे बाहरी संसाधन कतबो हो, पारिवारिक जीवनक भीतरक औकातिक बिना ओकर पूर्णता कम भ' जाइत छैक।

प्रेम मे एकटा महिलाक आवाज

प्रेमक खंड मे महिलाक प्रेम, विरह, लालसा आ प्रेमी-प्रेमिकाक झगड़ा सन भाव कैं एकटा अलग स्वर मे व्यक्त कयल गेल अछि । तखन तिरुक्कुरल मे महिला कैं पारिवारिक जिम्मेदारी सँ भरल व्यक्तिक रूप मे नहि अपितु गहींर भाव आ इच्छाक रूप मे सेहो देखाओल गेल अछि । ई भाग जीवन साथी केरऽ औकात, परिवार मं ओकरऽ महत्वपूर्ण भूमिका आरू प्रेम के जीवन मं ओकरऽ भावुक आवाज कं साफ-साफ देखाबै छै ।

5.22. तिरुक्कुरल में प्रबंधन

"प्रबंधन" शब्द तिरुक्कुरल में नै आबै छै, लेकिन प्रबंधन के तत्व जेना योजना, मानव संसाधन के चयन, समय के जानना, स्थान के जानना, प्रतिनिधिमंडल, निर्णय लेना आरू निगरानी धन के खंड में व्यापक रूप सं मिलै छै। कोनों काज सं पहिने योजना बनानाय आवश्यक छै, मुदा कोनों निर्णय लेला कें बाद संकोच करनाय प्रभावशीलता कें नुकसान पहुंचाबै छै. कुरल मे एहि विचार कैं रिकॉर्ड कयल गेल अछि :

எண்ணித் துணிக கருமம் துணிந்தபின்
எண்ணுவம் என்பது இழுக்கு. (குறள் 467)

ऎण्णित् तुणिह करुमम् तुणिन्दपिन्
ऎण्णुवम् ऎन्बदु इऴुक्कु।(कुरल 467)

काज शुरूसँ पहिने, खूब कऽ लिअ चिंता।
शुरू केलाक उपरांत, निरर्थक छैक से सोचनाय।।

कोनो कार्य पर निर्णय नहि करू सिवाय सावधानीपूर्वक विचार-विमर्श केलाक बाद; ओ मूर्ख अछि जे पहिने काज करैत अछि आ मोन मे कहैत अछि जे हम बाद मे सोचब।"

मानव संसाधन प्रबंधन

सही व्यक्ति के चयन, काम सौंपना आरू समय पर पूरा करै में मानव संसाधन के बहुत बड़ऽ भूमिका छै। ओहि संसाधनक कुशलतापूर्वक उपयोग सफलताक बाट प्रशस्त करैत अछि। एहन सोच प्रबंधन आ प्रशासन मे सर्वश्रेष्ठ मानल जाइत अछि, आ तिरुक्कुरल एकरा एम्हर-ओम्हर दर्ज करैत अछि। एकर एकटा उदाहरण अछि ई कुरल:

இதனை இதனால் இவன்முடிக்கும் என்றாய்ந்து
அதனை அவன்கண் விடல். (குறள் 517)

इदऩै इदऩाल् इवऩ्मुडिक्कुम् ऎऩ्ऱाय्न्दु
अदऩै अवऩ्कण् विडल्।(कुरल 517)

कोन काज कोन ढ़ंग, के करय ई समझक चाही।
से काज ओकरा सौंपि, ई हमरा समझक चाही।।

पहिने नौकरक क्षमता आ कोन काजक लेल ओ योग्य अछि से निर्धारित करू: आ फेर ओकरा ओही काजक जिम्मेदार प्रभार मे छोड़ि दियौक।
काजक प्रकृति, ओकरा पूरा करबाक तरीका आ काज करय बला व्यक्तिक क्षमताक आकलन केलाक बाद मात्र जिम्मेदारी देल जेबाक चाही। दक्षता आधारित प्रत्यायोजन केरऽ ई एगो उत्कृष्ट सिद्धांत छै।

समय एवं निष्पादन

कोनो एक्शन के सफलता में समय आ स्थान के बहुत पैघ भूमिका होइत छैक। नीचा देल गेल कुरल मे बताओल गेल अछि जे अभिनय करैत काल एहि सब कैं ध्यान मे राखब आवश्यक अछि :

ஞாலம் கருதினும் கைகூடும் காலம்
கருதி இடத்தாற் செயின். (குறள் 484)

ञालम् करुदिऩुम् कैकूडुम् कालम्
करुदि इडत्तार् सॆयिऩ्।(कुरल 484)

समय आ स्थान जानि, जे कियो करय काज।
यदि चाहय काबूमे करैक, तखन छैक काबूमे संसार।।

उचित समय आ उचित उद्देश्य चुनब तऽ समस्त संसार पर सेहो विजय प्राप्त कऽ सकैत छी।

उचित समय आ परिस्थिति के जानि क' काज करब त' पैघ लक्ष्य सेहो पूरा भ' सकैत अछि. अतः प्रबंधन मे संसाधने टा नहि समय आ परिस्थिति सेहो संसाधन होइत छैक । तिरुक्कुरल के प्रबंधन के विचार छै: योजना बनाना, जांच करना, योग्य व्यक्ति के चयन करना, समय के जानतें हुवें काम करना आरू दृढ़ता के साथ आगे बढ़ना। नीक प्रबंधन बेसी काज नहिं क' रहल अछि; सही समय पर सही तरीका स सही काज क रहल अछि।

5.23. विश्व भाषाओं में तिरुक्कुरल

तिरुक्कुरल तमिल मे उत्पन्न भेल, मुदा एकर केंद्रीय विचार मानव जीवनक सामान्य प्रश्न कैं छूबैत अछि। सदाचार, प्रेम, न्याय, मित्रता, शासन, शिक्षा, श्रम, परिवार आ रोमांटिक प्रेम पूरा दुनिया के लोक के लेल मायने रखैत अछि, जाहि कारणे तिरुक्कुरल के सार्वभौमिक शास्त्र के रूप में सम्मानित कयल गेल अछि । बहुत भाषाक लोक एकर अनुवाद अपन भाषा मे मुख्यतः एहि लेल केने छथि जे एहि मे सार्वभौमिक आकर्षणक विचार अछि।

शिक्षा व्यक्ति के देश आ शहर जेहन सीमा स बाहर ल जाइत अछि । तहिना अनुवादक माध्यमे तिरुक्कुरल अपन स्रोत भाषा पार कए अनेक राष्ट्रक लोक धरि पहुँचि गेल अछि ।

तिरुक्कुरलक अनुवाद मात्र शब्द बदलब नहि थिक । दू पाँति मे सेट कोनो कुरल केर एकाग्रता, ओकर उपमा, ओकर व्याकरणिक संरचना आ ओकर सांस्कृतिक सूक्ष्मता कैं दोसर भाषा मे ल' जेनाइ एकटा पैघ चुनौती अछि । तैं प्रत्येक अनुवाद स्रोत आ नव भाषाई परिवेशक बीच एकटा सांस्कृतिक सेतु थिक ।

तिरुक्कुरलक सार्वभौमिक प्रासंगिकता मात्र एकर अनुवादक संख्यासँ निर्धारित नहि होइत अछि । मानव जीवन के मूल प्रश्न के एतना संक्षेप में जे तरह से कहलऽ गेलऽ छै, वू एकरऽ व्यापक पाठक के मुख्य कारण छै ।

“नीक व्यक्तिक रूप मे कोना जीबाक चाही?”, “सत्ताक उपयोग कोना हेबाक चाही?”, “धनक कोन काज?”, “मित्रता केहन हेबाक चाही?” आ “दोसरक कोनो नुकसान नहि पहुँचेने कोना जीबि सकैत अछि?” समय आ भाषाक पार, सब ठाम लोकक लेल आम अछि।

तिरुक्कुराल केरऽ अनुवाद बहुत भाषा, भारतीय भाषा, यूरोपीय भाषा आरू दक्षिण-पूर्व एशियाई भाषा में होय चुकलऽ छै, आरू ई एकरऽ प्रमाण छै कि ई एगो सार्वभौमिक शास्त्र छेकै । एकरऽ अनुवाद तमिल आरू अन्य भाषा के संस्कृति के बीच ज्ञान आरू संस्कृति के आदान-प्रदान छेकै ।

तिरुक्कुरल तमिल केरऽ खजाना के रूप मं उठलै, आरू अनुवाद के माध्यम सं ई एगो ऐन्हऽ रचना मं बदली गेलऽ छै जे व्यापक मानव समुदाय के साथ बातचीत करै छै । दुनिया के यात्रा के ताकत एकरऽ छोटऽ रूप में नै बल्कि एकरऽ भीतर समाहित व्यापक मानवीय विचार में निहित छै । भाषा बदलैत अछि, मुदा प्रेम, सद्गुण, न्याय आ मानवताक आवश्यकता नहि। इएह आम मानवता थिक जे तिरुक्कुरल कैं भाषाक सीमा सँ बाहर यात्रा करैत रहैत अछि ।

एहि अध्याय मे “वल्लुवम केर सार्वभौमिक शास्त्र” हमरा लोकनि कैं तिरुक्कुरल द्वारा बजैत विषय सभक बारे मे पता चलल अछि । अगिला भाग मे कुरल रत्न के माला के माध्यम स तिरुक्कुरल सीखल जाय।

अध्याय 6 – कुरल रत्नों की माला (कुरल मणिमलाई)

कुराल रत्न के ई माला सदाचार खण्ड (आराम) आ धन खण्ड (पोरुल) स प्रत्येक अध्याय के लेल एक कुरल जुटा क संकलित कयल गेल अछि। जँ अहाँ दिन मे एक कुरल सीखब त हम सब तीनू खंड पूर्ण रूप स सीख सकैत छी।

அறத்துப்பால்

अऱत्तुप्पाल् - धर्म-खण्ड

1. கடவுள் வாழ்த்து

कडवुळ् वाऴ्त्तु - ईश-वंदना

அகர முதல எழுத்தெல்லாம் ஆதி
பகவன் முதற்றே உலகு. (குறள் 1)

अहर मुदल ऎऴुत्तॆल्लाम् आदि
बगवन् मुदऱ्ऱे उलहु।(कुरल 1)

सब अक्षरक शुरूमे, अकार छैक मूल ।
पूरा दुनियाक शुरू, आदि भगवान जड़मूल ।।

जाहि प्रकारसँ सब वर्णमालाक आधार अकार होइत छैक ओहि प्रकारसँ पूरा दुनियाक जैड़मे ईश्वर छथिन्ह।

2. வான்சிறப்பு

वान्सिऱप्पु - वर्षाक महत्त्व

வான்நின்று உலகம் வழங்கி வருதலால்
தான்அமிழ்தம் என்றுணரல் பாற்று. (குறள் 11)

वान्निन्ऱु उलहम् वऴङ्गि वरुदलाल्
तान्अमिऴ्दम् ऎन्ऱुणरल् पाऱ्ऱु।(कुरल 11)

मेघ पर निर्भर रहैत, भूलोक यैह जान ।
मानल जाइत अछि तखने, वृष्टि अमृत समान ।।

वर्षाक लेल सब जीव-जंतु जीवित रहैत अछि एहि लेल पृथ्वीक सब प्राणीक लेल वर्षा अमृतक समान होइत छैक।

3. நீத்தார் பெருமை

नीत्तार् पॆरुमै - संत-महात्माक बडप्पन

அந்தணர் என்போர் அறவோர்மற் றெவ்வுயிர்க்கும்
செந்தண்மை பூண்டுஒழுக லான். (குறள் 30)

अन्दणर् ऎन्बोर् अऱवोर्मऱ् ऱॆव्वुयिर्क्कुम्
सॆन्दण्मै पूण्डुओऴुह लान्।(कुरल 30)

जे करय सब जीव-जंतुसँ, करुणमय आचरण ।
धर्मनिष्ठ से कहाबै, श्रेष्ठ दयामय व्यवहार ।।

जे सब जीव-जंतुसँ करुणामय आचरण करय से धर्मनिष्ठ सज्जन श्रेष्ठ कहल जाइत छैक।

4. அறன் வலியுறுத்தல்

अऱन् वलियुऱुत्तल् - धर्म पर रूझान

அன்றறிவாம் என்னாது அறம்செய்க மற்றது
பொன்றுங்கால் பொன்றாத் துணை. (குறள் 36)

अन्ऱऱिवाम् ऎन्ऩादु अऱम्सेय्ह मऱ्ऱदु
पॊन्ऱुङ्गाल् पॊन्ऱात् तुणै।(कुरल 36)

काल्हि करी नहि सोचिकऽ, आई करू सत्कर्म ।
अंत समय एला पर, चिर संगी छैक धर्म ।।

कोनो सद्कार्य काल्हि करब नहि सोचिकऽ आई करबाक चाही। एकर कारण वैह सद्कार्य अन्तकाल एला पर संगे जाइत छैक।

5. இல்வாழ்க்கை

इल्वाळ्क्कै – गृहस्थ

வையத்துள் வாழ்வாங்கு வாழ்பவன் வான்உறையும்
தெய்வத்துள் வைக்கப் படும். (குறள் 50)

वैयत्तुळ् वाळ्वाङ्गु वाळ्बवन् वान्उऱैयुम्
दॆय्वत्तुळ् वैक्कप् पडुम्।(कुरल 50)

जगमे ओ गृहस्थ जे, करय धर्म अनुष्ठान
पाबैत छैक सुर-लोकक, देवगणक सम्मान ।।

जे व्यक्ति जीबाक लेल नियमानुसार धर्माचरणक लेल जीबैत अछि, ओ देव लोकक देवतागणसँ मान-सम्मान पाबैत छैक।

6. வாழ்க்கைத் துணைநலம்

वाळ्क्कैत् तुणैनलम् - सहधर्मिणीक गुण

மங்கலம் என்ப மனைமாட்சி மற்றதன்
நன்கலம் நன்மக்கட் பேறு. (குறள் 60)

मङ्गलम् ऎन्ब मऩैमाट्चि मऱ्ऱदन्
नऩ्गलम् नऩ्मक्कट् पेऱु।(कुरल 60)

गृहक जयमंगल, जे स्त्री छैक गुणी महान ।
स्त्रीक सद्गुणसँ होइत, छैक उत्तम संतान ।।

जे स्त्री गुणवान होइत छैक ओकर घर सर्वदा मंगलमय रहैत छैक। स्त्री सद्गुणी रहला पर हुनकर संतान सेहो नीक होइत छैक।

7. மக்கட்பேறு

मक्कट्पेऱु - संतान प्राप्ति

குழலினிது யாழினிது என்பதம் மக்கள்
மழலைச்சொல் கேளா தவர். (குறள் 66)

कुऴलिऩिदु याऴिऩिदु ऎन्बदम् मक्कळ्
मऴलैच्चॊल् केळा दवर्।

ओ कहय वेणी मीठ, कहय वीणा मीठ ।
जे नहि सुनलक अपन, शिशुक तोतली बोल ।।

ओ मुरली आ वीणाक स्वरकेँ मधुर कहैत छैक जे अपन शिशुक तोतली बोली सुनिकऽ ओकर मधुरताक अनुभव नहि केने हुए।

8. அன்புடைமை

अऩ्बुडैमै - प्रेम-भाव

அன்பிலார் எல்லாம் தமக்குரியர் அன்புடையார்
என்பும் உரியர் பிறர்க்கு. (குறள் 72)

अऩ्बिलार् ऎल्लाम् तमक्कुरियर् अऩ्बुडैयार्
ऎऩ्बुम् उरियर् पिऱर्क्कु।(कुरल 72)

प्रेमहीन पुरुषक सब किछु, अपन होइत छैक जान ।
प्रेमीजन परहितार्थ, हाड़ ओ दैत छैक दान ।।

जिनका दिलमे दोसरक लेल प्रेम नहि होइत छैक, सब किछु अपने लेल जमा कऽकेँ रखैत अछि। किन्तु जिनका दिलमे दोसरक लेल प्रेम होइत छैक, से दोसरक मंगलक लेल अपन हड्डी सेहो दानकऽ दैत छैक।

9. விருந்தோம்பல்

विरुन्दोम्बल् - आतिथ्य

மோப்பக் குழையும் அனிச்சம் முகம்திரிந்து
நோக்கக் குழையும் விருந்து. (குறள் 90)

मोप्पक् कुऴैयुम् अऩिच्चम् मुहम्तिरिन्दु
नोक्कक् कुऴैयुम् विरुंदु।(कुरल 90)

सूंघल अनिच्च कुसुम, से तुरंते कुम्हला जाय ।
मुँह घूरा कऽ देखलासँ, पाहुनक मुँह सुखा जाय ।।

जाहि प्रकारसँ अनिच्च फूल सूंघैत मुरझा जाइत छैक ओहि प्रकार अनादर भावसँ पाहुनकेँ देखिते चेहरा-मुरझाकऽ सुखि जाइत छैक।

10. இனியவை கூறல்

इऩियवै कूऱल् - मधुर वचन

இனிய உளவாக இன்னாத கூறல்
கனியிருப்பக் காய்கவர்ந் தற்று. (குறள் 100)

इऩिय उळवाह इऩ्ऩाद कूऱल्
कऩियिरुप्पक् काय्कवर्न् तऱ्ऱु।(कुरल 100)

मधुर वचनक छोड़िकऽ जे करे कटु बचन जान ।
पाकल फल छोड़िकऽ, काँच फलक ग्रहण समान ।।

मधुर वचन रहितो कर्कश वचन बजनाइ, पाकल फल खेनाइकेँ छोड़िकऽ काँच फल खेनाइक बराबर होइत छैक।

11. செய்ந்நன்றி அறிதல்

सॆय्न्नऩ्ऱि अऱिदल् - कृतज्ञता

செய்யாமல் செய்த உதவிக்கு வையகமும்
வானகமும் ஆற்றல் அரிது. (குறள் 101)

सॆय्यामल् सॆय्द उदविक्कु वैयहमुम्
वाऩहमुम् आऱ्ऱल् अरिदु।(कुरल 101)

बिना उपकारकॅं, यदि कियो करय उपकार ।
सुर-नर लोक भॅंट कयलासॅं, मुक्त नहि हुए आभार ।।

बिना उपकार केने, यदि कियो उपकार कऽ दियै तखन ओकर बदलामे भूलोक आ देवलोक दुनूक भॅंट स्वरूप उपहार देबा पर सेहो ओहिसॅं बढ़िकऽ कोनो उपकार नहि भऽ सकैत छैक।

12. நடுவுநிலைமை

नडुवुनिलैमै - तटस्थता

வாணிகம் செய்வார்க்கு வாணிகம் பேணிப்
பிறவும் தமபோல் செயின். (குறள் 120)

वाणिहम् सॆय्वार्क्कु वाणिहम् पॆणिप्
पिऱवुम् तमपॊल् सॆयिऩ्।(कुरल 120)

दोसरक वस्तुकॅं अपन, मानि जे करय व्यापार ।
होइत छैक वाणिज्यक ई, उत्तम व्यवहार ।।

उत्तम वाणिक सॅं होइत छैक दोसरक समानकॅं अपन मानिकऽ सत्य निष्ठासॅं व्यापार करैत अछि।

13. அடக்கமுடைமை

अडक्कमुडैमै - संयमशीलता

தீயினால் சுட்டபுண் உள்ளாறும் ஆறாதே
நாவினால் சுட்ட வடு. (குறள் 129)

तीयिऩाल् सुट्टपुण् उळ्ळारुम् आऱादे
नाविऩाल् सुट्ट वडु।(कुरल 129)

आगिसॅं जड़ल घाव, मिट जेनाय संभव ।
कटुवचनक जड़ल, मिटनाइ कहियो नहि संभव ।।

आगिसॅं जड़ला पर जे घाव होइत छैक से बाहरसॅं दाग रहितो भीतरसॅं सुखि जाइत छैक किन्तु कटुवचन बाजल दाग कहियो नहि मिटैत छैक।

14. ஒழுக்கமுடைமை

ऒऴुक्कमुडैमै - सदाचार

ஒழுக்கம் விழுப்பம் தரலான் ஒழுக்கம்
உயிரினும் ஓம்பப் படும். (குறள் 131)

ऒऴुक्कम् विऴुप्पम् तरलाऩ् ऒऴुक्कम्
उयिरिऩुम् ओम्बप् पडुम्।(कुरल 131)

सदाचार आ संपदा, दैत छैक सुश्रेय जान ।
ओहि लेल प्राणोसॅं बढ़िकऽ, रक्षणीय वैह मान ।।

सदाचार सबसॅं पैघ सम्पदा होइत छैक से व्यक्तिकॅं बनाबैत छैक एहि लेल सदाचार प्राणोसॅं बढ़िकऽ श्रेष्ठ होइत छैक।

15. பிறனில் விழையாமை

पिऱऩिल् विऴैयामै - परस्त्रीक मोह त्याग

பிறன்மனை நோக்காத பேராண்மை சான்றோர்க்கு
அறனொன்றோ ஆன்ற ஒழுக்கு. (குறள் 148)

पिऱऩ्मऩै नोक्काद पेराण्मै सान्ऱोर्क्कु
अऱऩोन्ऱो आन्ऱ ऒऴुक्कु।(कुरल 148)

दोसर दिस नहि देखनाइ, छैक पुरुषत्व महान ।
नहि संतक खाली धर्म, धर्माचरण सेहो मान ।।

जे दोसरक स्त्रीक प्रति काम-वासनाक भाव नहि राखैत अछि से व्यक्ति महान होइत अछि आ ओकरा खाली संत नहि धर्मशील सेहो मानी।

16. பொறையுடைமை

पॊऱैयुडैमै - क्षमाशीलता

பொறுத்தல் இறப்பினை என்றும் அதனை
மறத்தல் அதனினும் நன்று. (குறள் 152)

पॊऱुत्तल् इऱप्पिऩै ऎन्ऱुम् अदनै
मऱत्तल् अदऩिनुम् नऩ्ऱु।(कुरल 152)

दोसरक कैल जुलुमकेँ, सर्वदा सहनाय उत्तम ।
ओहिसँ बढ़िकऽ ओकरा, बिसरि जेनाइ सर्वोत्तम ।।

सदा सर्वदा दोसरक कयल जोड़-जुलुमकेँ वर्दास्त केनाइ नीक काज होइत छैक ओहिसँ बढ़िकऽ ओकरा, बिसरि जेनाइ ओकरोसँ नीक होइत छैक।

17. அழுக்காறாமை

अऴुक्काऱामै - अनुशीलता

ஒழுக்காறாக் கொள்க ஒருவன்தன் நெஞ்சத்து
அழுக்காறு இலாத இயல்பு. (குறள் 161)

ऒऴुक्काऱाक् कॊळ्ह ऒरुवऩ्तन् नॆञ्चत्तु
अऴुक्कारु इलाद इयल्बु।(कुरल 161)

जकर धर्माचरण रहय, दिलसँ ईर्ष्याहीन ।
ओकर जिनगी दुनियामे, अत्युतम छैक जानि ।।

दुनियामे ओकरे जीवन उत्तम मानल जाइत छैक जे मोनमे ईर्ष्या नहि करैत अछि आ ओ अपन धर्माचरण मानिकऽ जीबैत अछि।

18. வெஃகாமை

वॆह्हामै - निर्लोभता

அஃகாமை செல்வத்திற்கு யாதெனின் வெஃகாமை
வேண்டும் பிறன்கைப் பொருள். (குறள் 178)

अह्हामै सॆल्वत्तिऱ्कु यादॆऩिन् वॆह्हामै
वेण्डुम् पिऱऩ्कैप् पॊरुळ्।(कुरल 178)

जे मनुष दोसरक धनक लोभ, नहि करैत अछि बूझि ।

ओकर अपन धनकेँ कहियो, नहि हेतैक क्षय बूझि ।।

जाहि मनुषक दिलमे दोसरक धन-संपत्ति हड़पैक लालसा नहि रहैत छैक तखन ओकर अपन धन-संपत्तिक क्षय नहि होइत छैक।

19. புறங்கூறாமை

पुऱङ्गूऱामै - चुगलखोरी नहि केनाय

ஏதிலார் குற்றம்போல் தம்குற்றம் காண்கிற்பின்
தீதுண்டோ மன்னும் உயிர்க்கு. (குறள் 190)

एदिलार् कुऱ्ऱम्पोल् तम्कुऱ्ऱम् काण्गिऱ्पिन्
तीदुण्डो मऩ्ऩुम् उयिर्क्कु।(कुरल 190)

छिद्रान्वेषी समान कियो, खोजय यदि अपन दोष ।
तखन अविनाशी जीवक, कि हेतैक दुःख ठोस ।।

यदि दोसरक दोष नहि देखिकऽ जे अपन दोष खोजय तखन अविनाशीक जीव-जंतुक कतेक कठिन दोष हेतैक।

20. பயனில சொல்லாமை

पयऩ्इल सॊल्लामै - निरर्थक प्रलाप नहि केनाय

சொல்லுக சொல்லில் பயனுடைய சொல்லற்க
சொல்லில் பயனிலாச் சொல். (குறள் 200)

सॊल्लुह सॊल्लिल् पयनुडैय सॊल्लऱ्क
सॊल्लिल् पयऩिलाच् चॊल्।(कुरल 200)

बाजि एहन कथा, जाहिसँ हुए किछु लाभ ।
नहि बाजि कहियो एहन कथा, जाहिसँ नहि हुए किछु लाभ ।।

सर्वदा सारयुक्त बातचीत करबाक चाही जाहिसँ कोनो लाभ हुए। निरर्थक बातचीत कायलासँ कोनो लाभ नहि होइत छैक।

21. தீவினையச்சம்

तीविऩैयच्चम् - कुकर्मक डर

தீயவை தீய பயத்தலால் தீயவை
தீயினும் அஞ்சப் படும். (குறள் 202)

तीयवै तीय पयत्तलाल् तीयवै
तीयिनुम् अञ्चप् पडुम्।(कुरल 200)

अहित केनाइ, पाप-कार्यक गुण ।
भयंकर आगि बुझिकऽ, ओहिसँ रहू भयभीत ।।

पाप कार्यक धर्म होइत छैक। अतः कुकर्मकेँ आगिसँ बेसी खतरनाक बुझिकऽ ओकरासँ बचबाक चाही।

22. ஒப்புரவறிதல்

ऑप्पुरवऱिदल् - लोकोपकार

கைம்மாறு வேண்டா கடப்பாடு மாரிமாட்டு
என்னாற்றும் கொல்லோ உலகு. (குறள் 211)

कैम्मारु वेण्डा कडप्पाडु मारिमाट्टु
ऐऩ्ऩाऱ्ऱुम् कॊल्लो उलहु।(कुरल 211)

नहि चाहय उपकारक, पायब प्रत्युपकार ।
मेघक बदला ओहो, कि दैत संसार ।।

मेघ पाइन दैत छैक से कि दुनियासँ ओकर प्रत्युपकार चाहैत छैक? मेघ अपन कर्त्तव्य करैत छैक ओ प्रत्युपकारक आशा नहि राखैत छैक।

23. ஈகை

ईहै - दान

அற்றார் அழிபசி தீர்த்தல் அஃதொருவன்
பெற்றான் பொருள்வைப் புழி. (குறள் 226)

अऱ्ऱार् अऴिपसि तीर्त्तल् अह्दोरुवन्
पॆऱ्ऱान् पॊरुळ्वैप् पुऴि।(कुरल 226)

दीन-दुखियाक क्षुधा, जे मेटाबे निरंतर ।
मानु धनिकाहाकेँ भावी, सैह जमल पूँजी ।।
जे गरीब-गुरुबाकेँ क्षुधा सर्वदा मेटाबे सैह धनिक लोकक भविष्यक जमल पूँजी छैक।

24. புகழ்

पुहळ् - सुयश

ஈதல் இசைபட வாழ்தல் அதுவல்லது
ஊதியம் இல்லை உயிர்க்கு. (குறள் 231)

ईदल् इसैपड वाऴ्दल् अदुवल्लदु
ऊदियम् इल्लै उयिर्क्कु।(कुरल 231)

गरीबकेँ दान दऽकऽ, जीवी यश-लाभ कऽ ।
श्रेष्ठ कोनो उपलब्धि, नहि एहिसँ बढ़िकऽ ।।

गरीब-गुरुबाकेँ दान दऽकऽ यश लाभ लेबाक चाही। एहिसँ बढ़िकऽ जिनगीमे दोसर कोनो उपलब्धि नहि होइत छैक।

25. அருளுடைமை

अरुळुडैमै - दयावान

அருட்செல்வம் செல்வத்துள் செல்வம் பொருட்செல்வம்
பூரியார் கண்ணும் உள. (குறள் 241)

अरुट्चॆल्वम् सॆल्वत्तुळ् सॆल्वम् पॊरुट्चॆल्वम्
पूरियार् कण्णुम् उळ।(कुरल 241)

सब धनमे श्रेष्ठ छैक, दयारूप धन जानि ।
भौतिक धन तँ अधमकेँ, पासमे भरलो जानि ।।

जतेक धन-संपत्ति होइत छैक ओहि धन-संपत्तिकेँ सबसँ बड़का धन दयाक रूप होइत छैक। भौतिक सुख-संपदा तँ नीचकेँ होइत जे बगलमे राखल रहैत छैक।

26. புலால் மறுத்தல்

पुलाल् मऱुत्तल् - निषेध माँसाहारी

கொல்லான் புலாலை மறுத்தானைக் கைகூப்பி
எல்லா உயிரும் தொழும். (குறள் 260)

कॊल्लान् पुलालै मऱुत्तानैक् कैकूप्पि
ऎल्ला उयिरुम् तॊऴुम्।(कुरल 260)

जे नहि करय जीवक हत्या, आ नहि कराय माउसक भक्षण ।
हाथ जोड़ि पूरा दुनिया, करय ओकरा नमन ।।

जे जीवक जीवहिंसा आ माँछ-माउस नहि खाइत अछि ओहि सहृदय व्यक्तिकेँ सारा जगत हाथ जोड़िकऽ नमन करतैक।

27. தவம்

तवम् - तपस्या

உற்றநோய் நோன்றல் உயிர்க்குஉறுகண் செய்யாமை
அற்றே தவத்திற்கு உரு. (குறள் 261)

उऱ्ऱनोय् नोऩ्ऱल् उयिर्क्कुउऱुकण् सॆय्यामै
अऱ्ऱे तवत्तिऱ्कु उरु।(कुरल 261)

स्वयं दुःख सहब आ, नहि जीव-वध केनाय ।
तपोनिष्ठक लक्षण, होइत छैक ई मान ।।

अपन कष्टकेँ सहन कऽकेँ, दोसर जीवक हत्या नहि केनाय से तपस्वीक लक्षण बुझैत छैक।

28. கூடாவொழுக்கம்

कूडावोऴुक्कम् - मिथ्याचार

வலியில் நிலைமையான் வல்லுருவம் பெற்றம்
புலியின்தோல் போர்த்துமேய்ந் தற்று. (குறள் 273)

वलियिल् निलैमैयान् वल्लुरुवम् पॆऱ्ऱम्
पुलियिऩ्तोल् पोर्त्तुमेय्न् दऱ्ऱु।(कुरल 273)

तपोधनक रूप धरि, नहि दमनक शक्ति रहय ।
ओ बाघक चमड़ा ओढ़ि, खेत चरय गायक समान ।।

जे कमजोर व्यक्तिक लग शासन करैक शक्ति नहि होइत छैक से व्यक्ति तपोनिष्ठक रूप पकड़िकऽ दोसरकेँ ठगैत रहैत छैक आ ओकर आचरण बाघक चाम ओढ़ी गाय जेँका खेतमे फसल खा रहल होइत छैक।

29. கள்ளாமை

कळ्ळामै - अस्तेय

எள்ளாமை வேண்டுவான் என்பான் எனைத்தொன்றும்
கள்ளாமை காக்கதன் நெஞ்சு. (குறள் 281)

ऎळ्ळामै वेण्डुवान् ऎऩ्बान् ऎऩैत्तोऩ्ऱुम्
कळ्ळामै काक्कतन् नॆञ्जु।(कुरल 281)

अपयशसँ अगर कियो, चाह करय बचिकेँ ।
दोसरक-धन चोरीक चिंता, दिलमे नहि आनल जाय ।।

जे व्यक्ति अपयशसँ बचय चाहैत अछि ओकरा दोसरक धन-संपत्तिक अपहरण करबाक चिंता दिलमे नहि आनवाक चाही।

30. வாய்மை

वाय्मै - सत्य

வாய்மை எனப்படுவது யாதெனின் யாதொன்றும்
தீமை இலாத சொலல். (குறள் 291)

वाय्मै ऎऩप्पडुवदु यादेऩिऩ् यादोऩ्ऱुम्
तीमै इलाद सॊलल्।(कुरल 291)

जे बोली दोसरकेँ अहित, नहि करय से जानि ।
सत्यक लेल वैह ठीक, परिभाषा अछि मान ।।

ककरो बुराइ नहि करयवाला वचन बाजब सत्यक परिभाषा छैक।

31. வெகுளாமை

वॆहुळामै - तामसहीन

தன்னைத்தான் காக்கின் சினம்காக்க காவாக்கால்
தன்னையே கொல்லும் சினம். (குறள் 305)

तऩ्ऩैत्तान् काक्किऩ् सिऩम्काक्क कावाक्काल्
तऩ्ऩैये कॊल्लुम् सिऩम्।(कुरल 305)

अपन रक्षा चाही तँ, करू तामसक नाश ।
यदि नहि करब तँ वैह तामस, कऽ देत अहाँक सर्वनाश ।।

यदि अपन रक्षा करैक हुए तँ तामस-पीतकेँ मिटा देवाक चाही नहि तँ वैह तामस-पीत अहाँकेँ सर्वनाश कऽ देत।

32. இன்னா செய்யாமை

इऩ्ऩा सॆय्यामै - अहित नहि केनाय

இன்னாசெய் தாரை ஒறுத்தல் அவர்நாண
நன்னயம் செய்து விடல். (குறள் 314)

इऩ्ऩासॆय् दारै ऒऱुत्तल् अवर्नाण
नऩ्ऩयम् सॆय्दु विडल्।(कुरल 314)

अहितक बदला हित करू, अहित आ हित फेनो भुलि जाय ।
पानि पानि भऽ जाय यैह ओकर फल भेट जाय ।।

यदि अहित करयवालाकेँ दंड देबाक चाही तँ ओकर अपकारकेँ माफ कऽ ओकरा उपकार कऽ दी जाहिसँ ओ लज्जित भऽ जाय। ओकर बाद ओकर उपकार आ अपन उपकार दुनूकेँ तखने बिसरि जेबाक चाही।

33. கொல்லாமை

कॊल्लामै - अहिंसा

பகுத்துண்டு பல்லுயிர் ஓம்புதல் நூலோர்
தொகுத்தவற்றுள் எல்லாம் தலை. (குறள் 322)

पहुत्तुण्डु पल्लुयिर् ओम्बुदल् नूलोर्
तॊहुत्तवर्ऱुळ् ऎल्लाम् तलै।(कुरल 322)

मिल-बाँटि कऽ खायब आ सब जीवक पालन ।
सबसँ उत्तम धर्म छैक, ज्ञानीक समर्थन ।।

जे मिलय ओकरा सब मिल-बाँटिकय खायब आ सब प्राणीकेँ रक्षा केनाय, आचार संहिताक अनुसार सबसँ श्रेष्ट धर्म छैक।

34. நிலையாமை

निलैयामै - अनित्यता

நெருநல் உளனொருவன் இன்றில்லை என்னும்
பெருமை உடைத்திவ் வுலகு. (குறள் 336)

नॆरुनल् उळऩोरुवऩ् इऩ्ऱिल्लै ऎऩ्ऩुम्
पॆरुमै उडैत्तिव् वुलहु।(कुरल 336)

काल्हि जे छल ओकर आइ, नहि कोनो अस्तित्व ।
नश्वर जगतक बुझि, ओकर यैह महत्त्व ।।

जे आदमी काल्हि छल ओकर आइ कोनो नाम-निशान नहि छैक। बुझवाक चाही जे एहि क्षण-भंगुर संसारके यैह महिमा छैक।

35 . துறவு

तुऱवु - संन्यास

பற்றுக பற்றற்றான் பற்றினை அப்பற்றைப்
பற்றுக பற்று விடற்கு. (குறள் 350)

पऱ्ऱुह पऱ्ऱऱ्ऱान् पऱ्ऱीनै अप्पऱ्ऱैप्
पऱ्ऱुह पऱ्ऱु विडऱ्कु।(कुरल 350)

अनासक्तक आसक्ति, मे यदि हुए आसक्ति ।
से दृढ आसक्ति दीयै, आसक्तिसँ मुक्ति ।।

संसारक सब माया-ममतासँ छुटकारा पाबैक लेल अनासक्त ईश्वरक प्रति आसक्ति होबाक चाही। आसक्तिकेँ त्यागक लेल ईश्वरक प्रति आसक्ति रखवाक चाही।

36. மெய்யுணர்தல்

मॆय्युणर्दल् - साँचक बोध

எப்பொருள் எத்தன்மைத்து ஆயினும் அப்பொருள்
மெய்ப்பொருள் காண்பது அறிவு. (குறள் 355)

ऎप्पॊरुळ् ऎत्तऩ्मैत्तु आयिऩुम् अप्पोरुळ्
मॆय्प्पॊरुळ् काण्बदु अऱिवु।

जे वस्तु जहिना देखाय, ओकरा साँच नै मानू ।
ओकरामे निहित तथ्य बोध, मिलनाय साँचक ज्ञान मानू ।।

जे कोनो वस्तु जहिना देखयमे आवै ओकरा साँच नहि बुझवाक चाही ओहिमहक निहित तथ्यकेँ साँच मानबाक चाही।

37. அவா அறுத்தல்

अवा अऱुत्तल् - लालचक दमन

அவாஎன்ப எல்லா உயிர்க்கும்எஞ் ஞான்றும்
தவாஅப் பிறப்பீனும் வித்து. (குறள் 361)

अवाऎऩ्ब ऎल्ला उयिर्क्कुम्ऐञ् ञाऩ्ऱुम्
तवाअप् पिऱप्पीनुम् वित्तु।(कुरल 361)

सब जीवकेँ सब समय, लालचक बोध अचूक ।
सैह जन्म दैत छैक, जनम-मरणक दुःख ।।

कहबीमे छैक जे लालच बुरी बलाय। एहि लेल लालच सब जीव आ सब कालसँ आबि रहल छैक से जन्म-मरणक पीड़ाकेँ जन्म दैत छैक।

38. ஊழ்

ऊळ् - लिखलाहा

ஊழின் பெருவலி யாவுள மற்றொன்று
சூழினும் தான்முந் துறும். (குறள் 380)

ऊऴिन् पॆरुवलि यावुळ मऱ्ऱोन्ऱु
सूऴिनुम् ताऩ्मुन् तुऱुम्।(कुरल 380)

भाग्यसँ बढ़िकऽ, एहिठाम, बड़का शक्ति नहि बुझू ।
करू चेष्टा ओहिसँ बचिकऽ, ठाढ़ सामने वैह जानू ।।

नियतिसँ बढ़िकऽ किछु बलवान नहि होइत छैक। लोक नियतिसँ बचिकऽ रहबाक चेष्टा करैत अछि किन्तु ओ सामने आबि ठाढ़भऽ जाइत छैक।

பொருட்பால்
पॊरुट्पाल् - अर्थ-खण्ड

39. இறைமாட்சி

इऱैमाट्चि - नरेश-महिमा

முறைசெய்து காப்பாற்றும் மன்னவன் மக்கட்கு
இறையென்று வைக்கப் படும். (குறள் 388)

मुऱैसॆय्दु काप्पाऱ्ऱुम् मऩ्ऩवऩ् मक्कट्कु
इऱैयॆऩ्ऱु वैक्कप् पडुम्।(कुरल 388)

न्यायपूर्ण शासन, जन-कल्याण, जे भूप करय बुझि ।
हुनकर सम्मान, जनता-जनार्दन करय, देवता जेँका बुझि ।।

जे राजा न्यायसंगत शासन आ जनता-जनार्दनक देखभाल करैत अछि, हुनका देवताक समान मानल आ बहुत आदर-सम्मान दैत छैक।

40. கல்வி

कल्वि - शिक्षा

கற்க கசடறக் கற்பவை கற்றபின்
நிற்க அதற்குத் தக. (குறள் 391)

कऱ्क कसडऱक् कऱ्पवै कऱ्ऱपिन्
निऱ्क अदऱ्कुत् तह।(कुरल 391)

सीखू सीखक लायक सब, बिना संसयकेँ सीखू ।
सीखलाक उपरांत, आचरण करू सटीक ।।

सीखक लायक पोथीके बिना संदेहकेँ नीक जेका सीखक चाही। सीखलाक बाद, जिनगीमे ओहि सब शिक्षाक अनुपालन ठीक जेका करवाक चाही।

41. கல்லாமை

कल्लामै - अशिक्षा

விலங்கொடு மக்கள் அனையர் இலங்குநூல்
கற்றாரோடு ஏனை யவர். (குறள் 410)

विलङ्गॊडु मक्कळ् अन्नैयर् इलङ्गुनूल्
कऱ्ऱारोडु एन्नै यवर्।(कुरल 410)

मनुष आ पशुक तुलनामे, जे होइत छैक अंतर ।
शिक्षित आ अशिक्षितमे, होइत छैक सैह अंतर ।।

जाहि प्रकार मनुष आ पशुमे जे अंतर होइत छैक ओहिना पढ़ल लिखल आ अनपढ़मे अंतर होइत छैक। कारण सज्जन व्यक्ति पोथी-पतरा पढ़िकऽ शिक्षित होइत छैक।

42. கேள்வி

केळ्वि - श्रवण

செல்வத்துள் செல்வம் செவிச்செல்வம் அச்செல்வம்
செல்வத்துள் எல்லாம் தலை. (குறள் 411)

सॆल्वत्तुल् सॆल्वम् सॆविच्चॆल्वम् अच्चॆल्वम्
सॆल्वत्तुळ् ऎल्लाम् तलै।(कुरल 411)

श्रवण-ज्ञान धन जे छैक, बड़का ओकरा मानू ।
सब धनमे सँ धन छैक, सबसँ बड़का जानू ।।

सुनला पर जे बोध होइत छैक ओकरा सबसँ बड़का धन मानल जाइत छैक ओ सब धनमे सबसँ बड़का धन होइत छैक।

43. அறிவுடைமை

अऱिवुडैमै - बुद्धिमानी

எப்பொருள் யார்யார்வாய்க் கேட்பினும் அப்பொருள்
மெய்ப்பொருள் காண்பது அறிவு. (குறள் 423)

ऎप्पॊरुळ् यार्यार्वाय्क् केट्पिनुम् अप्पॊरुळ्
मॆय्प्पॊरुळ् काण्बदु अऱिवु।(कुरल 423)

जे ककरोसँ सुनि लिअ कोनो बात ।
बुद्धि ओकरे कहैत छैक, जे सचकेँ करय ज्ञात ।।

जे ककरोसँ कोनो बात सुनि लेला पर ओहिना सच नहि मानवाक चाही ओकर सत्यताकेँ जननाय बुद्धिमानिक गुण होइत छैक।

44. குற்றங்கடிதல்

कुऱ्ऱङ्गडिदल् - दोष-निवारण

தன்குற்றம் நீக்கிப் பிறர்குற்றம் காண்கிற்பின்
என்குற்றம் ஆகும் இறைக்கு. (குறள் 436)

तन्कुऱ्ऱम् नीक्किप् पिऱर्कुऱ्ऱम काण्गिऱ्पिन्
ऎन्कुऱ्ऱम् आहुम् इऱैक्कु।(कुरल 436)

अपन गलती स्वीकार कऽ, फेर दोसरक गलती ।
जे सोचय ओहि राजाकेँ,कि भऽ सकैत छैक गलती ।।

जे राजा दोसरक गलती पर विचार केनाइसँ पहिने अपन गलती पर विचार कऽ ओकरा निदान करैत अछि से गलतीहीन राजा कहाबैत अछि,।

45. பெரியாரைத் துணைக்கோடல்

पॆरियारैत् तुणैक्कोडल् - सज्जनक मदद

இடிப்பாரை இல்லாத ஏமரா மன்னன்
கெடுப்பார் இலானும் கெடும். (குறள் 448)

इडिप्पारै इल्लाद एमरा मऩ्ऩऩ्
केडुप्पार् इलाऩुम् केडुम्।(कुरल 448)

जे राजनके डाटय, सलाह-परामर्श वाला नहि हुए ।
दुश्मनकेँ नहि रहितो, से अपने-आप नष्ट भऽ जाय ।।

जे राजाक पास डांट-फटकार करेवाला परामर्शदाता नहि रहय से राजाकेँ दुश्मन नहि रहितो अपने-आप नष्ट-नाबूद भऽ जाइत अछि।

46. சிற்றினம் சேராமை

सिऱ्ऱिऩम् सेरामै - कुसंगति नहि केनाइ

நிலத்தியல்பால் நீர்திரிந்து அற்றாகும் மாந்தர்க்கு
இனத்தியல்ப தாகும் அறிவு. (குறள் 452)

निलत्तियल्बाल् नीर्तिरिन्दु अऱ्ऱाहुम् मान्दर्क्कु
इऩत्तियल्ब दाहुम् अऱिवु।(कुरल 452)

जेना सलिलक गुण बदलय, माटिक अनुकूल ।
तहिना मनुषक गुण बदलय, संगतिक अनुकूल ।।

जाहि प्रकारक माटिमे पानि पड़ैत अछि, ओ ओहि माटिक प्रकृतिक अनुकूल बदैल जाइत अछि। ओहि प्रकार आदमी जाहि प्रकृतिक वाला मनुषक संगतिमे रहैत अछि। ओ ओहि साथीक संग बदैल जाइत अछि।

47. தெரிந்து செயல்வகை

तॆरिन्दु सॆयल्वहै - सोचि समझि कऽ काज करी

எண்ணித் துணிக கருமம் துணிந்தபின்
எண்ணுவம் என்பது இழுக்கு. (குறள் 467)

ऎण्णित् तुणिह करुमम् तुणिन्दपिऩ्
ऎण्णुवम् ऎऩ्बदु इऴुक्कु।(कुरल 467)

काज शुरूसँ पहिने, खूब कऽ लिअ चिंता ।
शुरू केलाक उपरांत, निरर्थक छैक से सोचनाय ।।

कोनो काज आरम्भ करबासँ पहिने खूब चिंता-भावना करू ओकर बाद आरम्भ कऽ लेलाक उपरांत ओहि पर चिंता-भावना केनाय निरर्थक काज होइत छैक।

48. வலியறிதல்

वलियऱिदल् - बलक एहसास

வினைவலியும் தன்வலியும் மாற்றான் வலியும்
துணைவலியும் தூக்கிச் செயல். (குறள் 471)

विऩैवलियुम् तऩ्वलियुम् माऱ्ऱाऩ् वलियुम्
तुणैवलियुम् तूक्किच् चॆयल्।(कुरल 471)

काज-बल, अपन-बल शत्रु, आ संगीक बल जान ।
सोचि समझकऽ कार्यमे, करब प्रवेश जान ।।

कोनो काजमे हाथ देनायसँ पहिने अपन क्षमता, दुश्मनक क्षमता आ दुनू पक्षक सहयोगिक क्षमता सब पर खूब गहन चिंतन-मनन कऽकेँ ओ काज आरम्भ करवाक चाही।

49. காலமறிதல்

कालमऱिदल् - समयक बोध

கொக்கொக்க கூம்பும் பருவத்து மற்றதன்
குத்தொக்க சீர்த்த இடத்து. (குறள் 490)

कॊक्कॊक्क कूम्बुम् परुवत्तु मऱ्ऱदन्
कुत्तॊक्क सीर्त्त इडत्तु।(कुरल 490)

बगुला समान ताकमे रहि, बिना केने किछु प्रहार ।
चौँच मारि जखन करय, करि समय पर प्रहार ।।

बिना किछु केने बगुलाक भाँति शाँत भऽकेँ मौकाक खोजमे रहैत, जखने मौका मिलय तखने ओकरा पर आक्रमण करवाक चाही।

50. இடனறிதல்

इडऩ़ऱिदल् - स्थानक बोध

நெடும்புனலுள் வெல்லும் முதலை அடும்புனலின்
நீங்கின் அதனைப் பிற. (குறள் 495)

नॆडुम्बुऩ़लुळ् वॆल्लुम् मुदलै अडुम्बुऩ़लिन्
नीङ्गिन् अदऩ़ैप् पिऱ।(कुरल 495)

गहीर पानिमे मगरक, दोसर जन्तुओ पर जीत ।
पानिसँ बाहर मगर पर, दोसर जंतुक जीत ।

गहीर जलमे मगर शक्तिशाली भऽकऽ दोसर सब जंतु पर जीत हासिल कऽ लैत अछि किन्तु वैह मगर जखन जलसँ बाहर भऽ जाइत अछि तखन दोसर सब जंतु ओकरासँ शक्तिशाली भऽ जाइत अछि।

51. தெரிந்து தெளிதல்

तॆरिन्दु तॆळिदल् - परखि विश्वास करी

குணம்நாடிக் குற்றமும் நாடி அவற்றுள்
மிகைநாடி மிக்க கொளல். (குறள் 504)

गुणम्नाडिक् कुऱ्ऱमुम् नाटि अवऱ्ऱुळ्
मिहैनाडि मिक्क कॊळल्।(कुरल 504)

गुण-दोषकेँ चिह्नकेँ, करि बादमे पहिचान ।
मूल्यांकन कऽ हुनका, बहुतायत के जान ।।

कोनो व्यक्तिक गुण-दोषकेँ चिह्नकेँ बादमे जान-पहचान करवाक चाही आ हुनकर मूल्यांकन विशिष्टताक आधार पर करवाक चाही।

52. தெரிந்து வினையாடல்

तॆरिन्दु विऩ़ैयाडल् - परखि कऽ काज दी

இதனை இதனால் இவன்முடிக்கும் என்றாய்ந்து
அதனை அவன்கண் விடல். (குறள் 517)

इदऩै इदऩ़ाल् इवऩ्मुडिक्कुम् ऎऩ़ाय्न्दु
अदऩै अवऩ्कण् विडल्।(कुरल 517)

कोन काज कोन ढ़ंग, के करय ई समझक चाही ।
से काज ओकरा सौंपि, ई हमरा समझक चाही ।।

कोन कार्यकेँ, कोन तरह, कोन साधनसँ करबामे के सक्षम अछि, एहि सभ बातक खूब विचार कऽकेँ फेर ओहि कार्यकेँ ओहि व्यक्तिकेँ दऽकऽ निश्चिंत भऽ जेबाक चाही।

53. சுற்றந்தழால்

सुऱ्ऱन्दऴाल् - बंधुकें प्रश्रय देब

காக்கை கரவா கரைந்துண்ணும் ஆக்கமும்
அன்னநீ ரார்க்கே உள. (குறள் 527)

काक्कै करवा करैन्दुण्णुम् आक्कमुम्
अन्ऩनी रार्क्कै उळ।(कुरल 527)

बिना छिपौने बंधु सहित, कौआ खाय आहार ।

ओहने स्वभाव जिनका हुए, ओकर वैभव अपार ।।

कौआकेँ कोनो भोजनक सामग्री भेटला पर ओ अकेलेमे नहि खाइत अछि से काँव-काँव चिल्लाकेँ बंधु-वान्धवकेँ बजबैत अछि आ मिल-जुलिकऽ खाइत अछि। अगर एहन गुण जे व्यक्तिकमे रहैत छैक हुनका लग धन-संपत्तिक सीमा नहि रहैत छैक।

54. பொச்சாவாமை

पॊच्चावामै - अविस्मरनीय कर्तव्य

முன்னுறக் காவாது இழுக்கியான் தன்பிழை
பின்னூறு இரங்கி விடும். (குறள் 535)

मुन्नुऱक् कावादु इऴुक्कियान् तऩ्पिऴै
पिन्नूऱु इरङ्गि विडुम्।(कुरल 535)

संकटसँ पहिने रक्षा केनाई जाइत भूलि ।
संकटमे पछताबैत अछि, अपन विचार भूलि ।।

जे व्यक्ति आबय वाला संकटक अनुमानसँ पहिने अपन सुरक्षाक इंतजाम केनाइ भूलि जाइत अछि से बादमे संकट एला पर अपन भूल पर खूब पछताबऽ लगैत अछि।

55. செங்கோன்மை

सॆङ्गोन्मै - सुशासन

வான்நோக்கி வாழும் உலகெல்லாம் மன்னவன்
கோல்நோக்கி வாழும் குடி. (குறள் 542)

वान्नोक्कि वाऴुम् उलहॆल्लाम् मऩ्ऩवन्
कोल्नोक्कि वाऴुम् कुडि।(कुरल 542)

जेना वर्षा पर निर्भर छैक, संसारक सब जीव ।
तहिना प्रजा सुशासनक, प्रतीक्षामे अतीव ।।

जहिना संसारक सब जीव-जंतु वर्षाक जल पर निर्भर रहैत छैक ओहिना प्रजा सुशासनक प्रतीक्षामे व्याकुल रहैत छैक।

56. கொடுங்கோன்மை

कॊडुङ्गोन्मै - निरंकुश शासन

அல்லற்பட்டு ஆற்றாது அழுதகண் ணீரன்றே
செல்வத்தைத் தேய்க்கும் படை. (குறள் 555)

अल्लऱ्पट्टु आऱ्ऱादु अऴुदकण् णीरऩ्ऱे
सॆल्वत्तैत् तेय्क्कुम् पडै।(कुरल 555)

उत्पीड़ित जनकेँ आँखि, बहावे नोड़क धार ।
राजाक श्रीक नाश केनिहार, सैन्य छैक से अपार ।।

निर्मोही आ अत्याचारी राजाक अत्याचारसँ प्रजा जे नोड़ बहाबैत अछि से ओहि राजाक समृद्धिकेँ सर्वनाश करय वाला बड़का सैन्य छैक।

57. வெருவந்த செய்யாமை

वेरुवन्द सॆय्यामै - दंड दिअमे निर्दयी नहि भेनाइ

தக்காங்கு நாடித் தலைச்செல்லா வண்ணத்தால்
ஒத்தாங்கு ஒறுப்பது வேந்து. (குறள் 561)

तक्काङ्गु नाडित् तलैच्चॆल्ला वण्णत्ताल्
ऒत्ताङ्गु ऒरुप्पदु वेन्दु।(कुरल 561)

सोचि विचारि कऽ राजा, अपराधीक दोष ।
दोषक मुताबिक दंड दियै, फेर नहि हुए से दोष ।।

राजाकेँ खूब चिंतन-मनन कऽकऽ अपराधीकेँ दोषक मुताबिक दंड देला पर से दोष कोनो दोष नहि होइत छैक जाहिसँ अपराधी फेनो नहि कोनो दोष कऽ सकय।

58. கண்ணோட்டம்

कण्णोट्टम् - दया-दृष्टि

பெயக்கண்டும் நஞ்சுண்டு அமைவர் நயத்தக்க
நாகரிகம் வேண்டு பவர். (குறள் 580)

पॆयक्कण्डुम् नञ्जुण्डु अमैवर् नयत्तक्क
नाहरिहम् वेण्डु बवर्।(कुरल 580)

प्रिय व्यक्ति जहर पियाबे, जानिकऽ जे लोक ।
उदारदिलक इच्छुक राजा, करय ओकर भोग ।।

जे राजा शिष्ट आ सुसंस्कृत कहाबय चाहैत अछि तखन हुनका अपन प्रियजन जहर पियाबय चाहय तखन से जानि बुझिकऽ जे हुनका जहर देल जाइत अछि । तखन से हुनकर देल जहर सेहो पीब लैत अछि।

59. ஒற்றாடல்

ऒर्राडल् - गुप्तचर-व्यवस्था

ஒற்றும் உரைசான்ற நூலும் இவையிரண்டும்
தெற்றென்க மன்னவன் கண். (குறள் 581)

ऒर्रुम् उरैसान्ऱ नूलुम् इवैयिरण्डुम्
तॆर्ऱॆन्ग मन्नवन् कण्।(कुरल 581)

अपने खुफिया आ असली नीतिशास्त्रग्य ।
दुनूकेँ राजा मानि, राखय अपन विज्ञ ।।

राजाक अपन असल गुप्तचर आ नीतिशात्रग्य दुनू बुझिकऽ नजर रखवाक चाही।

60. ஊக்கமுடைமை

ऊक्कमुडैमै - उत्साहीपन

வெள்ளத் தனைய மலர்நீட்டம் மாந்தர்தம்
உள்ளத் தனையது உயர்வு. (குறள் 595)

वेळळत् तऩैय मलर्नीट्टम् मान्दर्तम्
उळळत् तऩैयदु उयर्वु।(कुरल 595)

कमल नालक लम्बाई, पानिक गहीरताक समान ।
मनुषक महिमा सेहो, ओकर उत्साहक समान ।।

जाहि प्रकार पानिमे फूटेवाला कमल फूलक डनटी पानिक गहीरताक मुताबिक लम्बा रहैत छैक ओहिना मनुषक महिमा ओकर उत्साहक मुताबिक बढ़ैत छैक।

61. மடியின்மை

मडियिऩ्मै - आलस्यपन

நெடுநீர் மறவி மடிதுயில் நான்கும்
கெடுநீரார் காமக் கலன். (குறள் 605)

नॆडुनीर् मऱवि मडितुयिल् नाऩ्गुम्
कॆडुनीरार् कामक् कलऩ्।(कुरल 605)

दीर्घसूत्रता सुस्ती, विस्मरण नींद ई मान ।
जे डूबय चाहे हुनका, लऽ जाय जलयान ।।

दीर्घसूत्रता, सुस्ती,विसरनाय, ओंगही ई चारि गुणक एहेन नाव छैक जे हुनका सबकेँ नाशक दिस लऽ जाइत छैक जे बर्बाद हुए चाहैत अछि।

62. ஆள்வினையுடைமை

आळिवऩैयुडैमै - परिश्रमी

அருமை உடைத்தென்று அசாவாமை வேண்டும்
பெருமை முயற்சி தரும். (குறள் 611)

अरुमै उडैत्तॆऩ्ऱु असावामै वेण्डुम्
पॆरुमै मुयऱ्चि तरुम्।(कुरल 611)

कठिन काज सोचि, नहि होय निरुत्साह ।
मिलत निजक बड़प्पन, करैत निरंतर प्रयास ।।

कोनो कठिनसँ कठिन काज सोचि कऽ निरुत्साह नहि होबक चाही। प्रयत्न करबासँ कार्यक क्षमता अपने आप सिद्ध भऽ जाइत छैक।

63. இடுக்கணழியாமை

इडुक्कणऴियामै - अविचल रहनाय

இடுக்கண் வருங்கால் நகுக அதனை
அடுத்தூர்வது அஃதொப்பது இல். (குறள் 621)

इडुक्कण् वरुङ्गाल् नहुह अदऩै
अडुत्तूर्वदु अह्दोप्पदु इल्।(कुरल 621)

बिपद जखन आबि जाय तखन, भऽ जाय प्रसन्न ।
ओहिसँ मुक्ति होबाक, उत्तम मार्ग नहि भिन्न ।।

जखन कोनो संकट आबि जाय तखन चिंता नहि कऽकेँ हँसी-खुशी रहबाक चाही। कारण ओहिसँ छुटकारा पयबाक आर कोनो अलगसँ रास्ता नहि होइत छैक।

64. அமைச்சு

अमैच्चु - मन्त्रीक लक्षण

கருவியும் காலமும் செய்கையும் செய்யும்
அருவினையும் மாண்டது அமைச்சு. (குறள் 631)

करुवियुम् कालमुम् सॆय्हैयुम् सॆय्युम्
अरुविऩैयुम् माण्डदु अमैच्चु।(कुरल 631)

साधन,काल,उपाय जानि, नियम माफिक कार्यसिद्धि ।
करय जे से योग्य सचिव, जकरा एहेन बुद्धि ।।

जे प्रत्येक काजक लेल जरूरी साधन खोजि कऽकेँ, ठीक समयक चुनाव कऽकेँ, नियम अनुसार काज शुरू कऽकेँ ओकरा सफलतापूर्वक निष्पादन करय सैह कुशल मंत्री होइत अछि।

65. சொல்வன்மை

सॊल्वऩ्मै - वाक्पदुता

சொல்லுக சொல்லைப் பிறிதோர்சொல் அச்சொல்லை
வெல்லும்சொல் இன்மை அறிந்து. (குறள் 645)

सॊल्लुह् सॊल्लैप् पिऱिदोर्सॊल् अच्चॊल्लै
वॆल्लुम्सॊल् इऩ्मै अऱिन्दु।(कुरल 645)

बात करबाक चाही तँ, करब एहन बात ।
दोसर कोनो बात जकरा, नहि कऽ सकय मात ।।

व्यक्तिकेँ अपन बात कहबासँ पहिने ई सोचि लेबाक चाही जे ओकर बातकेँ काटैवाला दोसर कोनो शब्द नहि होय, ओकर बादे जे कहय चाहैत अछि से कहवाक चाही।

66. வினைத்தூய்மை

विऩैत्तूय्मै - कर्म-शुद्धि

ஈன்றாள் பசிகாண்பான் ஆயினும் செய்யற்க
சான்றோர் பழிக்கும் வினை. (குறள் 656)

ईऩ्ऱाळ् पसिकाण्बाऩ् आयिनुम् सॆय्यऱ्क
साऩ्ऱोर् पऴिक्कुम् विऩै।(कुरल 656)

यदि देख दुःखी हुए पड़य, जननी क्षुधा पीड़ित ।
फेर नहि करैक छैक, काज सज्जनक निंदनीय ।।

यदि अपन मायकेँ भूखसँ छाटपटाइत देखिकऽ दुःखी हुए पड़य तखन एहन काज नहि करवाक चाही ताहिसँ भद्र लोकक लेल निंदा योग्य हुए।

67. வினைத்திட்பம்

विऩैत्तिट्पम् - कर्ममे दृढ़ता

எண்ணிய எண்ணியாங்கு எய்துப எண்ணியார்
திண்ணியர் ஆகப் பெறின். (குறள் 666)

ऎण्णिय ऎण्णियाङ्गु ऎय्दुब ऎण्णियार्
तिण्णियर् आहप् पॆऱिऩ्।(कुरल 666)

योजना युक्त कर्ममे, यदि रहय दृढ़ संकल्प ।
काजमे दक्ष मनुषक, हेतैक सिद्ध संकल्प ।।

जे व्यक्ति काजक योजना तैयार करयमे दक्ष रहय आ संकल्प सुनिश्चित रहय तखन ओ अपन संकल्पक मुताबिक काज करयमे निश्चित सिद्धि पाओत।

68. வினைசெயல்வகை

विऩैसॆयल्वहै - कार्य प्रणाली

தூங்குக தூங்கிச் செயற்பால தூங்கற்க
தூங்காது செய்யும் வினை. (குறள் 672)

तूङ्गुह तूङ्गिच् चॆयऱ्पाल तूङ्गऱ्क
तूङ्गादु सॆय्युम् विऩै।(कुरल 672)

विलम्बक योग्य काज, जँ हुए करि सविलम्ब ।
अविलम्ब जे होबाक छैक, ओकरा करू अविलम्ब ।।

जे काज देरी करबाक योग्य हुए ओकरा देरीसँ करू आ जे काज तुरंत करबाक हुए ओकरा तुरंत करवाक चाही।

69. தூது

तूदु - दूत

இறுதி பயப்பினும் எஞ்சாது இறைவற்கு
உறுதி பயப்பதாம் தூது. (குறள் 690)

इऱुदि पयप्पिनुम् ऎञ्जादु इऱैवऱ्कु
उऱुदि पयप्पदाम् तूदु।(कुरल 690)

अपन राजाक गुण-गान करैत, चलि जाय अपन प्राण ।
तैयो निडर भऽ जे करय, दूत से साँच जानि ।।

अपन राजाक गुण-गान करैत प्राण कियैक नहि चलि जाय तैयो निर्भय भऽकेँ अपन राजाक मंगल काज करय वाला साँच दूत होइत छैक।

70. மன்னரைச் சேர்ந்தொழுகல்

मऩ्ऩरैच् चेन्दॊऴुहल् - राजासँ अनुकूल आचरण

அகலாது அணுகாது தீக்காய்வார் போல்க
இகல்வேந்தர்ச் சேர்ந்தொழுகு வார். (குறள் 691)

अहलादु अणुहादु तीक्काय्वार् पोल्ह
इहल्वेन्दर्च् चेन्दॊऴुहु वार्।(कुरल 691)

आगिसँ नहि नजदीक नहि दूर, तापी जाहि अनुसार ।
चंचल दिल राजासँ आचरण, करि ओहि अनुसार ।।

आगि तापैत समय नहि आगिक नजदीक आ नहि दूर रहल जाइत छैक ओहिना चंचल दिलक राजाक संग ओहि ढंगसँ आचरण करवाक चाही।

71. குறிப்பறிதல்

कुऱिप्पऱिदल् - भाव बुझनाइ

அடுத்தது காட்டும் பளிங்குபோல் நெஞ்சம்
கடுத்தது காட்டும் முகம். (குறள் 706)

अडुत्तदु काट्टुम् पळिङ्गुपोल् नॆञ्जम्
कुडुत्तदु काट्टुम् मुहम्।(कुरल 706)

स्फटिक नजदीक चीजक, जेना करय प्रतिविम्बित ।
ओहिना करय व्यक्तिक मुख-मंडल, मनोभावसँ प्रस्फुटित ।।

जाहि प्रकार स्फटिक कोनो नजदीकक चीज-वस्तुकेँ प्रतिविम्बित कऽ दैत छैक ओहि प्रकार ककरो मनक भाव ओकर चेहरा-मोहरासँ प्रस्फुटित होइत छैक।

72. அவையறிதல்

अवैयऱिदल् - सभाक पहिचान

அவையறிந்து ஆராய்ந்து சொல்லுக சொல்லின்
தொகையறிந்த தூய்மை யவர். (குறள் 711)

अवैयऱिन्दु आराय्न्दु सॊल्लुह सॊल्लिन्
तॊहैयऱिन्द तूय्मै यवर्।(कुरल 711)

शब्द-शक्ति ज्ञानक, जे छथि पवित्र लोक ।
सोचि-समझिकऽ सभामे, करय शब्दक प्रयोग ।।

जे व्यक्ति शब्द-शक्तिसँ संपन्न छथि हुनका उचित होइत छन्हि जे कोनो सभामे सोचि-समझिकेँ शब्दक प्रयोग करवाक चाही।

73. அவையஞ்சாமை

अवैयञ्ञामै - सभामे निर्भीकता

கற்றாருள் கற்றார் எனப்படுவர் கற்றார்முன்
கற்ற செலச்சொல்லு வார். (குறள் 722)

कऱ्ऱारुळ् कऱ्ऱार् ऍऩ़प्पडुवर् कऱ्ऱार्मुन्
कऱ्ऱ सॆलच्चॊल्लु वार्।(कुरल 722)

जे प्रभावशील ढ़ंगसँ, अपन अर्जित ज्ञान ।
विद्वत सभामे राखि सकय, से ज्ञानीओसँ बढ़ि ज्ञानी ।।

जे विद्वत मंडलीक सामने अपन ज्ञानकेँ प्रभावशाली ढ़ंगसँ राखैत छथि से व्यक्ति विद्वतगणसँ बढ़ि विद्वान् होइत छथि।

74. நாடு

नाडु - राष्ट्र

பிணியின்மை செல்வம் விளைவின்பம் ஏமம்
அணியென்ப நாட்டிற்கிவ் வைந்து. (குறள் 738)

पिणियिऩ्मै सॆल्वम् विळैविऩ्बम् ऍमम्
अणियेऩ्ब नाट्टिऱ्किव् वैन्दु।(कुरल 738)

व्याधिहीन,कोष, सुख-शांति, आ धन-धान्यसँ समृद्ध ।
आ सुरक्षा ई पाँचो, देशक आभूषण ।।

कहबियोमे छेक जे नीरोगता, अक्षय कोष, धन-धान्यसँ समृद्ध, शांति आ सुरक्षा ई पाँचो जे कोनो देशक लेल आभूषण होइत छैक।

75. அரண்

अरण् - दुर्ग

மணிநீரும் மண்ணும் மலையும் அணிநிழல்
காடும் உடையது அரண். (குறள் 742)

மணினீரும் மண்ணும் மலैயும் அணினிழல்
காடும் உடैயது அரண்।

खुलल मैदान, सघन वन, स्फटिक समान नीर अपार ।
सैह दुर्ग हुए जतय, पर्वत श्रृंखला ई हुए चारि ।।

खुलल मैदान, सघन जंगल, स्फटिक जेका निर्मल पानि आ पहाड़क श्रृंखला ई चरिटा जतय रहैत अछि ओकरा किला कहल जाइत छैक।

76. பொருள்செயல்வகை

पॊरुळसॆयल्वहै - अर्थ संचयक विधि

செய்க பொருளைச் செறுநர் செருக்கறுக்கும்
எஃகுஅதனிற் கூரியது இல். (குறள் 759)

सॆय्ह पॊरुळैच् चॆऱुनर् सॆरुक्कऱुक्कुम्
ऎह्हुअदऩिऱ् कूऱियदु इल्।(कुरल 759)

खूब करि धनोपार्जन जे, करय दुश्मनक-घमंड चूर ।
धनसँ पैघ तिरछी कोनो, तलवार नहि निर्दय ।।

धन-दौलतक उपार्जन खूब करवाक चाही। दुश्मनक घमंड दूर करैक लेल धनसँ बढ़िकऽ तिरछी तलवार किछु नहि होइत छैक।

77. படைமாட்சி

पडैमाट्चि - सैन्यक महत्व

மறம்மானம் மாண்ட வழிச்செலவு தேற்றம்
எனநான்கே ஏமம் படைக்கு. (குறள் 766)

मऱम्माऩम् माण्ड वऴिच्चॆलवु तेऱ्ऱम्
ऐऩनाऩ्गे एमम् पडैक्कु।(कुरल 766)

शौर्य, स्वाभिमान, विश्वसनीयता, आ सद्यव्यवहार जानू ।
सेनाक लेल चारु, उत्तम गुण छैक मानू ।।

वीरता, स्वाभिमान, विश्वसनीयता आ सदव्यवहार ई चारि गुण सेनाक लेल उत्तम गुण मानल जाइत छैक।

78. படைச்செருக்கு

पडैच्चॆरुक्कु - सैन्य गंभीरता

பேராண்மை என்ப தறுகண்ஒன்று உற்றக்கால்
ஊராண்மை மற்றதன் எஃகு. (குறள் 773)

पेराण्मै ऎऩ्प तऱुकण्ऒऩ्ऱु उऱ्ऱक्काल्
ऊराण्मै मऱ्ऱदऩ् ऐह्हु।(कुरल 773)

दुश्मनक मुकाबला धैर्यसँ, उत्तम पौरुष बुझि ।
विपदमे दुश्मनक भलाइ, पौरुष तीक्ष्ण मानि ।।

दुश्मनकेँ धीर-स्थिरसँ सामना केनाइ श्रेष्ठ पौरुषता मानल जाइत छैक किन्तु विपदक समय दुश्मनकेँ भलाइ केनाय सेहो पौरुषताक चरम सीमा मानल जाइत छैक।

79. நட்பு

नट्पु - मैत्री

உடுக்கை இழந்தவன் கைபோல ஆங்கே
இடுக்கண் களைவதாம் நட்பு. (குறள் 788)

उडुक्कै इळन्दवन् कैपोल आङ्गे
इडुक्कण् कळैवदाम् नट्पु।(कुरल 788)

धोतीक खिसकैत, थामे जेना हाथ ।
मित्र पर संकट पड़लासँ झट, दिअ ओहिना साथ ।।

डाँड़सँ कपड़ा खुलि गेला पर हाथसँ थैम लैत छी ओहिना मित्र यदि बिपदमे पड़ि गेला पर संगे-संग ओकरा बचैबाक चाही।

80. நட்பாராய்தல்

नट्पाराय्दल् - दोस्तीक पहिचान

கேட்டினும் உண்டுஓர் உறுதி கிளைஞரை
நீட்டி அளப்பதோர் கோல். (குறள் 796)

केट्टिनुम् उण्डुओर् उरुदि इळैञरै
नीट्टि अळप्पदोर् कोल्।(कुरल 796)

विपद एला पर ओहिमे, होइत छैक एक लाभ ।
मापदण्ड ओकरा मानू, जाँच दोस्तीक माप ।।

संकट एला पर एक प्रकारसँ लाभकारी होइत छैक। कारण संकट एहेन मापदण्ड होइत छैक जाहिसँ दोस्तीकेँ मापि कऽ ओकरा चिन्हल जा सकैत छैक।

81. பழைமை

पऴैमै - चिरस्थाई दोस्ती

பழைமை எனப்படுவது யாதெனின் யாதும்
கிழமையைக் கீழ்ந்திடா நட்பு. (குறள் 801)

पऴैमै ऎऩप्पडुवदु यादेऩिन् यादुम्
किऴमैयैक् कीऴ़िन्दडा नट्पु।(कुरल 801)

जिगरी दोस्तीक कारणे, यदि कऽ बैसी अनिष्ट ।
चिरस्थायी दोस्ती सैह, जे नहि माने अनिष्ट ।।

घनिष्ट दोस्तीक कारणेँ यदि कोनो अनिष्ट काज कऽ बैसी तखन चिरस्थायी दोस्ती वैह होइत छैक जे ओहि अनिष्टकेँ अनिष्ट नहि मानैत छैक।

82. தீநட்பு

तीनट्पु - कुमित्रता

கனவினும் இன்னாது மன்னோ வினைவேறு
சொல்வேறு பட்டார் தொடர்பு. (குறள் 819)

कऩविनुम् इऩ्ऩादु मऩ्ऩो विऩैवेरु
सॊल्वेरु पट्टार् तॊडर्बु।(कुरल 819)

कहबी आ करनी जिनकर, नहि हुए समान ।
सपनोमे सेहो ओ दोस्ती, जान मारि देत जान ।।

जिनकर कहबी आ करनी एक समान नहि होइत छैक से दोस्ती सपनोमे दुःखदायी होइत छैक।

83. கூடாநட்பு

कूडानट्पु - कपटपूर्ण दोस्ती

தொழுதகை யுள்ளும் படையொடுங்கும் ஒன்னார்
அழுதகண் ணீரும் அனைத்து. (குறள் 828)

तॊऴुदकै युळ्ळुम् पडैयॊडुङ्गुम् ऒऩ्ऩार्
अऴुदकण् णीरुम् अऩैत्तु।(कुरल 828)

शत्रुक जोड़ल हाथमे, जेना नुकायल रहय हथियार ।
तहिना मानु दुश्मन बहाबै, नोरक ओ धार ।।

जाहि प्रकार दुश्मनक दुनू जोड़ल हाथमे अस्त्र नुकायल रहय ओहि प्रकारेँ दुश्मनक आँखिसँ नोरक धार बहनाय देखाबटी छल-प्रपंच भऽ सकैत अछि।

84. பேதைமை

पेदैमै - मूढ़ता

பேதைமை என்பதுஒன்று யாதெனின் ஏதம்கொண்டு
ஊதியம் போக விடல். (குறள் 831)

पेदैमै ऎऩ्बदुऒऩ्ऱु यादॆऩिऩ् एदम्कॊण्डु
ऊदियम् पोह विडल्।(कुरल 831)

मूढ़ता ओकरा कहल जाय, जे करय एहन काज ।
करय लाभक काज छोड़ि स्वयं, कऽ लिअ घटिया काज ।।

जे लाभदायक काजकेँ छोड़िकऽ अपना लेल स्वयं घटिया काज करय ओकरा मूढ़ कहल जाइत छैक।

85. புல்லறிவாண்மை

पुल्लऱिवाण्मै - मिथ्याहंकारक मूढ़ता

உலகத்தார் உண்டென்பது இல்லென்பான் வையத்து
அலகையா வைக்கப் படும். (குறள் 850)

उलहत्तार् उण्डॆऩ्बदु इल्लॆऩ्बान् वैयत्तु
अलहैया वैक्कप् पडुम्।(कुरल 850)

जे तथ्यक अस्तित्वकेँ, छैक कहय दुनिया मानि ।
जे नहि ई मानय ओकरा, दुनिया लियै प्रेत मानि ।।

दुनियाक लोक जाहि तथ्यक अस्तित्व पर विश्वास करैत छैक ओकरा जे नहि मानैत अछि ओकरा दुनियाक लोक मनुषक देह रहितो प्रेत मानैत छैक।

86. இகல்

इहल् - विभेद

இகலென்ப எல்லா உயிர்க்கும் பகலென்னும்
பண்பின்மை பாரிக்கும் நோய். (குறள் 851)

इहलॆऩ्ब ऎल्ला उयिर्क्कुम् पहलॆऩ्ऩुम्
पण्बिऩ्मै पारिक्कुम् नोय्।(कुरल 851)

दिलक विभेद-भाव जे, सब जीवक योग ।
हुए नहि दियै जकरा ज्ञानी, कहैत छैक खराब रोग ।।

सुधी जन कहैत छथि कि मनमे जे विभेद-भाव उत्पन्न होइत अछि ओ जीवकेँ मिलकऽ रहय नहि देत

अछि आ ओहिमे पार्थक्य बढ़बय वाला एक अवांछनीय रोग उत्पन्न भऽ जाइत अछि।

87. பகைமாட்சி

पहैमाट्चि - दुश्मनीक असर

வலியார்க்கு மாறுஏற்றல் ஓம்புக ஓம்பா
மெலியார்மேல் மேக பகை. (குறள் 861)

वलियार्क्कु मारुएऱ्ऱल् ओम्बुह ओम्बा
मॆलियार्मेल् मेह पहै।(कुरल 861)

बलवानसँ नहि भिड़ी, कऊँ हुनक विरोध ।
छोड़ब कहियो नहि, निर्बलक विरोध ।।

अपनासँ जे बलवान रहय ओकरासँ दुश्मनी कऊँ विरोध नहि करवाक चाही आ जे निर्बल रहय ओकरासँ कहियो नहि विरोध करवाक चाही।

88. பகைத்திறம் தெரிதல்

पहैत्तिऱम् तॆरिदल् - दुश्मनक शक्तिक पहिचान

பகையென்னும் பண்பி லதனை ஒருவன்
நகையேயும் வேண்டற்பாற்று அன்று. (குறள் 871)

पहैऐन्नुम् पण्बि लदऩै ऒरुवन्
नहैयेयुम् वेण्डऱ्पाऱ्ऱु अन्ऱु।(कुरल 871)

दुश्मनी नामक बुराय, असभ्य गुण छैक बुझू ।
हँसी-खेल मे नहि, जरूरी छैक मानू ।।

दुश्मनी संस्कारहीन एकटा बुराई छैक। हँसी-मजाकोमे एकर कोनो जरूरी नहि होइत छैक।

89. உட்பகை

उट्पहै - आन्तरिक शत्रुता

உடம்பாடு இலாதவர் வாழ்க்கை குடங்கருள்
பாம்போடு உடனுறைந் தற்று. (குறள் 890)

उडम्बाडु इलादवर् वाऴ्क्कै कुडङ्गरुळ्
पाम्बोडु उडऩुऱैन् दऱ्ऱु।(कुरल 890)

जकरासँ दिल मिलय नहि, जिनाय ओकरा संग ।
बुझू एक घरमे, रहनाय साँपक संग ।।

जाहि परिवारमे एक दोसरक संग दिल नहि मिलैत छैक ओहि परिवारक संग रहनाय साँपक संग रहनायक जैँका होइत छैक।

90. பெரியாரைப் பிழையாமை

पॆरियारैप् पिऴैयामै - पैघक अवहेलना नहि केनाय

பெரியாரைப் பேணாது ஒழுகின் பெரியாரால்
பேரா இடும்பை தரும். (குறள் 892)

पॆरियारैप् पेणादु ऒऴुहिन् पॆरियाराल्
पेरा इडुम्बै तरुम्।(कुरल 892)

महान पुरुषक प्रति, निरादर व्यवहार ।
करि तँ ओहिसँ हेतैक, प्रचंड दुःख-दर्द अपार ।।

यदि महान पुरुषक प्रति निरादरक भाव रखलासँ तखन हुनकासँ अपार प्रचंड दुःख-कष्ट हेतैक।

91. பெண்வழிச் சேறல்

पॆण्वऴिच् चॆऱल् - महिलाक वश भेनाय

மனைவிழைவார் மாண்பயன் எய்தார் வினைவிழைவார்
வேண்டாப் பொருளும் அது. (குறள் 901)

मऩैविऴैवार् माण्पयन् ऍय्दार् विऩैविऴैवार्
वेण्डाप् पॊरुळुम् अदु।(कुरल 901)

महिला पर जे आसक्त, हुनका नहि कोनो सिद्धि ।
कर्तव्यक पालन चाहय, जे तजि दियै ई बुद्धि ।।

जे महिलाक बात सुनिकऽ नाचैत अछि हुनका कोनो उत्तम सिद्धि नहि भेट सकैत छन्हि। यदि अपन कर्तव्यक पालन करय चाही तखन ई आसक्तिक गुण छोड़ि देवाक चाही।

92. வரைவின் மகளிர்

वरैविन् महळिर् - वार गणिका

அன்பின் விழையார் பொருள்விழையும் ஆய்தொடியார்
இன்சொல் இழுக்குத் தரும். (குறள் 911)

अऩ्बिन् विऴैयार् पॊरुळ्विऴैयुम् आय्तॊडियार्
इऩ्सॊल् इऴुक्कुत् तरुम्।(कुरल 911)

नहि ओ प्रेम जँका चाह, किन्तु छैक धनक लोभ ।
ओहि सुन्दरीक मधुर बोली, अंतमे करय आह ।।

जे अंतरसँ प्रेमभाव नहि दिखाबै किन्तु धनक लालसा रहैत छैक ओ सुन्दरी मधुर बोली बाजिकऽ आखिरमे क्लेश दैत छैक।

93. கள்ளுண்ணாமை

कळ्ळुण्णामै - मद्यपान नहि केनाय

கள்ளுண்ணாப் போழ்தில் களித்தானைக் காணுங்கால்
உள்ளான்கொல் உண்டதன் சோர்வு. (குறள் 930)

कळ्ळुण्णाप् पॊऴिदल् कळित्ताऩैक् काणुङ्गाल्
उळ्ळाङ्कॊल् उण्डदऩ् सॊर्वु।(कुरल 930)

जखन नशामे अपने नहि रहय, पीबकऽ मस्तवालाकेँ देखू ।
पीबकऽ होश-हवास हरेला पर, कियैक नहि चिंता करू ।।

नशेरी जखन नशामे नहि रहैत अछि तखन से दारू पीने हुए अन्य व्यक्तिक अवस्थाकेँ देखिकऽ सेहो कि ओ मद्यपानसँ होयवाला बुराई पर विचार नहि करत।

94. சூது

सूदु - जुआ

வேண்டற்க வென்றிடினும் சூதினை வென்றதூஉம்
தூண்டில்பொன் மீன்விழுங்கி யற்று. (குறள் 931)

वेण्डऱ्क वॆऩ्ऱिडिनुम् सूदिऩै वॆऱ्ऱदूउम्
तूण्डिल्पॊऩ् मीऩ्विऴुङ्कि यऱ्ऱु।(कुरल 931)

तजु जूआ यदि विजय रहय, अपने अधीन ।
जीत तँ ओहि काँटक समान, जकरा निगलय माछ ।।

जुआ खेलेनायमे जीतक संभावना रहय तैयो नहि खेलेवाक चाही ओ जीत काँटक समान होइत छैक जकरा माँछ निगलि जाइत अछि।

95. மருந்து

मरुन्दु - औषध

மாறுபாடு இல்லாத உண்டி மறுத்துண்ணின்
ஊறுபாடு இல்லை உயிர்க்கு. (குறள் 945)

मारुबाडु इल्लाद उण्डि मरुत्तुण्णिन्
ऊरुबाडु इल्लै उयिर्क्कु।(कुरल 945)

शरीरक अनुकूल जे करय, पथ्याहारक भोग ।
प्राणक संकटकेँ बहुत, दूर रहत रोग।

जे व्यक्ति शरीरक अनुकूल भोजन-साजन करैत अछि ओकरा कोनो प्राणक संकट नहि हेतैक ओकरा लगसँ बहुत दूर रोग-व्याधि भागल रहतैक।

96. குடிமை

कुडिमै - कुलीनता

இல்பிறந்தார் கண்ணல்லது இல்லை இயல்பாகச்
செப்பமும் நாணும் ஒருங்கு. (குறள் 951)

इल्पिऱन्दार् कण्णल्लदु इल्लै इयल्बाहच्
चॆप्पमुम् नाणुम् ऒरुङ्गु।(कुरल 951)

मन, वचन कर्मक एक्य आ लाज, ई दुनू गुण महान ।
कुलीनकेँ छोड़ि दोसरमे, सहजे नहि मिलय बुझू ।।

तटस्थताक संसार, लज्जा आदि ई दुनू गुण कुलीन व्यक्ति सभकेँ छोड़िकऽ अन्य कोनोमे सहज संभव नहि अछि।

97. மானம்

माऩम् - आत्म-सम्मान

மயிர்நீப்பின் வாழாக் கவரிமா அன்னார்
உயிர்நீப்பர் மானம் வரின். (குறள் 969)

मयिर्नीप्पिन् वाऴाक् कवरिमा अन्नार्
उयिर्नीप्पर् माऩम् वरिन्।(कुरल 969)

केश काटल चामक मृग, जेना त्यागि दैत छैक प्राण ।
ओकरा जेँका मनुष प्राण दियै, रक्षाक-हित स्वाभिमान ।।

जेना चामक हरिन अपन शरीरसँ एकटा केश निकालि देला पर अपन प्राण त्यागि दैत छैक ओहिना स्वाभिमानी व्यक्ति अपन मान-सम्मानक हानि देखिकऽ प्राण त्यागि दैत छैक।

98. பெருமை

पॆरुमै - बड़प्पन

பிறப்பொக்கும் எல்லா உயிர்க்கும் சிறப்பொவ்வா
செய்தொழில் வேற்றுமை யான். (குறள் 972)

पिऱप्पॊक्कुम् ऐल्ला उयिर्क्कुम् सिऱप्पॊव्वा
सॆय्तॊऴिल् वेऱ्ऱुमै यान्।(कुरल 972)

जन्मसँ सब मानव, हुए एक समान ।
किन्तु कर्म-भेद विशेषसँ, गुण विशेष नहि समान ।।

मानव जन्मसँ एक समान होइत अछि किन्तु ओकर कर्म अलग-अलग भेला पर सब मानवक गुण एक समान नहि होइत छैक ।

99. சான்றாண்மை

सान्ऱाण्मै - सदगुण संपन्न

ஆற்றுவார் ஆற்றல் பணிதல் அதுசான்றோர்
மாற்றாரை மாற்றும் படை. (குறள் 985)

आऱ्ऱुवार् आऱ्ऱल् पणिदल् अदुसान्ऱोर्
माऱ्ऱारै माऱ्ऱुम् पडै।(कुरल 985)

बलवानक महान बल, विनयशीलता बुझू ।
शत्रुक शत्रुताक दोस्तीसँ, जे बदलय बुझू ।।

विनयशीलता पराक्रमीक शक्ति होइत छैक से अपन दुश्मनकेँ दुश्मनीसँ दोस्तीमे बदलि दैत छैक।

100. பண்புடைமை

पण्बुडैमै - शिष्टाचार

அரம்போலும் கூர்மைய ரேனும் மரம்போல்வர்
மக்கட்பண்பு இல்லா தவர். (குறள் 997)

अरम्पोलुम् कूर्मैय रेनुम् मरम्पोल्वर्
मक्कट्पण्बु इल्ला दवर्।(कुरल 997)

यदि तीक्षण बुद्धि रहय, रेतीक समान ।
मानवीय संसारक विना, ओ मनुष गाछक समान ।।

रेतीक जेँका प्रखर बुद्धि कियैक नहि हुए किन्तु ओहि मानवीय गुणक अभाव रहला पर से खाली गाछक जेँका होइत छैक।

101. நன்றியில் செல்வம்

नऩ्ऱियिल् सॆल्वम् - निष्फल धन

வைத்தான்வாய் சான்ற பெரும்பொருள் அஃதுஉண்ணான்
செத்தான் செயக்கிடந்தது இல். (குறள் 1001)

वैत्तान्वाय् सान्ऱ पॆरुम्पॊरुळ् अह्दुउण्णान्
सॆत्तान् सॆयक्किडन्ददु इल्।(कुरल 1001)

घर भरि भरि जमा कऽ, यदि नहि करि भोग ।
मरि गेलासँ पर ओहि धनक, कि हुए उपयोग ।।

घर भरि भरि बहुत रास सम्पत्तिकेँ जे भोग नहि कऽ सकय तखन मरि गेलाक बाद ओ धन-सम्पत्ति कौन काजमे लगतैक।

102. நாணுடைமை

नाणुडैमै - लाज-लिहाज

கருமத்தால் நாணுதல் நாணுத் திருநுதல்
நல்லவர் நாணுப் பிற. (குறள் 1011)

करुमत्ताल् नाणुदल् नाणुत् तिरुनुदल्
नल्लवर् नाणुप् पिऱ।(कुरल 1011)

अपकर्मसँ लज्जित होयब, अछि लज्जाक स्वरुप ।
कुलवधुक लज्जा होइत, अछि किछु दोसरे रूप ।।

कोनो दुष्कर्म केला पर ओ लाजक स्वरूपे मानल जाइत छैक किन्तु कुलवधूक लाजक रूप दोसरे प्रकारक होइत छैक।

103. குடிசெயல்வகை

कुडिसेयल्वहै - वंशवृद्धिक सुरक्षा

கருமம் செயஒருவன் கைதூவேன் என்னும்
பெருமையின் பீடுடையது இல். (குறள் 1021)

करुमम् सेयऒरुवन् कैदूवेन् ऎन्नुम्
पेरुमैयिन् पीडुडैयदु इल्।(कुरल 1021)

करयसँ पाछू नहि भागी, कुलक भल लेल कर्त्तव्य ।
एहि चेष्टा जँका पैघ, नहि यैह मन्तव्य ।।

जे कुलक भलाई लेल अपन दायित्व-बोधसँ कहियो नहि पाछू हटत बाजिकऽ जे प्रयास करैत अछि ओहि कोशिशसँ पैघ कोनो आर किछु पैघ नहि होइत छैक।

104. உழவு

उऴवु - कृषि

சுழன்றும்ஏர்ப் பின்னது உலகம் அதனால்
உழந்தும் உழவே தலை. (குறள் 1031)

सुऴन्ऱुम्एर्प् पिन्नदु उलहम् अदऩाल्
उऴन्दुम् उऴवे तलै।(कुरल 1031)

दोसरोमे घूरय ई दुनिया, कृषिक अधीन बुझू ।
यदि ओ परिश्रमपूर्ण रहय, कृषिकेँ सबसँ नीक मानु ।।

दोसर बहुतो उद्यमक पाछू घुड़लाक बादो ई दुनिया कृषि पर आश्रित रहैत छैक। एहि लेल बहुत कठिन मेहनत करय पड़ैत छैक किन्तु कृषि कर्म सबसँ उत्तम उद्यम होइत छैक।

105. நல்குரவு

नल्हुरवु - दरिद्रता

இன்மையின் இன்னாதது யாதெனின் இன்மையின்
இன்மையே இன்னா தது. (குறள் 1041)

इऩ्मैयिन् इऩ्ऩाददु यादॆऩिऩ् इऩ्मैयिन्
इऩ्मैये इऩ्ऩा ददु।(कुरल 1041)

पुछि यदि दारिद्र जँका, पीड़क के पैघ ।
दारिद्र समान पीड़क, दारिद्रे सैह बुझय ।।

यदि पुछल जाय कि दरिद्रताक समान दुःख देयवाली महान वस्तु के अछि, तखन ओकर जवाब भेटतैक जे दरिद्रताक जेंका दुःख दिअवाला पैघ चीज दरिद्रते होइत छैक।

106. இரவு

इरवु - याचना

இரக்க இரத்தக்கார்க் காணின் கரப்பின்
அவர்பழி தம்பழி அன்று. (குறள் 1051)

इरक्क इरत्तक्कार्क् काणिन् करप्पिन्
अवर्पऴि तम्पऴि अऱ्ऱु।(कुरल 1051)
याचनक जे उपयुक्त हुए, हुनकासँ माँगी दान ।

छिपेबाक दोष हुनकर छन्हि, अहाँक दोष नहि जान ।।

जे दान देबामे समर्थ हुए हुनका लग जा कऽ दान मंगनाय कोनो खराब नहि होइत छैक। किन्तु जे अपने लगक धन छिपाकऽ दान देबासँ इनकार कऽ देत तँ एहिमे दोष ओकरे होयत नहि कि याचककेँ।

107. இரவச்சம்

इरवच्चम् - याचनाक डर

இரந்தும் உயிர்வாழ்தல் வேண்டின் பரந்து
கெடுக உலகியற்றி யான். (குறள் 1062)

इरन्दुम् उयिर्वाऴ्दल् वेण्डिन् परन्दु
केडुह उलहियऱ्ऱि यान्।(कुरल 1062)

विधिक श्रष्टा लिखय यदि, दान माँगि पुरुष खाय ।
मारल-मारल भटकय सैह, सर्वनाश भऽ जाय ।।

विधिक विधाता यदि लिख दियै जे पुरुषकेँ दान माँगिकऽ खेवाक चाही तखन सैह मारल-मारल एम्हर ओम्हर भटकल फिरैत अछि जाहिसँ ओकर सर्वनाश भऽ जाइत छैक।

108. கயமை

कयमै - नीचपन

மக்களே போல்வர் கயவர் அவரன்ன
ஒப்பாரி யாம்கண்டது இல். (குறள் 1071)

मक्कळे पोल्वर् कयवर् अवरऩ्ऩ
ऒप्पारी याम्कण्डदु इल्।(कुरल 1071)

मनुष रूपमे नीचो, देखय एक समान ।
मनुज छोड़ि कतो नहि, देखय ई रूपक विधान ।।

देखैमे नीच लोको दोसर मनुषक भाँति देखाय छैक। एहि प्रकार एके रूपक दू अवस्थाक रूपक सादृश्य खाली मनाबैमे संभव होइत छैक। ई दोसर जगह देखयमे नहि मिलैत छैक।